मैं मनुष्य हूँ।

(प्रायोगिक नाटक)

आचार्य ललित पारिमू

प्रकाशक



अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली

ISBN No. : 978-93-82339-24-3

प्रकाशक :
अनुराधा प्रकाशन
1193, पंखा रोड, नांगल राया,
(डी2ए जनकपुरी), नई दिल्ली-110046
भाष : 011-28520555, 9213135921, 9873080170
ईमेल : **anuradhaprakashan@gmail.com**

संस्करण : प्रथम, 2013
मूल्य : 300 रुपये
शब्द संयोजक : अनुराधा प्रकाशन

मुद्रक : अनुराधा प्रकाशन

समर्पण

पूज्य माताजी श्रीमती ललिता पारिमू

एवं

पूज्य पिताजी श्री गिरधारी पारिमू

आत्म-परिचय

28 सितम्बर 1964 में जन्मे ललित पारिमू की प्रारंभिक शिक्षा कश्मीर में हुई और उसके बाद दिल्ली में। राजनीति शास्त्र में स्नातक डिग्री हासिल करते हुए अपने अभिनय जीवन की शुरुआत दिल्ली रंगमंच से की। सन् 1982 से 1988 तक लगातार रंगमंच में सक्रिय रहे और इस बीच चालीस के करीब नाटकों में काम किया। सन् 1992 तक दिल्ली दूरदर्शन के ध् ाारावाहिकों में और उसके साथ-साथ रेडियो नाटकों में बतौर अभिनेता कार्य करते रहे।

सन् 1992 से मुम्बई में टेलीविज़न में सक्रिय और अब तक 75 से अधिक टी.वी. धारावाहिकों में काम किया जिनमें प्रमुख रहे हैं—शक्तिमान, कंगन, फ़ासले, इंतज़ार और सही, इंतेक़ाम, कोरा कागज़, मुल्क, फ़र्ज़, मैला आँचल, नूरजहाँ, ऐसे करो न विदा, सुनयना, हिमालय दर्शन, हम फिर मिलेंगे, झूमे जिया रे, भास्कर भारती इत्यादि।

सन् 1991 से योग, धर्म और अध्यात्म में रुचि और विभिन्न धर्म ग्रंथों का अध्ययन तथा 1993 में विधिवत तांत्रिक पद्धति में दीक्षित। 2003 के आसपास साधना जगत की अनुभूतियाँ और समाधि के कुछ अविस्मरणीय अनुभव।

2004 में ध्यान के गहरे क्षणों में अभिनय योग के प्रारंभिक विचार और फिर कई शिविरों का आयोजन तथा 2008 में नए विद्यार्थियों के प्रशिक्षण के लिए अकादमी और नटसमाज की स्थापना।

पिछले कई वर्षों से अभिनय-योग पर अनुसंधान और ऐसी रचनाओं का लेखन जो मनुष्य को आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दे।

ललित पारिमू

भूमिका

''मैं मनुष्य हूँ'' के बारे में यदि मैं कुछ कहूँ तो वो ये है कि ये नाटक नहीं परन्तु एक विचार की नाटकीय अभिव्यक्ति है, जिसमें दृश्य, संवाद और चरित्रों का इस्तेमाल तो ज़रूर किया है, पर मूल बात दार्शनिक है और मनुष्य की मानसाध्यात्मिक यात्रा से संबंध रखती है।

अभिनय और योग में एक पारस्परिक मेल स्थापित करते हुए ये नाटकीय अभिव्यक्ति, दर्शक और कलाकार दोनों को अंतर्यात्रा पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

इसकी ख़ास बात ये भी है कि इसे प्रस्तुत् करने के लिए विशेष मंचसज्जा और दूसरे रंगमंचीय उपकरणों की आवश्यकता नहीं है।

मेरी दृष्टि में अभिनय की रुचि अधिकतर लोगों में होती है और अपने नज़दीकी रिश्तों में समस्याएं भी सबकी हैं और उन्हें सुधारने की चेष्टा भी हर मन में होती है। इस नाटक को प्रस्तुत् करके यदि लोगों में इस बात की प्रेरणा जगे कि हमें अपने भीतर मौजूद असुर का सामना करना है और उसके लिए कुछ सार्थक करना ज़रूरी है तो मैं समझूँगा कि ये रचना सफल है........।

पिछले कुछ वर्षों से मैं मुम्बई तथा उसके आसपास के शहरों में अभिनय के प्रशिक्षण का कार्य कर रहा हूँ और मेरे संपर्क में हज़ारों नवयुवक-नवयुवतियाँ आये हैं जो अपना भविष्य बनाने की दृष्टि से अभिनय सीख कर एक पेशेवर अभिनेता बनना चाहते हैं।

विद्यार्थियों को अभिनय की कला में शिक्षित करने की दृष्टि से कुछ नाटक मैंने लिखे जिनमें उन विद्यार्थियों का भी योगदान है और उन्हीं में से कुछ नाटक इस पुस्तक में शामिल है।

चाहे अभिनय हो या दूसरी कलाएँ, यदि व्यक्ति इसमें निपुणता हासिल करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास न कर सके तो सारा परिश्रम व्यर्थ है।

मौजूदा परिस्थितियाँ एक कलाकार को यश, धन और दूसरी भोग सामग्रियों को इकट्ठा करने के लिए ही प्रेरित करती हैं और ये इस सभ्यता का दुर्भाग्य है।

इस चिंतन में परिवर्तन की आवश्यकता है और बहुत सारे ऐसे लोगों को, जो इस प्रकार का विचार रखते हों कि कला से मनुष्य का आत्म-विकास सम्भव है, उन्हें एक साथ मिलकर काम करते हुए नवजागरण पैदा करना ज़रूरी है।

इतिहास में इस प्रकार का काम अलग-अलग ढंग से कई बार हुआ है। संस्कृत ड्रामा और ग्रीक ड्रामा का अध्ययन करें तो एक बात साफ़ नज़र आती है कि मनुष्य के उदात्त भावों को जगाने का काम उन नाटकों के माध्यम् से हुआ था।

शेक्सपियर के नाटकों का समय भी नवचेतना का काल था और परोक्ष रूप से उनके नाटकों ने बुद्धिजीवी वर्ग में राजतंत्र की कमज़ोरियों को सामने रखते हुए, एक नए सामाजिक ढाँचे को बनाने के लिए प्रेरित किया। जनमानस में इस विचार को मज़बूती देने के लिए कि राजा और राजतांत्रिक व्यवस्था अब मनुष्य जाति के लिए कल्याणमूलक नहीं है, शेक्सपियर के नाटकों ने त्रासदियों के माध्यम् से ये काम बख़ूबी किया और जिसका परिणाम 1688 का ब्लडलेस रेवोलुशन है।

आधुनिक काल में भी एक विशेष विचारधारा को नुक्कड़ नाटकों से बहुत बल मिला और अपनी बात कहने का एक सशक्त माध्यम् भी।

अभिनय-योग भी उसी दिशा में उठाया गया एक कदम है जिसका मुख्य उद्देश्य है एक ऐसे अभिनेता वर्ग को तैयार करना जो बाहरी चमक-दमक और चकाचौंध से प्रभावित हुए बिना अपने भीतरी सम्पदा और आध्यात्मिक मूल्यों को अपना मुख्य लक्ष्य समझें।

कार्य बड़ा है और कठिन भी किन्तु जैसा कि कहा जाता है कि ''आरम्भ'' किये बिना कुछ हो नहीं सकता तो इस पुस्तक को भी ''आरम्भ''

का ही हिस्सा समझते हुए, मैं ये आशा करता हूँ कि अभिनय-योग एक दीप की तरह हर किसी के जीवन पथ को प्रशस्त करे और एक नवयुग की सूचना देते हुए हर उस विचार पर कुठाराघात करे जो मनुष्य को उसके आत्मिक विकास से रोकती हो।

ललित पारिमू

मन्तव्य

राहुल कालरा



मैं राहुल कालरा, कलाकार बन पाया इसमें Natsamaj और ललित सर का बहुत बड़ा योगदान है। मैं कलाकार बनने की चाह लिए वर्ष 2009 में मुम्बई आया और शायद मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं किसी एक्टिंग स्कूल में समय खराब करने की जगह ललित सर के साथ थिएटर करने लगा। मैंने अपने वर्कशॉप और नाटकों का सफर कला और रंगमंच का मज़ा लेते हुए किया। मैंने ललित जी के मार्गदर्शन में कुछ नाटकों में मुख्य या अहम् भूमिका निभाई। **मुक्ति मार्ग, पशु से मनुष्य, मैं मनुष्य हूँ, जंगल में खुलने वाली खिड़की, बजने दो शहनाई यार**।

नाटक और रंगमंच का स्वाद और उसकी आदत जिसे लग जाए वो बस उसी का होकर रह जाता है। लगभग चार-पाँच माह ललित जी के साथ थिएटर करने और उनका मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद मुझे पहला मौका फिल्म में अहम् भूमिका निभाने का मिला। राजश्री की फिल्म **'इसी लाइफ में'** मैंने परी नामक किरदार निभाया और फिल्म के दौरान और उसके उपरांत भी मैं सर के साथ थिएटर करता रहा।

फिर एक साल के करीब, फिल्म में व्यस्त रहा और **इसी लाइफ में** की रिलीज के बाद मैं ललित जी के साथ **बजने दो शहनाई** और **जंगल में खुलने वाली खिड़की** पढ़ना शुरु किया और बीच में मेरी दूसरी फिल्म **बॉडीगार्ड** में करीना के मित्र का किरदार और फिर **मुंडे पटियाला दे (पंजाबी)** फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने का मौका मिला।

मैं इतना ज़रूर समझ गया इतने वर्षों में कि मैं ज़रूर प्रतिभा लेकर मुम्बई आया पर उसे निखारने के लिए सही हाथ ललित पारिमू के और सही साँचा NATSAMAJ था।



देदीप्य भानु

(विज्ञापन फिल्मकार एवं साहित्य प्रशिक्षु)

जब थोड़ा बड़ा हुआ तब टेलीविज़न का आगाज़ हुआ ही था कि टीवी के तीन कलाकारों से बहुत मुतास्सिर हुआ। शाहरुख ख़ान, शेखर सुमन और ललित पारिमू। चूंकि बचपन से अमिताभ बच्चन को देखा था सो इन तीनों में भी वैसी ही प्रतिभा दिखाई देती थी। कालांतर में ललित जी के संपर्क में आया तो जाना कि ललित जी सिर्फ एक सुघड़ अभिनेता भर नहीं बल्कि विविध कलाओं के स्वामी हैं, उनसे सान्निध्य लाभ लेकर काफी कुछ जाना। जीवन दर्शन और साथ ही रंगमंच के उनके प्रेम को भी करीब से देखा। आज उनके द्वारा लिखित-मंचित नाटकों के संकलन ''मैं मनुष्य हूँ।'' के प्रकाशन की खबर सुनी, बड़ा हर्ष हुआ और दो शब्द इस कृति पर मेरा भी कुछ कहने का मन हुआ।

1. **यश का मूल्य :**- बड़ा ही सटीक चित्रण है एक नाटक जगत के अभिनेता के मनोभावों का और उसके फिल्म स्टार बनने के सपने और मंजिल पर पहुँचने तक की हकीक़त का। इतने कम वक़्त के नाटक में बहुत अच्छे तरीके से इतने बड़े विषय पर बात की गई जो अवश्य ही दर्शकों-पाठकों के मन को छू जाएगी और बड़े रूप में देखें तो मनोरंजन के आवरण में लपेटा हुआ जीवन का दर्शन भी इसमें छिपा हुआ है।

2. **''अँधेरे से कभी सीधे लड़ाई नहीं की जाती, घने अँधेरे में भी यदि छोटा सा दीपक जला दो तो वो रोशनी आगे चलने में सहायक होती है''** और 'मैं मनुष्य हूँ' नाटक, हर मनुष्य के जीवन का वो छोटा दीपक है। नाटक के मुख्य नायक ''अभिनय योग'' की कल्पना अपने आप में बहुत अनूठी है जिसका श्रेय श्रद्धेय ललित पारिमू को जाता है। वर्तमान मनुष्य जीवन किस प्रकार नकारात्मकता से घिरा हुआ है उस घेरे को

सकारात्मकता से रिप्लेस कर देने का भाव है 'अभिनय योग'। मनोरंजकता का निर्वाह करते हुए मनुज को जीना सिखाता "मैं मनुष्य हूँ" वर्तमान की ज़रूरत है और भविष्य की अति अनिवार्यता है।

3. "**बजने दो शहनाई**" का मंचन देखा है मैंने। किसी भी हास्य नाटक की प्रमुख बात one Liner संवाद और उसके पात्रों की Timing "बजने दो शहनाई" में पूरी तरह से है। 2 घंटे का पूर्ण पारिवारिक हास्य ड्रामा है यह नाटक। आज के युवाओं की मानसिकता पर मीठा कुठाराघात है और अंत वही सुखद हास्य-विनोद के पुट को लिए 21वीं सदी के मेट्रो रहिवासियों के जीवन की भावनाओं को बड़ी श्रेष्ठता से प्रकाशित करता है। सीधे-सीधे कहें तो "**बजने दो शहनाई**" मुम्बईया मसाला फिल्म है जो डायरेक्ट पाठकों के दिल से कनेक्ट होगी।



देवेन्द्र मिश्र

(थिएटर व फिल्म एक्टर)

अभिनय और अध्यात्म में मेरी शुरुआत से ही रूचि रही है। इसी रुचि की वजह से मैंने अपने जड़वत जीवन को त्यागपत्र दे दिया और अपनी टेलिकॉम की नौकरी छोड़कर मुंबई आ गया। यहाँ आकर मैंने अभिनय प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण केन्द्र ढूँढना शुरु किया और जल्दी ही मैंने ख़ुद को एक ऐसे शख़्स के समक्ष पाया जो टेलीविजन की दुनियाँ में मेरे एक मात्र पसंदीदा एक्टर थे। 26 जुलाई 2010 दिन सोमवार का था। उस व्यक्ति की भाव भंगिमा ने मुझे आकर्षण के पाश में बाँध लिया। मैं मंत्रमुग्ध सा हो गया। उनके अभिनय कौशल से मैं पूर्णतया परिचित था। ये तुरंत निश्चित हो गया कि मेरे अभिनय गुरु यही होंगे। उनका नाम था श्री ललित पारिमू।

इस तरह मेरा पहला परिचय श्री ललित जी और उनकी अकैडमी से हुआ। शुरुआत में तो मुझे ''ललित पारिमू एक्टिंग अकैडेमी ऑफ अभिनय योग'' सिर्फ एक एक्टिंग इंस्टिट्यूट समझ में आया था लेकिन धीरे-धीरे उनके सानिध्य में रहते हुए मुझे उनकी फ़िलॉसफी, ''अभिनय योग'' के बारे में विस्तृत जानकारी मिलने लगी। मैं अपनी खुशी का बखान नहीं कर सकता क्योंकि मैं यहाँ आया तो अभिनय के लिए था लेकिन साथ में अध्यात्म और योग के गूढ़ रहस्यों से पर्दा उठ रहा था जिसके लिए मेरा अतृप्त मन जाने कब से भटक रहा था।

अभिनय योग फिलॉसफी एक थेरिपी की तरह है, जो तीन चरणों में विभक्त है। प्रथम चरण में एक स्वस्थ अभिनेता बनने का पूरा चिंतन है, जो रील लाइफ़ अभिनय के लिए पर्याप्त है। दूसरे चरण में अपने नॉर्मल लाइफ़ के नकारात्मक भावों को सकारात्मक भावों में परिवर्तित करने की विधि है, जो रियल लाइफ़ को अच्छा बनाने की क्षमता रखता है। और तीसरे चरण में ध्यान

धारणा की विधियाँ जो अध्यात्म की प्यास रखने वालों के लिए है। एल.पी. एक्टिंग अकैडमी से कोर्स पूरा करने के पश्चात्, मैं ''नटसमाज'' नामक संस्था से जुड़ गया, जिसकी स्थापना मार्च 2008 में श्री ललित पारिमू जी ने ही किया है। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे इस पुस्तक में प्रस्तुत् नाटकों में अभिनय करने का अवसर मिला।

''**मैं मनुष्य हूँ**'' मेरा पहला स्टेज शो है, जिसमें मैंने सूत्रधार का अभिनय किया है जो कि बहुत ही आनंददायी अनुभव रहा है। इस नाटक में अभिनय योग के थेरिपेटिक पक्ष को दर्शाया गया है कि किस प्रकार से मनुष्य, मानसिक कुंठाओं से मुक्त होकर मन को स्वस्थ करके अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं?

''**मूर्तिपूजा अधमाधमः**'' नुक्कड़ नाटक की शक्ल में एक अद्‌भुत कृति है। इस नाटक में मूल बात ये है कि ईश्वर की प्राप्ति, बाहरी जगत में ढ़ोल-नगाड़े पीटने से या हुल्लड़बाजी करने से नहीं होगी। इसके लिए आपको ध्यान करना ही होगा। और इस नाटक की सबसे बड़ी ख़ूबी ये है कि इतनी बड़ी बात हम मस्ती करते हुए, नाचते-गाते हुए, दर्शकों के साथ-साथ खुद भी आनंद मनाते हुए कह जाते हैं।

''**बूँद बिंदु और सागर**'' मेरे दिल के काफी करीब है। यह नाटक एक गद्य गीत की तरह है जिसमें एक बूँद से एक स्त्री की अद्‌भुत तुलना करते हुए, आधुनिक समाज के ढाँचे पर कुठाराघात है। जो स्त्री जाति को उसकी वास्तविक पहचान और उपलब्धि से वाकिफ़ कराता है।

''**यश का मूल्य**'' नाटक में एक थिएटर एक्टर और एक फिल्म स्टार के बीच के खाई को दर्शाया गया है। साथ ही अपनी फ़िल्म इन्डस्ट्री में लगे कालेधन की वजह से एक सच्चे अभिनेता के जीवन में आये उठापटक को उजागर करता है। थिएटर एक्टर के स्टार बनने का सपना टूट जाता है और उसे पता चलता है कि क्या कीमत चुकानी पड़ती है।

''**वसुधैवकुटुम्बकम**'' नाटक में विश्व-बंधुत्व की भावना को दर्शाते हुए कहा गया है कि विश्व-बंधुत्व में सिर्फ मानव ही नहीं आते वरन् उनके साथ पेड़-पौधे, जीव-जंतु भी आते हैं। अत: वनस्पति-जगत् की उपयोगिता को समझते हुए पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखना अति आवश्यक है।



राहुल रामचंदानी

(फिल्म–टी.वी.–थिएटर लेखक व अभिनेता)

मैं जब मुम्बई आया था तो कभी भी मेरे मन में थिएटर जॉइन करने का इरादा नहीं था। मैंने सोच रखा था मुझे सिर्फ़ फिल्मस् और टेलीविजन में लेखक ही बनना है। क्योंकि उस वक़्त मैं सिर्फ़ 22 साल का था और मैंने किसी फ़िल्म इन्स्टीट्यूट से राईटिंग का कोर्स नहीं किया था इसलिए मेरे लेखन में ना कोई गहराई थी और ना ही क्राफ़्ट। इसलिए कोई भी निर्देशक मेरी लेखनी में दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था। फिर मैंने थिएटर ग्रुप जॉइन करने का सोचा और काफ़ी खोज पड़ताल करने के बाद नटसमाज थिएटर ग्रुप जॉइन किया। शुरुआती दिनों में मैंने अभिनय सम्बन्धी काफ़ी एक्सरसाइज़ की साथ में कई स्क्रिप्ट भी पढ़ी। नटसमाज में आने का सबसे बड़ा फ़ायदा यह मिला कि सर ललित पारिमू ना सिर्फ़ एक अभिनेता है बल्कि एक लेखक, निर्देशक और फ़िल्म–टी.वी.–थिएटर सम्बन्धी तक़नीकी जानकार भी है। उनके समृद्ध ज्ञान ने हमें अलग–अलग मायनों में उभरने दिया। यहाँ रहते–रहते कुछ ही महीनों में मुझे लोगों ने कॉम्प्लीमेन्ट दिया कि अब मेरी भाषा में काफ़ी क्लेरिटी है, मेरे stance/posture में एक स्थिरता है। साथ ही साथ मेरी लेखनी भी बहुत सुलझ गई है। जैसा कि ललित सर भी कहते है कि एक्टिंग या फिर कोई भी रचनात्मक काम सिखाया नहीं जाता, यह एक माहौल में ढ़लने से अपने आप आने लगता है। नटसमाज में ऐसा ही माहौल देखने को मिलता है।

आज मैं कुछ films-TV के lyrics-dialogues-story-screenplay-research लिख रहा हूँ। इसके लिए मैं नटसमाज का आभारी रहूँगा जहाँ से मुझे वो आत्मविश्वास, स्पष्ट विचार, काम को लेकर ईमानदारी और वफ़ादारी जैसी कई अन्य चीज़ें भी सीखने को मिली जिसकी तर्ज़ पर मेरे काम के साथ–साथ मेरे व्यक्तित्व को भी सहारा जाता है।

मेरे द्वारा लिखी गई कुछ फिल्में हैं :

1. Desi Kattey (Dialogues) Directed by Anand Kumar (Zila Ghaziabad, Jugaad, Delhi heights)
2. Unche Log Neeche Log (Additional Dialogues) Directed by Nila Madhab Panda (National Award Winner for I am Kalam, Jalpari)
3. Ghoonghat (Television show on Zee Marudhra) (Dialogues and Lyrics)
4. Unforgiven (Story-screenplay-dialogues) for rectangle media entertainment.



बीरेंद्र रजक

(रंगकर्मी व अभिनय प्रशिक्षक)

पितातुल्य आदरणीय ललित पारिमू जी से मेरा परिचय अगस्त 2009 में हुआ था अपितु इससे पहले इनका प्रथम दर्शन मई 2000 में आनंद मार्ग द्वारा आयोजित अर्द्धवार्षिक धर्म महासम्मेलन के सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान हुई थी। चूँकि कला, साहित्य और अध्यात्म में अभिरुचि के कारण मुझे वो कार्यक्रम बहुत ही अच्छा लगा था। इसी हेतु एक स्मृति मानस पटल पर जगह बना चुकी थी। वर्ष 2000 से 2008 के अंतराल में मैंने कई सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन व प्रदर्शन किया है, विशेषकर युवा संगठन और युवा मनोविज्ञान को आधार बनाकर। इसी दौरान लगातार चार सालों तक स्थानीय आनंद मार्ग स्कूल में प्रधानाध्यापक के रूप में शिक्षण कार्य किया और शिशु मनोविज्ञान पर आधारित कुछ सांस्कृतिक आयोजन भी किया। साथ-साथ लेखन कार्य भी चलता रहा। साल 2008 में कुछ ऐसी परिस्थिति बनी और मुझे मुंबई आना पड़ा। ठीक एक साल बाद सर का कृपा पात्र बना और तब से बना हुआ हूँ।

आदरणीय ललित पारिमू जी यद्दपि किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। फिर भी उनके व्यवहारिक जीवन का परिचय उनके नाट्य-कृतियों से पता चलता है। जहाँ ''मैं मनुष्य हूँ एवं मूर्तिपूजा अधमाधमा'' उनके अध्यात्मिक व्यक्तित्व का परिचय कराता है वहीं ''बजने दो शहनाई......यार तथा बूँद-बिंदु-सागर'' उनके सामाजिक व्यक्तित्व का। और ''यश का मूल्य'' नाटक से जहाँ उनके सांस्कृतिक व्यक्तित्व का पता चलता है, वहीं ''वसुधैवकुटुम्बकम्'' से उनके सार्वभौमिक व्यक्तित्व का।

अब मैं आपको एक ऐतिहासिक घटना से परिचय करवाता हूँ जिसका

नाम है ''अभिनय-योग''। यद्दपि जाने अनजाने विश्व की सभी सभ्यताएं व संस्कृतियाँ, अभिनय-योग का ही व्यवहार करती रही हैं किन्तु दर्शन के रूप में परिलक्षित हुआ 2009 में। प्रतिपादक आदरणीय ललित जी कहते हैं कि अभिनय, व्यक्ति और समाज को, योग अथवा धर्म अथवा अध्यात्म की ओर मोड़कर अंतर्यात्रा का पथ प्रशस्त कराता है।

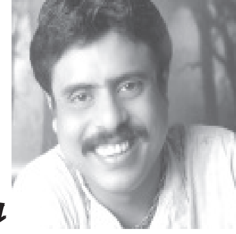
उपरोक्त विवेचना के परिप्रेक्ष में मेरा अनुभव कहता है कि व्यक्ति और समाज के निर्माण में कला और साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में व्यक्ति अथवा समाज, पुनः कला और साहित्य के माध्यम से अपनी सभ्यता और संस्कृति को पुनर्जीवित करने और पारमार्थिक पथ पर ले चलने योग्य उन्नत सामाजिक व्यवस्था बनाने में अवश्य ही सफल होंगे। यदि मैं आज के परिवेश की बात करूँ तो निःसंदेह ये कहने के लिए मज़बूर हूँ कि ''**आज समाज रूपी सरोवर में कीचड़ ही कीचड़ मालूम होता है जहाँ जल के अभाव में कमल के अनगिनत बीज दम तोड़ने को मजबूर हैं।**'' इसमें कहीं न कहीं कला और साहित्य के क्षेत्र में घटित हुए अथवा हो रहे नैतिक मूल्यों का ह्रास साफ-साफ परिलक्षित होता है। नैतिकता मात्र मुख की शोभा बनकर रह गई है और व्यावहारिकता से कोसों दूर होती जा रही है।

''**फिल्मी दुनियाँ एक भयानक किन्तु रंग बिखेरने वाली ऐसी दुर्दांत विशालकाय मछली बन बैठी है, जो सभ्यता-संस्कृति अथवा कला-साहित्य के सकारात्मक भावों को प्रवाहित करने वाली हर छोटी-बड़ी निर्दोष मछलियों का ग्रास करती चली जा रही है।**'' यदि समय रहते न संभला गया तो पशु जीवन और मनुष्य जीवन में कोई फ़र्क नहीं रह जाएगा।



Ajeet Singh

As an actor through the play 'Main Manushya Hoon' I experienced a strong connection with my emotions directly because the lines itself speak about every particular feeling. Its like an emotion writing its biography telling its journey from beginning till end. And you completely understand the ups and downs of our inner self. If someone goes deeply and honestly with these feelings then you can have direct spiritual connectivity too. It helped me to get aware of my inner strength which I was not known to, before.



Aloke Sengupta

(Actor /Director / Short Film Maker)

I was an ardent viewer of Shaktiman since my college days.The character I liked the most was Dr.Jaikal who was the main villain of the show.At that time,I didn't know his real name but his portraying of the bad character left me spellbound. From that time, I wanted to work with him if I got an opportunity to do so.In 2004, I came to Mumbai to start my career in acting,but I could not trace Dr.Jaikal.After 5 years,one of my friend with whom I have done theatre called me up one day and told me that one person whose name is Mr.Lalit Parimoo is doing a play and he requires some artistes. Actually my friend had worked with Mr.Lalit Parimoo's theatre group earlier but this time due to other commitments,he could not continue with him.So he gave me the Cell number and asked me to contact him.That time I was only doing theatre with various hindi Theatre Groups in Mumbai.So I grabbed the opportunity and spoke to Mr.Lalit Parimoo over phone.He gave me an appointment of next day at YWCA,Andheri,where he was rehearsing for the play Daayra. Next day at 5 p.m. I stood near YWCA's gate.After waiting about 15 minutes,the man who entered the gate wearing a bright coloured kurta and pyjama was none other than Dr.Jaikal of Shaktiman. I was stunned, shocked, surprised and happy at the same time. I just thought that one of my wishes got fulfilled after so many years of chasing.I introduced myself to him and the first question he asked me

was “kya chahte ho tum?”I replied –”Sir aapke sath kaam karna hai.”He just took a script and asked me to read it aloud on the stage.I read the script for about 10 minutes and Lalit ji said- You are in.We are working together.And the journey started.During that time I did the show Daayra,a story of the local goons in Mumbai doing all sorts of crimes & how a theatre director comes in their area and transforms all of them into good human beings.I was selected as one of the goons whose name was Raju Pantar.Since that time I had not played a criminal character so a lot of hard work was needed to portray this character.Lalit ji worked on my body language,attitude & voice modulations and after a lot of rehearsals I was transformed into Raju Pantar,the character I thought was impossible for me to portray as it was completely opposite to my original nature.But Lalit ji made it possible.He not only instructed us during the rehearsals but himself acted the characters so that we can understand the graph of the character.I learnt from him how to get into the skin of a character.I have done about 8 shows of Daayra with him in Mumbai and we got a very good response from the audience.After that I switched towards Television & Films but even now before portraying a character I always remember the instructions of Lalit ji how to approach a character & his advices help me a lot to develop a character.For me he is my MAHAGURU and all my respect and good wishes are always with him for all his ventures. ●



अमित श्रीवास्तव

(अभिनेता / निर्देशक)

एक दिन मैं और ललित जी बैठे साहित्यिक विचारों का, रंगमंच से जुडे सवालों पर एक परिचर्चा कर रहे थे, उसी समय ललित जी ने मुझसे कहा कि मैं उनका लिखा नाटक **'मैं मनुष्य हूँ'** को निर्देशित क्यों नहीं करता। मैं थोड़ा सोच में पड़ गया क्योंकि पहले ही उन्होंने उसे अपने तरीक़े से प्रदर्शित किया था। फिर उन्होंने मुझसे क्यों कहा? इस प्रश्न का उत्तर ख़ुद खोजते हुए मैंने हामी भर दी।

उसके बाद जब मैंने उस नाटक को दोबारा पढ़ा तो मेरे सामने सबसे बड़ा प्रश्न था कि मैं इसको किस तरीके से निर्देशित करूँ, क्योंकि उस नाटक की जो विषय वस्तु थी वो मेरे लिए बिलकुल नवीन थी।

योग और अभिनय का समागम जो ललित जी ने अपने आध्यात्मिक विचारों और कलम की प्रतिबद्धता से प्रस्तुत् किया वो मेरे लिए बिलकुल नया विषय था। मुझे जहाँ तक पता था कि अभिनेता के लिए योगासन अति आवश्यक है क्योंकि उसकी एकाग्रता, उसके विचारों और उसके शरीर को सशक्त बनाता है। परन्तु ललित जी ने अपनी लेखनी से अभिनेता को योगी के समकक्ष खड़ा कर दिया, अभिनेता का भगवान या उस शक्ति, जो इस विश्व ब्रह्माण्ड को चला रही है, उससे मिलन का वर्णन इतनी आसानी से कर दिया, जो कि बहुत अद्‌भुत बात है।

मुझे इस नाटक ने सोचने पर विवश कर दिया कि अगर विचार हटा दें तो भावना समाप्त हो जायेगी और अगर भावना समाप्त हो गई तो रस समाप्त होना निश्चित है....यानि इस विश्वब्रह्माण्ड में सब कुछ हमारे भावों से ही निहित् है, जुड़ा है।

ललित जी ने भावनाओं के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को इतनी बारीकी से लिखा, वो मेरे लिए बिलकुल नया विषय था। रिश्तों का, भावनाओं का ताना-बाना इतने कलात्मक रूप से बुनना आसान नहीं होता, उन्होंने इस ब्रह्मांड में रहने वाले हर मनुष्य को पात्र समझ कर उसके खट्टे-मीठे रिश्तों का हर पात्र के मनोविज्ञान का बड़ा गहरा अवलोकन कर लेखनी के माध्यम से आने वाली पीढ़ी (अभिनेता) को समर्पित किया, ये हम लोगों के लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

''क्योंकि हम मनुष्य है।'' ''मैं मनुष्य हूँ।''



आशीष चौधरी

जब आप मुम्बई जाओगे तो बहुत से ऐसे लोग मिलेंगे जो आपका मार्गदर्शन करेंगे पर आप किसकी सुनते हो यह पता होना बहुत ज़रूरी है।

हमारे देश में बहुत से लोग एक्टर बनना चाहते है लेकिन कैसे? वो शायद नहीं पता। सबसे पहले यह जान लेना बहुत ज़रूरी है कि क्यों आप एक एक्टर बनना चाहते हो? इसका जवाब बहुत मुश्किल है फिर से समझना बहुत ज़रूरी है कि इस क्षेत्र में काम और मेहनत ऐसी ही करनी पड़ेगी जैसे कि किसी दूसरे क्षेत्र में वास्तव में और भी कई ज़्यादा। इस सब के बाद जब आप देखोगे कि कितने सारे इन्स्टीट्यूट हैं सिखाने के लिए।

Then its a question of money! पर कुछ ऐसे भी लोग हैं इस दुनियाँ में, इस क्षेत्र में जो अपनी कला बेचना नहीं चाहते, जो काम अपने मन के साथ करते हैं and not like a business.

जब मैं भी इन प्रश्नों से परेशान था तो बस कैसे एक दिन, एक दोस्त से बात करते-करते नटसमाज से परिचय हुआ। फिर मैं एक दिन गया और ललित पारिमू जी से मिला। बात यह नहीं है कि वो एक अध्यापक है....कभी भी उन्होंने कोई एहसास नहीं होने दिया, बड़े होने का। शुरू से ही, ऐसा होगा....कि कोई डर नहीं था...अपने परिवार की तरह हम सब एक्टिंग किया करते थे। Money was never the priority...... ललित जी ने मुझे सिखाया कि मैं अपनी सोच बड़ी करूँ और फोकस से आगे बढ़ सकूँ। एक्टर बनने के साथ-साथ कैसे एक अच्छा इंसान बन सकूँ। The thing very moving is that sir took care of people who were from very tough backgrounds...they all had equal opportunities...trying our very best to make things happen......change our lives.

मुझे इतना जरूर पता है कि बहुत कम लोग इतना धैर्य और विश्वास के साथ बिना स्वार्थ के किसी के साथ इतना काम करेंगे और किसी को सिखाने की कोशिश करेंगे।

मेरी कामना है कि हम एक दिन इतने साधन पैदा कर सके.....that we can bring this organization to the level it deserves... and make it non-profit to promote genuine talent.....who do act-

ing for love and not superficial gains.

Its a beautiful art form and he is a beautiful sober person to take this initiative to put faith in his students.

मैं बहुत कुछ सीख रहा हूँ....बहुत कुछ मैंने सीखा नटसमाज में और उसकी वजह से आज मैं न्यूयॉर्क में हूँ....road is long....way is tough....but यहाँ पर भी मैं देखता हूँ कि अच्छे अध्यापकों की कितनी कमी है...जो down to earth ho....और बिना किसी स्वार्थ के आपको सिखाए।

I will never forget my lucky day when I came to Natsamaj....because it really opened my eyes to what acting is.

Thankyou sir,

Keep bringing this change....slowly and steadily!



Dipna Patel

My experience working with Lalit sir as the Director in the play Muktimaarg (related to Independence) performed on 15th August was excellent especially because it was a street play and the audience was interacting with us and also getting influenced in some way or the other.

Sir had a very good approach towards directing the play, he would not spoon feed us and let our own persoanlity reflect in the characters we were playing. He symbolized, told the story and depicted the problems faced by our Independent India in not more than 45 mins which was tough and he did it beautifully.

Main Manushya Hoon.

Sir has always believed that acting is a great excercise as well as an experience for any person belonging to any field. According to him acting is a kind of meditation which helps bringing out your negative emotions and positive emotions from your past experiences and channelizing them, e.g. controlling your emotions like greediness, anger, jealousy in real life and pouring them out while your acting and thus reducing the negative emotions from your personal life.

The play written by him encompasses various emotions and the transformation in a human being from having a negative to positive perspective.

If one has control over his negative emotions at the right time, he/she can improve his/her life tremendously.

It was a great learning experience to work with him and learning the craft channelization of various emotions.



आलोक कुमार

मैंने 2009 में नटसमाज थिएटर ग्रुप ज्वांइन किया उस वक्त वो दायरा प्ले कर रहे थे। कुछ समय तक मैंने बैक स्टेज किया और जल्दी ही उन्होंने मुझे ऑन स्टेज आने का भी मौका दिया। मैंने ललित जी के साथ कई नुक्कड़ नाटक किए। कुछ दिन बाद मैंने उनकी एकेडमी में एक्टिंग वर्कशॉप ज्वांइन की। उस एक्टिंग वर्कशॉप में ललित सर ने मुझे अभिनय योग से परिचित कराया। मेरा मानना है अभिनय योग अभी तक का सबसे प्रभावशाली एक्टिंग सीखाने का माध्यम है और मेरा मानना यह भी है कि जो लोग अभिनय जगत से नहीं भी जुड़े हैं, उन्हें भी अभिनय योग की वर्कशॉप ज्वांइन करनी चाहिए। अभिनय योग में कई विचार ऐसे हैं जिन्हें प्रैक्टिस करने से suppressed feelings और आपके subconcious mind का तनाव कम होता है, जो कि एक आम आदमी के जीवन में काफी मदद करता है। अभिनय योग सीखने के बाद जब मैंने वापस ललित जी के साथ प्ले करना शुरू किया तो स्टेज पर, टी.वी और फिल्म के सेट पर आत्मविश्वास का अनुभव किया। अगर हो सके तो अभिनय योग की वर्कशॉप पूरे देश में होनी चाहिए।

नटसमाज के साथ मेरा पसंदीदा नाटक है ''जंगल में खुलने वाली खिड़की''। यह एक ऐसा अकेला नाटक है जिसकी rehearsals में मुझे बहुत मजा आया। इस प्ले में जो किरदार मैं कर रहा था उसके लिए मैंने बहुत रिसर्च की जिसमें खुद ललित सर ने मेरी बहुत मदद की।

मैं तहेदिल से ललित सर का धन्यवाद करना चाहता हूँ, कि उन्होंने मुझे अपने सान्निध्य में लिया, उनके साथ नाटक करने का मौका मिला और अभिनय योग को सीखने का मौका मिला।



बिजेन्द्र सिंह

मैं 2010 में एक्टर बनने के लिए मुम्बई आया था। शुरु के कुछ 6–7 दिन मैंने कईं इन्स्टीट्यूट के चक्कर लगाए और आखिरकार मैंने ''L P Academy of Abhinaya Yog'' ज्वांइन की जहाँ मैं ललित सर से मिला। 3 महीने की वर्कशॉप के बाद मुझे एक प्ले करने का मौका भी मिल गया। मेरा पहला प्ले था ''जंगल में खुलने वाली खिड़की'' जिसके लिए मैंने 2 महीने रिहर्सल की और जब मैंने पहली बार स्टेज पर खड़े होकर लाइव ऑडियन्स के सामने संवाद बोले तो लगा कि अब कैरियर सही ट्रैक पर आया है। वास्तव में एक्टिंग कैरियर शुरू करने के लिए प्ले से बेहतर कोई रास्ता नहीं। मैं लकी था कि ये मौका मुझे मुम्बई आने के 5 महीनों के बाद ही मिल गया। उसके बाद जब मैंने ऑडिशन दिए तो मैं वास्तव में अपनी एक्टिंग में फर्क महसूस कर रहा था।

उसके बाद ये सिलसिला आगे बढ़ता गया और मैंने नटसमाज ग्रुप के साथ कईं नुक्कड़ नाटक किये, जैसे, ''मुक्तिमार्ग, बूँद बिंदु और सागर, यश का मूल्य, मूर्तिपूजा अधमाधमा।'' उसके बाद मैंने एक और full length play किया जिसका नाम था ''बजने दो शहनाई यार'', जिसके हमने almost 6-7 शोज किये। ''बजने दो शहनाई यार'' मेरा अब तक का सबसे फेवरेट प्ले है। क्योंकि इस प्ले में मुझे पहली बार कॉमेडी करने का मौक़ा मिला। इस प्ले के बाद मैंने फिर से ऑडिशंस देना शुरू किया और जल्दी ही मुझे चैनल वी के एक शो में एक करैक्टर मिल गया।

Now life is on track.

Thank you so much Lalit Sir for all your help and support. You are doing a great job. Please keep doing it, so more new actors like me can get help to start their career.



मकसूद आलम

बचपन से ही मैं नाटक कला में बहुत दिलचस्पी रखता था और उसके बारे में सुना करता था....एक दिन, जब मैं ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहा था, हमारे एकाउंट के सर जिनका नाम पल्लव है उन्होंने पहली बार हमें नाटक के बारे में बताया और हमें बांद्रा में St. andrews स्कूल में नाटक दिखाने लेकर गए। उनका यह मानना था कि जब इंसान को चिड़चिड़ापन, उदासी या बोरियत घेर लेती है तो उसे मनोरंजन के माध्यम् से दूर किया जा सकता है और यह सच है।

जब मैंने बांद्रा में पहली बार नाटक देखा तब मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी दूसरी दुनियाँ में आ गया हूँ जिसका मुझे बरसों से इंतज़ार था....नाटक देख कर हम सब मंत्रमुग्ध हो गए और मैं नाटक कला की तरफ आकर्षित होता चला गया.....किसी तरह जरिया ढूँढने लगा कि कैसे किया जाता है नाटक? किससे पूछू? कहाँ जाऊँ? क्या करूँ?

मैं रोज़ की तरह कराटे की क्लास कर रहा था, गार्डन में तभी एक लड़का मिला जो कराटे सीखने आया था और मुम्बई में एक्टिंग का प्रशिक्षण ले रहा था. ...उसने अपने बारे में बताया कि वो ललित सर के यहाँ अभिनय सीख रहा है.. .....तब मैंने उससे पूछा कि क्या मैं भी ज्वांइन कर सकता हूँ....उसने मुझे ललित जी से मिलवाया और मैंने क्लास ज्वांइन की....क्लास में मैंने आकर देखा कि यहाँ कि दुनियाँ बिल्कुल अलग है.....यहाँ आकर मैंने बहुत कुछ सीखा.... अभिनय क्या है? हमारे निजी ज़िदगी के तजूरबों से ही आता है....यहाँ हमने सीखा कि हमारे जीवन में कितने रस हैं और उन रसों का इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए.......और यह भी सीखा कि व्यक्ति, समाज, व्यवसाय और रहन-सहन के प्रति हमारा नज़रिया कैसा होना चाहिए......अभिनय सीखने के दौरान मैंने पाया कि मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और जीवन के तरह-तरह के अनुभव से बहुत कुछ सीखना शुरू किया.....एक नई दृष्टि मिली जीवन को देखने की....

अभिनय योग को सीखते हुए हमने यह भी जाना कि अगर हम किसी को किसी कारणवश नहीं पसंद करते हो, तब भी अभिनय के माध्यम से कैसे उसके साथ तालमेल मिला सकते हैं.........

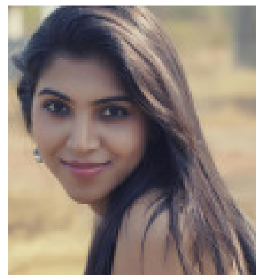
''मैं एक स्वस्थ अभिनेता हूँ'' इस प्रार्थना को बार-बार बोलने से अपने भीतर एक नए आत्म विश्वास और ऊर्जा का संचार होता है.....यह मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया......

हमारे सर ने हमें सिर्फ पैसा कमाना नहीं सीखाया बल्कि अभिनय योग के जरिए कैसे हम लोगों की, समाज की मदद करें यह भी बताया....एक अभिनेता का नैतिक दायित्व समाज के प्रति होना चाहिए, यह बात पहली बार सुनी, समझी और जानी....हमारे ललित सर के बारे में कहने के लिए शब्द भी कम पड़ जायेंगे क्योंकि वो एक इंसान ही नहीं बल्कि देवदूत हैं जिसे मसीहा कहा जाता है....वो हमेशा बच्चों की भलाई के लिए कुछ ना कुछ अच्छे उपाय देते हैं, अच्छे-अच्छे नाटक करवाते हैं जिससे समाज में एक अच्छा माहौल पैदा हो....

मैंने नटसमाज में जिन नाटकों में काम किया वो हैं—**दायरा, मुक्तिमार्ग, वसुधैव कुटुम्बकम्, बजने दो शहनाई, मैं मनुष्य हूँ, खेल जारी है, जंगल में खुलने वाली खिड़की, तुग़लक** इत्यादि......

मेरी शुभ इच्छा नटसमाज और एकेडमी के साथ है तथा मैं यह आशा करता हूँ कि आने वाले समय में यहाँ से अनेक अभिनय योगी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे और अपना तथा समाज दोनों का कल्याण करेंगे......

Suyesha



I happened to become a part of Natsamaj when I was one film old, so I understood the technicalities of the craft, but how to best extract the actor within me was something I was yet to understand. I met Lalit Sir through one of my co-actors in the film who had previously worked with him. After the very first reading I bagged the lead role 'Vani' in the play 'Bajne Do Shehnaai Yaar', directed by Lalit Parimoo. Starting from how I should approach Vani to how I should project her on stage, Sir baby walked me through the entire journey, teaching me every small nuance of the character. I learnt how to open up, how to adapt Vani, what to take from her and what to give her so I could play Vani to my best. I also learnt voice projection and body language which have helped me a great deal in playing the characters in the films I am doing presently. The training i have received from Lalit Sir and Natsamaj has not only helped me grow as an actor and hone my skills but they are also responsible in helping my career move in the upward graph. Its because of this confidence and training that iv been able to bag such acting oriented roles. In the end I'd just like to thank Natsamaj and Lalit Sir and suggest every budding actor to train under Sir. Natsamaj is an institution ,whose aim is to make actors, unlike most of the expensive acting schools today who only believe in extracting money and selling false dreams. Lalit Sir personally works on every student and eliminates his weaknesses on an individualistic level. For Natsamaj, teaching is a passion, not a business. Like it is said, once you master the talent, money and stardom will follow. Natsamaj is the place, which polishes the stone and brings out the diamond within you.

मैं मनुष्य हूँ।

पात्र :- सूत्रधार, पिता-पुत्र, माँ और पति-पत्नी, गर्लफ्रेंड/ बॉयफ्रेंड और चौदह-पन्द्रह लोग।

(इस नाटक में किसी भी प्रकार के मंच सज्जा की कोई आवश्यकता नहीं है। निर्देशक अपनी कल्पना के अनुसार किसी भी तरह का प्रयोग कर सकता है। रचनात्मक प्रकाश व्यवस्था से हर दृश्य को अलग-अलग ढंग से दिखाया जा सकता है।)

====================== start from here ===

(दृश्य-1)

सूत्रधार - नमस्कार मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत् करता हूँ। आज की शाम हम चर्चा करने जा रहे हैं, अभिनय-योग के बारे में। कुछ लोगों को ज़रूर यह हैरानी होगी कि यह अभिनय-योग है क्या?

कुछ लोग ज़रूर इस बात पर चिंतन कर रहे होंगे कि अभिनय और योग में क्या तालमेल है? और यही बात मैं आप सबसे कहना चाहता हूँ कि तालमेल है और तालमेल बहुत ही गहरा है। इसलिए हमने अभिनय और योग, दोनों को जोड़कर एक विधि बनाई है, अभिनय-योग।

अभिनय क्या है? देखा जाए तो जन्म से लेकर मरण् तक हम अभिनय ही तो करते हैं। सुबह से लेकर शाम तक हमारे सारे क्रियाकलाप, हमारी सभी गतिविधियाँ एक प्रकार का अभिनय ही तो है। जैसे ही हम किसी से संबंधित होते हैं, हमें अपनी भावनाओं को, विचारों को अभिव्यक्त करना पड़ता है। हमें अपनी वाणी या शरीर की सहायता से अपनी बात दूसरे तक पहुँचानी होती है, यह अभिनय ही तो है।

हम दूसरे की बात सुनते हैं या ग्रहण करते हैं फिर अपनी नई बात कहते हैं, यह भी तो अभिनय है। कई बार जब हम अकेले होते हैं, किसी से संबंधित नहीं होते हैं, तब भी हमारा मन किसी न किसी वार्तालाप में संलग्न होता है। कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि हम अपने आप से ही बातें करते हैं। पर ऐसा नहीं है, हम अक्सर दूसरे से ही बात कर रहे होते हैं। मन की जो बातें हम किसी से नहीं कह पाते या नहीं कहते हैं, उसे हम मन ही मन कह लेते हैं, यह अभिनय ही तो है।

पैदाइश से लेकर मृत्यु तक प्रकृति हमसे कई तरह की भूमिकायें करवाती रहती है, पहले बच्चा या शिशु, दूसरा किशोर या किशोरी, फिर युवक या युवती फिर प्रौढ़ फिर वृद्ध फिर मृत्यु। फिर बच्चा-शिशु-किशोर-युवा-प्रौढ़-

वृद्ध–मृत्यु फिर बच्चा। यह सिलसिला चलता रहता है। एक विराट अभिनय। ''अभिनय– लीला''।

इसके अलावा भी हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी हम कई तरह की भूमिकायें निभाते हैं। जैसे पिता, पुत्र, पत्नी, पुत्री, पति, चाचा, ताऊ, मामा, दादा, दादी, नाना, नानी, पड़ोसी इत्यादि। जिस पेशे से हम जुड़े होते हैं, उसमें भी अलग–अलग तरह की भूमिकायें निभाते हैं। कोई जूनियर है तो कोई सीनियर है। कोई मालिक है तो कोई मज़दूर है। कोई वकील है। कोई डॉक्टर है। कोई कलाकार है। कोई शिक्षक है। कोई सी.ई.ओ. है तो कोई सेल्समैन है। कोई मंत्री है तो कोई प्रधानमंत्री है। इन सब अलग–अलग भूमिकाओं के माध्यम् से एक अभिनय लीला चल रही है।

(दृश्य–2)

(कुछ कलाकार आते हैं और मंच पर आकर आंगिक अभिनय प्रस्तुत् करते हैं।)

मैं एक स्वस्थ अभिनेता हूँ।

विश्व ब्रह्मांड के इस पृथ्वी ग्रह पर मैं सौ वर्षों के लिए आया हूँ। और मुझे........की भूमिका मिली है। मैं अपनी भूमिका निभाने में पूर्ण रूप से सफल होऊँ, इसके लिए मैं मन और प्राण से प्रयत्नशील रहूँगा। मुझमें अपनी भूमिका समझने की शक्ति पैदा हो और मन, वचन और कर्म से मैं अपना मनुष्य जीवन सार्थक बना सकूँ, इसकी मैं कामना करता हूँ।

मैं अच्छी तरह से समझता हूँ कि जो शक्ति इस पूरे विश्व ब्रह्मांड को चला रही है, वही शक्ति मेरे चरित्र, मेरी भूमिका और मेरे जीवन को भी चला रही है। मैं हर दिन, हर पल उस शक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर रहा हूँ और उसी शक्ति की सहायता से इस विश्व रंग मंच पर मैं........ का अभिनय कर पा रहा हूँ।

मैं जानता हूँ क्योंकि मुझे मनुष्य की भूमिका मिली है, इसलिए मेरा लक्ष्य है स्वयं को जानना। अपने इस अभिनय यात्रा के दौरान मुझे सुख–दुःख,

लाभ-हानि, आशा-निराशा, राग-द्वेष जैसे अनेक दृश्यों को निभाना होगा। किंतु सभी दृश्यों के पीछे जो दृष्टा है, सभी जीवों के पीछे जो साक्षी भाव है, उसे जानने के लिए मैं हमेशा सजग व सचेत रहूँगा।

मैं एक स्वस्थ अभिनेता हूँ।
मैं एक स्वस्थ अभिनेता हूँ।
मैं एक स्वस्थ अभिनेता हूँ।

(प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

(दृश्य-3)

(प्रकाश आता है।)

सूत्रधार : अब मन के जगत को टटोलकर देखते हैं कि वहाँ क्या चल रहा है? कभी हम ख़ुश होते हैं तो कभी दु:खी हो जाते हैं। कभी हम क्रोध से भर जाते हैं तो कभी ईर्ष्या से जल उठते हैं। कभी मोह ग्रस्त हो जाते हैं तो कभी अहंकार से भर उठते हैं। कभी भीतर से प्रेम का झरना फुट पड़ता है तो कभी घृणा का गन्दा नाला हमें अपने साथ बहा ले जाता है। कभी आशा के फूल खिलते हैं तो कभी निराशा के काँटे चुभते हैं। कभी सफलता के शिखर को छू लेते हैं तो कभी असफलता की घाटी में गिर जाते हैं। कभी प्रेम, कभी घृणा। कभी भय, कभी निर्भयता। कभी राग, कभी द्वेष। कभी ख़ुशी, कभी ग़म। कभी हार, कभी जीत।

(एक कलाकार मंच पर आता है और निराशावादी-आशावादी चिंतन को अभिव्यक्त करता है।)

व्यक्ति-1

(निराशावादी स्वरूप)

व्यर्थ है। सब व्यर्थ है। सारी कोशिशें बेकार हैं। क्या रखा है, इस जीवन में? कुछ भी तो नहीं। सुख की तलाश में चलो, तो हाथ में दु:ख-तक़लीफ़ ही आती है। जिसे देखो वही परेशान है। दु:खी है। रुपए-पैसे की चिंता में, पत्नी-बच्चे, रिश्ते-नातों को संभालने की फ़िक्र में।

क्यों जिए जा रहे हैं हम लोग? किस दौड़ में क्या हासिल करने जा रहे हैं? और हासिल कुछ होता भी तो नहीं। और हासिल हो भी गया, तो क्या पा लिया? क्या हो गया? फिर से एक नई दौड़, एक नई आकांक्षा पकड़ लेती है। एक ही सर्कल में, एक ही वर्तूल में घूमे जा रहे हैं, कोल्हू के बैल की तरह। ''सुबह होती है, शाम होती है, उम्र यूँ ही तमाम होती है।''

(आशावादी स्वरूप)

सब ठीक है। सब ठीक है। मेरे जीवन में सब ठीक है। समग्र जीवन जैसा होना चाहिए, वैसा ही तो है। कहीं कोई कमी नहीं, सब सही है, सार्थक है, शुभ है, मंगल है।

कितना सुन्दर रहस्यों से भरा है यह जीवन। कितना कुछ है सीखने के लिए। नई-नई बातों को जानने के लिए। हम यदि थोड़े भी सजग रहें, सचेत रहें, जिज्ञासु रहें तो जीवन नित् नए रहस्य खोल देता है। अपने नए-नए रंगों की ओर हमें आकर्षित कर लेता है। हमें अवसर मिलता है, संसार को जानने का। जीवन को समझने का।

मैं नत्मस्तक हूँ, समग्र जीवन के प्रति। मुझे खुशी है कि मुझे मनुष्य जीवन मिला। इस पृथ्वी ग्रह पर आने को मिला। मैं अपने काम से खुश हूँ। अपने जीवन से संतुष्ट हूँ।

मेरी दिली कामना है कि सभी स्वस्थ रहें। निरोगी रहें। सभी जीवन का शुभ पक्ष ही देखें। कभी किसी को दु:खी जीवन न जीना पड़े।

(प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

(दृश्य-4)

(प्रकाश धीरे-धीरे फैलता है।)

सूत्रधार : आशा-निराशा, सुख-दु:ख...... मनुष्य का मन सदा इन दो विपरीत भावों में डोलता रहता है। अभिनय में वह शक्ति है कि यदि मनुष्य चाहे तो नकारात्मक भावों को सकारात्मक भावों में परिवर्तित कर सकता है। शायद आपके मन में ये सवाल उठेगा कि कैसे? तो सबसे पहले जिस नकारात्मक भाव या विचार से मनुष्य का मन ग्रस्त है, उसे आंगिक या वाचिक अभिनय से अभिव्यक्त करना होगा। एक विशेष रस की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। चाहे करुण या रौद्र या अद्‌भुत आदि-आदि। उससे मन का एक स्थान जिसे नकारात्मक भाव ने घेरा था वह खाली हो जाएगा। अब उस खाली स्थान को सकारात्मक भाव से भर देना होगा, अभिनय से। कहने का मतलब है अगर मन क्रोध से भर गया है, तो क्रोध की अभिव्यक्ति करके क्रोध को बाहर फेंक दो और फिर उसमें करुणा और विवेक का भाव जगा दो। बार-बार इसका अभ्यास करने से मनुष्य अपने नकारात्मक भावों को, सकारात्मक भावों में परिवर्तित करने में सफल हो सकता है। कभी आपने सोचा है, ये हमारा नकारात्मक भाव क्या है? शास्त्र की भाषा में कहें तो, षड्‌रिपु और अष्टपाश, ये हमारे मानसिक जगत के नकारात्मक भाव हैं। इन्हीं पर हमें काम करना है अभिनय के माध्यम से। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर्य, मन के शत्रु हैं, असुर हैं। घृणा, शंका, भय, लज्जा, कुल, शील, मान और युगुप्सा ये मन के बन्धन हैं।

(प्रकाश धीरे-धीरे बंद होता है।)

(दृश्य-5)

(मंच के दूसरे भाग पर धीरे-धीरे प्रकाश फैलता है। हल्का संगीत का स्वर उभरता है। क्रमश: कलाकार आते हैं और बारी-बारी से षड्‌रिपुओं के नकारात्मक और सकारात्मक स्वरूप प्रस्तुत् करते हैं।)

kaamnaaon se hi sansaar ki shrishti hoti hai. kaam beej jo apne me hazaron sanskaar aur kaamna liye hai. is srisht jagat kaa adhaar hai. yahi kaamnaayen manushya ke andar bhi hoti hai. jinki purti ke liye vo sansaar me daudta bhaagta hai. apne andar ki santushti ke liye vo naam, dhan, yash, vaibhav, samajik pratishtha sab paana chaahta hai. sath me apni bhavnaaon ki santushti ke liye vo bharpur prem (jise kaam bhi kahte hai.) bhi paana chahta hai. yahi hai kaaaam.

काम

व्यक्ति-2

हाँ मैं चाहता / चाहती हूँ। मैं बहुत कुछ चाहता / चाहती हूँ। मेरी ढ़ेर सारी अभिलाषाएँ हैं। अनगिनत इच्छाएँ हैं। और मैं उन सब को पूरा करना चाहता हूँ। बहुत सपने हैं मेरी आँखों में, जिन्हें मैं साकार होते हुए देखना चाहता हूँ। दिल में इतने अरमान हैं कि मैं उन्हें गिन नहीं सकता, पर चाहता हूँ कि सब पूरे हों और चाहता ये भी हूँ कि जल्दी पूरे हों। जल्दी-जल्दी-जल्दी। सब्र नहीं और सब्र नहीं। मेरी चाहत है कि मेरे पास काम हो। ख़ूब काम हो। ढ़ेर सारा पैसा हो। मेरे काम को सब सराहें, मेरी ख़ूब तारीफ़ हो। मैं चलूँ और लोग कहें कि वो देखो एक क़ाबिल आदमी जा रहा है। हाँ मैं चाहता हूँ कि मुझे सब क़ाबिल कहें।

मेरी चाहत है प्यार की, अनंत प्रेम की, एक ऐसे शख़्स से जो मुझसे बेशुमार प्यार करे, मुझे अपना कहे। मेरा साथी हो....मेरा हमसफ़र। मेरे सुख-दुःख में मेरा पार्टनर, मैं उसे ख़ुशी दूँ, वह मुझे ख़ुशी दे। मैं उसके दुःख सह लूँ, वो मेरी तक़लीफ़ों को आधा कर दे। हम दोनों मिलकर संग-संग जीवन की धूप-छाँव का मज़ा लें।

ओह! मेरी जब़रदस्त चाहत है, ऐसे प्रेम की, जिसमें मैं अपना सब कुछ लुटा सकूँ, सब कुछ गँवा दूँ, सब कुछ समर्पित कर दूँ।

----

sutradhaar: yadi kaamna ya ichcha me rukaavat aaye to krodh ka aana svabhavik hai. sabhi ichchhayen sahaj rup se poori nahin hoti. virodhin shakti ke sath sangraam karna padta hai aur yadi usme asaphal hue to krodh aa hi jaata hai. **क्रोध**

व्यक्ति - 3

(नकारात्मक)

बहुत-बहुत गुस्सा आ रहा है मुझे। क्यों मेरी इच्छायें पूरी नहीं होतीं। क्यों मैं अपने सपनों को साकार करने में सफल नहीं हो रहा हूँ। कुचल गए मेरे अरमान और ध्वस्त हो गई मेरी अभिलाषाऐं।

ओह! जो-जो मैंने सोचा था, वो-वो नहीं हो रहा है। क्यों? क्यों मैं हारा हुआ-सा महसूस कर रहा हूँ? समय तेज़ी से निकलता जा रहा है। मेरी इच्छाएं अभी भी अधूरी रह गई हैं।

जी चाहता है सब कुछ तहस-नहस कर दूँ। आग लगा दूँ इस पूरी दुनियाँ को। गोली से उड़ा दूँ सबको जो मेरी इच्छाओं में बाधा बनकर खड़े हो रहे हैं। नाश कर देना चाहता हूँ, तमाम लोगों को जिन्होंने मेरी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए मेरी सहायता नहीं की। हिंसा......घोर हिंसा......क्रोध.. भयानक क्रोध।

मेरा पूरा शरीर काँप रहा है। मेरी साँसों पर मेरा नियंत्रण नहीं है। दाँत भिंच रहे हैं। मुट्ठियाँ बंध गई हैं। आँखों में ख़ून सवार है। दिमाग की नसें फटी जा रही हैं। हत्या-हत्या-हत्या।

(सकारात्मक)

अब मैं शांत हो रहा हूँ। अब मेरी साँसें मेरे नियंत्रण में आ रही हैं। अब मैं स्वाभाविक महसूस कर रहा हूँ। मेरी मुट्ठियाँ खुल रही हैं। मेरे दाँतों की किट-किट ख़त्म हो रही है। आँखों से ख़ूनी पर्दा हट गया है। दिमाग की नसें कुछ-कुछ शांत हो रही हैं।

मेरे विचारों में परिवर्तन आ रहा है। अब मन में हत्या का भाव नहीं रहा। कुछ-कुछ चीज़े साफ नज़र आ रही हैं। शायद मैं ग़लत सोच रहा था। सच तो यही है कि सारे न सही किन्तु कुछ तो अरमान पूरे हुए ही हैं। मैंने माँगी थी पूरी बगिया वो न मिली तो क्या हुआ? कुछ फूल तो मेरे झोली में आये ही हैं। मैंने माँगा था पूरा आसमान, वो न मिला तो क्या हुआ? कुछ सितारे अपने हुए ही हैं।

मुझे इन सितारों को, इन फूलों को संजोकर रख लेना चाहिए। जो मिला है उससे संतुष्ट होना चाहिए। मैं दोनों हाथ उठाकर धन्यवाद देना चाहता हूँ। उस परम शक्ति को जिनकी वजह से मेरी कुछ अभिलाषाऐं पूरी हुई हैं। धन्यवाद... धन्यवाद....धन्यवाद। मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ आपका, मेरे पास जो कुछ भी है, आप ही की कृपा का फल है और आप ही का प्रसाद है। मेरी चाहत बस इतनी है कि जीवन की इस आपा-धापी का सामना करने की शक्ति दे।

jab kaamna poori ho jaay to thodi der ke liye santosh to milta hai lekin phir se usi ichchha ko puri karne ke liye bechaini hoti hai aur saath me ye bhaav bhi jaagta hai ki maatra me bhi ab vridhi ho. yahi lobh hai.

लोभ

व्यक्ति -4

(नकारात्मक)

आ..हा...हा... मेरी इच्छा पूरी हो गई। वाह! वाह-वाह....मज़ा आ गया। लेकिन अब और चाहिए, इतने में संतुष्ट नहीं हो पा रहा हूँ। और...और...और... चाहिए। नहीं, मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि तुम्हें मिला या नहीं। बस, मुझे अपनी इच्छा पूरी करनी है। इसके बिना मैं अधूरा हूँ। ढ़ेर सारा चाहिए, ढ़ेर सारा। थोड़े में मज़ा नहीं है। मैं जानता हूँ कि इतना सारा भोग नहीं पाऊँगा, पर फिर भी इकट्ठा करना चाहता हूँ। खुशी होती है, मुझे यह देखकर कि मेरे पास इतना सारा है। हा..हा...हा...

(सकारात्मक)

आकांक्षाओं का कोई अंत नहीं है। इच्छाओं का पूरा होना भी कठिन मालूम होता है। कैसा है ये मेरा मन, जो कभी ठहरना ही नहीं चाहता?...और चाहिए, और चाहिए कि माँग करते-करते मैं कितना संग्रह कर पाऊँगा? क्या मैं थोड़े से संतुष्ट नहीं हो सकता? असंतोष की ये आग, क्यों मुझे जलाए रखी है?

आखिर मुझे क्या चाहिए? और कितना चाहिए? भोजन तो चाहिए ही और थोड़े कुछ कपड़े भी...एक घर या एक छत और शायद एक अदद् गाड़ी भी. ..पढ़ने को कुछ पसंदीदा पुस्तकें और सुनने को कुछ संगीत और हाँ, कुछ दोस्त भी। पर धन की चाहत कितनी होनी चाहिए? और भोग की सीमा भी कितनी हो?

अपने अनुभव से यही समझ पाया हूँ कि भोग को जितना बढ़ाओगे उतना ही बढ़ता जाएगा। इन्द्रियों से मिलने वाला सुख कभी तृप्त नहीं कर पाएगा। और...और....और.... की मांग लगी ही रहेगी....तो फिर क्या करें? हाँ इन्द्रिय सुख के पार जाना होगा। इन्द्रियों के उच्छश्रृंखलता पर थोड़ा अंकुश लगाना होगा। थोड़ा संयम रखना होगा। मन कभी इन्द्रियों के सुख से संतुष्ट नहीं हो सकता। इसलिए उसको खोजना होगा जो मन को तृप्त कर सके। मन को ठहरा सके। मन

को शांत कर सके। क्या है वो? कौन है वो? क्या सच में मन कभी तृप्त हो सकता है?

----

jis bhi vyakti ya vastu ko manushya paa leta hai. uske prati aasakt ho jaata hai. use us vastu yaa vyakti ko pne hi ahm ka vistaar maanane lgta hai. chahe vo apna mkaan ho zamin ho, patni, mitra, beta, beti ya apna mobile, TV, gaadi ya kuchh bhi aisa jise vo apna maanta ho. yahi aasakti moh hai.

मोह

व्यक्ति-5

(नकारात्मक)

नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मेरे साथ ऐसा नहीं हो सकता। जो मुझे मिला है, जो मेरी इच्छा पूरी हुई है। उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता। क्यों मुझे वंचित होना पड़े उससे, जिसे मैंने इतने कठिन श्रम से पाया है।

बर्दाश्त करना बड़ा मुश्किल हो रहा है कि मुझे अपनी प्रिय वस्तु से अलग होना पड़ेगा। बहुत-बहुत कष्ट होता है ये सोचकर कि जो इच्छा इतने परिश्रम से पूरी हुई है, वो अब ज्यादा देर तक मेरी नहीं रहेगी।

(सकारात्मक)

मैं भी कैसा अज्ञानी हूँ। इग्नोरेंट....Such a fool...I feel that what an ignorant am I.... जिसे मुझसे अलग होना है वो तो होगा ही। जो वस्तु मुझसे दूर होनी है सो तो होगी ही। थोड़े देर के लिए मैं मोहान्ध हो गया था। विवेक-अविवेक का बोध समाप्त हो गया था।

जो मुझे मिला वो बस मुझे मिलना था। एक इच्छा की पूर्ति होनी थी। एक घटना का होना था। मैं शायद बस एक माध्यम् था।

मैं भी किसी अदृश्य लोक से आया हूँ और मेरी प्रिय वस्तु भी किसी अलग जगत में थी। थोड़े से वक़्त के लिए हम एक-दूसरे के सम्पर्क में आ गए और अब अलग हो रहे हैं, तो इसमें कष्ट कैसा? मेरा अपना तो कुछ भी नहीं है। सब वहीं से आ रहा है, फिर जा रहा है।

सृष्टि होती है, स्थिति होती है। फिर लय होता है। यही खेल लगातार चल रहा है और अज्ञानवश हम थोड़ी देर के लिए ये समझ बैठे हैं कि मैं कर रहा हूँ। मैंने किया। नहीं, सच तो यही है कि मैं तो एक माध्यम् हूँ। निमित्त...चीजें बस हो रही हैं। मेरा मोहित होना मेरी भूल है, मेरी अज्ञानता है।

यदि मैं घटनाओं को देखने वाला बन जाऊँ, तो शायद मैं ऐसे मोहग्रस्त न होऊँगा। एक अभिनेता की तरह हर घटना को जी लूँ, तो शायद मोह मुझे पकड़ न पाएगा।

----

kaamnaaon aur ichchhaon ka jaal bada hi penchida aur ghumavdaar hai. ab dekhiye yadi apni ichchha puri hui aur dusaron ki nahin hui to turant hi man tulnaatmak chintan karne lagta hai. khud ko un se behtar, bada aur shaktishaali samajhne lagta hai. jisaki ichchhayen poori nahin hui yahi khud ke badpaan ka ehsaas mad kahlaata hai.

मद

व्यक्ति-6

(नकारात्मक)

आ...हा...हा...। बड़ा अच्छा लग रहा है। मेरी इच्छा पूरी हुई और तुम्हारी नहीं हुई। हा...हा....हा.... देखा, मैंने कैसे ये हासिल कर लिया। कैसे ये काम मैंने बख़ूबी किया। कुछ इस तरह की सब देखते ही रह गए।

मेरी तो बात ही कुछ और है, जिस काम में हाथ लगाता हूँ, सफलता मेरे कदम चूमती है। मैंने जो-जो चाहा, वो पूरा करके दिखाया है। अब तो मुझे कोई नहीं रोक सकता। जो मैं कर सकता हूँ, वो कोई नहीं कर सकता। मुझे पता है मेरी सारी इच्छाएं पूरी होंगी। सारे सपने साकार होंगे। हा...हा....हा.... तुम्हारे नहीं होंगे पर मेरे ज़रूर होंगे।

(सकारात्मक)

हाँ ये सही है कि जो मैंने चाहा वो हुआ पर शायद कोई अदृश्य शक्ति मुझसे ये करवा रही है। कितने और लोग हैं जो वही चाहते हैं, जो मैंने चाहा और सबकी इच्छाएँ पूरी नहीं हुई। मेहनत भी सब ने कम नहीं की थी। उनके उदास चेहरे मुझसे देखे नहीं जाते। काश ऐसा हो पाता कि सबको उनकी आवश्यकता के अनुसार मिल पाता। क्यों कुछ ही लोग भाग्यशाली होते हैं और अधिकतर मज़बूर और बेबस।

मैं इन निराश चेहरों पर ख़ुशी देखना चाहता हूँ। हारे हुए लोगों के मन में जीतने की उमंग भर देना चाहता हूँ। मैंने ये जान लिया है कि मेरा अहंकार झूठा है। मेरा मद मेरा भ्रम है, मेरी भूल है। जिनके पास नहीं है, उनके सामने मेरा मदोन्मत् होना मेरी मूर्खता नहीं तो और क्या है?

----

ab yadi aap reh gaye aur yadi dusare aage nikal gaye to? yaani ichchha to andar hai aur poori nahin hui p[ar uski ho gai jo aapka pratiyogi tha to kya hoga? kitni mazedaar baat yadi ichchha poori na ho to sidhaa krodh, aur ichchha poori na ho kintu saath me dusare ki ichchha poori hpne se taqlif ho to irshya ya matsaaaarya.

मत्सर्य

व्यक्ति-7

(नकारात्मक)

ओह....जल रहा हूँ मैं। बुरी तरह पीड़ित महसूस कर रहा हूँ। उफ्... मेरी इच्छाऐं पूरी नहीं हुईं और उसकी हो गई। ऐसा क्या है उसमें जो मुझमें नहीं है? मैं क्यों पीछे रह गया? कहाँ कमी रह गई? देखो-देखो कितना खुश है वो? आह!... ये सहा नहीं जा रहा है। काँटा-सा चुभ रहा है मन में। कितना कष्ट, कितनी पीड़ा हो रही है, मैं बयाँ नहीं कर सकता। क्या करूँ मैं? मन से बद्दुआ निकल रही है कि उसका बुरा हो...बुरा हो। उसे क़ामयाबी और न मिले और सुख न मिले।

(सकारात्मक)

जो हुआ अच्छा हुआ। ठीक हुआ। कोई बात नहीं कि मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई। शायद मैं उस लायक नहीं था। शायद इससे भी अच्छा कुछ होने वाला है, जो मैं नहीं जानता या फिर मुझे अभी और कुछ सीखना बाक़ी है।

उसकी इच्छा पूरी हो गई ये भी शुभ है। वो इस लायक था। मैं भी इस बात से प्रसन्न हूँ कि उसे मिला। मैं उसकी ख़ुशी में शामिल हूँ। उसके सुख से आनन्दित हूँ। प्रफुल्लित हूँ कि वो अपने मक़सद में क़ामयाब हो गया। ईश्वर उसे और दे! सब को दे! सब ख़ुश रहें! सभी सुखी और प्रसन्न रहें! सभी जीवन को स्वीकार भाव से लें। और मस्ती से जिऐं! (प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

दृश्य - 6

सूत्रधार - आईये अब हम 'योग' की थोड़ी चर्चा करते हैं। योग शब्द का वास्तविक अर्थ है जोड़ना। मिसाल के तौर पर पानी में अगर रेत

satya, ahinsa, astey, aprigrah, brahmcharya, shauch, santosh, tap, svaadhyaay aur iishvar pranidhaan.

1. jo nitya hai. aprivartanshil hai, usi ko jivan ka lakshya maanana satya kehlata hai.
2. shari man aur vachan se kisi ko nuksan na phunchaana hi ahinsa hai.
3. chori na karna asteya.
4. jitni zaroorat ho utna hi sangrah karna aprigrah.
5. sada brahm me vichran karne ka prayatna brahmcharya.
6. andar aur baahar ki safai shauch.
7. jo mila usase santusht rehna santosh.
8. kathin shram se pichchhe na hatna tap.
9. dharma shastron ka adhyayan svaadhyaan.
10. dhyaan dhaarna ka abhyaas iishvar pranidhaan.

मिला दी जाए तो दोनों जुड़ तो जाएंगे लेकिन दोनों का अस्तित्व अलग-अलग मौजूद रहेगा। किंतु अगर पानी में चीनी मिला दें, तो चीनी का अपना अस्तित्व पानी में मिल जाएगा और एक नई सत्ता शर्बत हमें प्राप्त होगी। इस जोड़ को योग कहेंगे। ज्ञान की दृष्टि से हमारी व्यक्तिगत सत्ता का परम सत्ता में मिल जाना व खो जाना ही योग है। योग के पथ में हम कुछ नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। फिर आसन और प्राणायाम की सहायता

--iske baad juda hai ..

से अपने शरीर और मन दोनों को मज़बूत बनाते हैं। और फिर इस मज़बूत मन को ध्यान धारणा की सहायता से अपने स्त्रोत से मिला देते है। या यूँ कह सकते हैं कि अपने मन को चरम विषय के साथ एकाकार करा देते हैं। जब कभी मन के भीतर द्वैत भाव नहीं रहेगा, तब-तब मन आत्मा में मिलता चला जाएगा। और साथ ही साथ उस मन के लिए संसार का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। यह मिलन एक अद्‌भुत घटना है। एक महामिलन है और इसकी अनुभूति है आनन्द। केवल आनंद। इसी आनंद को मनुष्य दूसरे रास्ते से भी प्राप्त करने का प्रयास करता है। कभी कला से, कभी प्रेम से, कभी धन से, कभी बौद्धिक ज्ञान से तो कभी इन्द्रिय सुख से। पर यह सभी इन्द्रिय सुख मनुष्य को तृप्त नहीं कर सकते। मनुष्य तृप्त होता है आत्मा से मिलने वाले आनंद से और जब तक वह उस आनंद में डूब नहीं जाता तब तक उसकी दौड़ समाप्त नहीं होगी।

|--|

इस आनंद को प्राप्त करने से रोकने वाली दो बाधाएँ है। पहली बाधा है षड्‌रिपु और दूसरी है अष्टपाश।

सूत्रधार - अष्टपाश मन के बन्धन हैं। मन को निर्मल बनाने में जो रुकावट या बाधाएं आती हैं वो इन्हीं अष्टपाश से हैं। मन को नकारात्मक बनाए रखने में इनका पूरा-पूरा योगदान हैं। बार-बार किन्हीं कारणों से मन इनसे वशीभूत हो जाता है और धीरे-धीरे रोग-ग्रस्त या विक्षिप्त हो जाता है। मन को आत्मा की ओर अग्रसर होने की यात्रा

abhinay aur dusare lalit kalaaon se bhi manushya aanand praapt karne ki bhi koshis karta hai jise nandan vigyaan kehte hain. aur kalaa ki bhaasha me ras: shringaar, karun, haasya, ver, raudra, adbhut, vibhats, bhyaanak aur shaant. inhin navrason ke maadhyam se klaa ke jagat ki abhivyakti hoti hai. jo manushya ko uske dainndan jeevan ki aantarikta se baahar nikaalkar sikshm jagat ki or le chalti hai ras ko prapt karne ki khoj manushya ki sabase gahri khoj hai. prmaatma ka ras sabse aanand dene wala ras hai. tabhi use rasovaisah kaha jaana hai. vo ras samudra hai. vahi ras toda sthul hokar in navrason ke roop me sabhi kalaaon ke maadhyam se milta hai. aaiye inhi rason ki abhivyakti se man ko suksma jagat ki or le chalte hai.

========================== continue to second mail ====================================

में मन की स्वच्छता तथा निर्मलता आवश्यक है। बार-बार इन बंधनों के विरुद्ध सजगता हासिल करते हुए अपने स्तोत्र की ओर अग्रसर होना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। (प्रकाश धीरे-धीरे कम होता है।)

दृश्य-7

(मंच के दूसरे भाग पर धीरे-धीरे प्रकाश फैलता है। हल्का संगीत का स्वर उभरता है। कुछ कलाकार अलग-अलग मुद्राओं में खड़े नज़र आते हैं और प्रकाश बढ़ता हैं। सब एक साथ अष्टपाश को दोहराते हैं और जो पाश जिस भाव को दर्शाता है उस मुद्रा में उसका अभिनय कर रहे हैं।)

व्यक्ति 8 - मैं तुमसे नफ़रत करता हूँ। आई हेट यू। तुम्हारी मृत्यु की कामना मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।

व्यक्ति 9 - मुझे डर लग रहा है। दिल बैठा जा रहा है। घबराहट बढ़ रही है।

व्यक्ति 10 - तुम मुझे ठगना चाहते हो? मेरा फ़ायदा उठाना चाहते हो।

व्यक्ति 11 - मुझे बहुत शर्म महसूस हो रही है। नज़रे उठ नहीं पा रही है।

व्यक्ति 12 - मेरा खानदान सबसे ऊँचा है। हम श्रेष्ठ है। और बाक़ी सब छोटे हैं।

व्यक्ति 13 - तुम गंवार हो, अनपढ़ हो, अश्लील हो। मैं सभ्य और सुसंस्कृत हूँ।

व्यक्ति 14 - मेरा अपमान करने का साहस कैसे हुआ। मुझे चुनौती दे रहे हो। मुझे?

व्यक्ति 15 - बड़ा मज़ा आ रहा है। तुम्हारी निन्दा सुनने में। जो रस मिल रहा है, आ...हा....हा....

(अलग-अलग मुद्राओं में उस विशेष पाश का अभिनय करते हुए ये स्वर ऊँची आवाज़ में सुनायी दे रहे हैं। मंच पर प्रकाश मध्यम है।)

घृणा

व्यक्ति-8

(नकारात्मक)

आई हेट यू! आई हेट यू! नफ़रत है मुझे तुमसे। मेरा मन सड़ गया है। तुम्हारी मौजूदगी मुझे यह बताती है कि मैं कितना बदनसीब हूँ। संसार की मामूली खुशियाँ मेरे भाग्य में नहीं हैं और ऐसा नहीं है कि मैं उस लायक नहीं, बल्कि तुम हो उसके कारण और सिर्फ तुम्हारी वजह से मेरी यह दशा हो गयी कि मैं प्रेम के क़ाबिल नहीं रहा।

एक समय तुम्हें आकाश पर बिठाया था। तुम्हारी हर इच्छा को पूरा करना अपनी ख़ुशी समझता था। तुम संतुष्ट हो, खुश हो, यह देखना अपना सबसे बड़ा कर्तव्य समझता था। लेकिन अब वह सब याद करके सिर्फ घृणा ही पनपती है। मेरी कोमल भावनाऐं बुरी तरह आहत हुई हैं और उसके कारण तुम हो। कभी-कभी ऐसा लगता है मैं प्रेम विहीन, भावना-शून्य, हाड़-माँस का एक पुतला हूँ। जिसकी संवेदनशीलता मर गई है, जो एक यंत्र की तरह अपनी साँस ले रहा है और ख़्वामख़्वाह जी रहा है। (यह कहते हुए पूरा चक्र रुक जाता है।)

कोरस -

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतंगमय।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो।
मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(सकारात्मक)

तुम्हारी ही मौजूदगी से मन के भीतर प्रेम का बीज अंकुरित हुआ है। स्नेह का प्रकाश और विश्वास के जल से वह बीज धीरे-धीरे फूल में परिवर्तित हुआ है और अपनी ख़ुशबू से मुझे देर तक आह्लादित करता रहा है। किंतु प्रेम

का फूल मुरझा गया, धूल में मिल गया, ये सच है। लेकिन यह भी तो संभव है कि जो आज धूल-धूसरित है वह फिर से नए बीज को जन्म दे। फिर अंकुर फूटें। फिर ख़ुशबू फैले।

मैं समझ रहा हूँ कि यहाँ कुछ भी स्थाई नहीं है। यदि आज प्रेम-घृणा में बदल सकता है तो घृणा भी तो प्रेम में फिर से परिवर्तित हो सकता है। अपने प्रयास से क्या मैं स्वयं को प्रेम पाने का दावेदार बना सकता हूँ या फिर मुझी को बिना किसी उम्मीद के प्रेम के दीप को जलाये रखना होगा। मुझे फिर से प्रयास करना ही होगा। मन के सड़े हुए हिस्से की परवाह किए बगैर प्रेम के बीज के अंकुरित होने की तैयारी करनी होगी। रात कितनी ही गहरी हो, सुबह की पहली किरण रौशनी के आने की सूचना दे ही देती है।

शंका

व्यक्ति 9

(नकारात्मक)

नहीं-नहीं। मैं विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ। तुम जो कह रहे हो, जो चाह रहे हो, मैं उस पर भरोसा नहीं कर सकता। तुम आज ये कह रहे हो और कल कुछ और कहोगे। और फिर उसके बाद कुछ और नयी बात आएगी जो आज की बात से बिल्कुल अलग होगी। मैं आँख बंद करके तुम्हारी बात नहीं मान सकता। उससे पहले जब भी ऐसा किया है तो मन आहत ही हुआ है। गहरी पीड़ा पहुँची है और फिर निराशा ही हुई है।

मुझे क्या मालूम कि तुम्हारे इरादे क्या है? मैं तुम्हारे शब्दों पर यक़ीन कर भी लूँ, तो भी इस बात पर कैसे यक़ीन करूँ कि जो तुम कह रहे हो और करना चाह रहे हो उसमें तुम्हें सफलता मिलेगी ही? यह ख़तरा मैं क्यों लूँ कि तुम डूबे तो मुझे भी डूबना होगा?

कोरस -

असतो मा सद्‌गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतंगमय।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो।
मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(सकारात्मक)

मैं तुम्हारी बातों को शक की दृष्टि से देख रहा हूँ। और अगर मैं अपनी इस शंका पर शंका करूँ तो? क्योंकि भरोसा नहीं करने से कुछ हो भी तो नहीं रहा! शंकालू मन आगे बढ़ने से रोक रहा है और ऐसा भरोसा अभी आया नहीं कि पूरी तरह से कूद जाऊँ।

अब जब मैं अपने शंकालू विचारों पर भी शंका करने लगा हूँ तो ऐसा लगता है कि शायद मेरी दृष्टि में दोष है। मैं अँधेरे कोनों को सच मान रहा हूँ और प्रकाश के आने के द्वार भी बंद कर रहा हूँ।

मैं एक-एक कदम, आस्था और विश्वास के साथ तो चल ही सकता हूँ। तुम पर यक़ीन नहीं भी हो पर मुझे अपने ऊपर तो विश्वास होना ही चाहिए। और हाँ सबसे बड़ी बात, मुझे ईश्वर पर विश्वास करना चाहिए। उस विश्वास के सहारे तुम पर भी भरोसा कर सकता हूँ।

सच, ईश्वर पर आस्था करने से मन में अद्‌भुत शक्ति का संचार हो रहा है। जब वो मेरे साथ हैं और मैं उनका एक अंश हूँ तो कोई मेरा क्या बिगाड़ लेगा? चलो मैं तुम्हारी बात मान रहा हूँ, जो कह रहे हो वो करने को तैयार हूँ और भरोसा मुझे ईश्वर पर है कि जो होगा सही होगा और उन्हीं की मर्ज़ी से होगा।

भय

व्यक्ति-10

(नकारात्मक)

डर लग रहा है मुझे। हृदय तेज़ी से धड़क रहा है। साँस कितनी तेज़ चल रही है। कुछ सोचने विचारने की शक्ति नज़र नहीं आ रही। हाथ पाँव भी फूल गए हैं। माथे पर पसीना आने लगा है। क्या होगा अब?

बहुत कमज़ोर महसूस कर रहा हूँ। एक तरफ जी चाह रहा है कि कहीं

भाग जाऊँ और अपना मुँह छुपा लूँ। किसी ऐसे दामन का सहारा लूँ जो मुझे सुरक्षा का एहसास कराये और मेरी कमज़ोरी का हल कर ले जो इस समय मेरे जीवन पर हावी हो गयी हैं। और अगर नहीं तो मौत को ही गले लगा लूँ।

दूसरी तरफ यह इच्छा होती है कि नोच लूँ सब कुछ। तुम्हें, उसे इन सबको और यहाँ तक की खुद को भी। इस भयग्रस्त जीवन को ढ़ोये रहने का क्या अर्थ। हर बार यह भय घेर लेता है। कभी ग़रीबी का भय, कभी मौत का भय, कभी बीमारी का भय, कभी अपने प्रियजनों को खोने का भय तो कभी असफलता का भय और कभी बुढ़ापे का भय। इस भय से क्या कभी मुक्त हो पाऊँगा?

कोरस -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

वो पूर्ण हैं। यह भी पूर्ण है। उस पूर्ण से यह पूर्ण निकला हैं। उस पूर्ण से इस पूर्ण के निकलने के बाद भी वो सदा पूर्ण ही शेष रहता है।

(सकारात्मक)

हाँ मैं भय से मुक्त होना चाहता हूँ। पर कैसे? जिन कारणों से भय जन्म लेता है, उन्हें जड़ से कैसे दूर किया जा सकता है? ज़रूरत है थोड़ी हिम्मत और साहस की। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने धैर्य और संयम को बनाए रखते हुए यदि हम मुश्किलों और मुसीबतों का मुक़ाबला करते जाएँ तो संभव है भय से थोड़ी राहत मिल सकती है। अपनी दृष्टि लगातार लक्ष्य पर रखनी होगी और वहीं से प्रेरणा लेते हुए आज की भयग्रस्त परिस्थितियों से जुझना होगा। भविष्य में मिलने वाला सुख अक्सर आज के दु:ख को भुलाने में सहायक होता है। कल मिलने वाली विजय की आशा आज की असफलता से जन्मी निराशा को दूर करने में सहायक होती है।

अब यदि मौत का भय सताता है तो अमरत्व को अपना लक्ष्य बनाना होगा। धीरे-धीरे जब यह भाव घना हो जाएगा तो मन पहले निर्भय और फिर अभय होता जाएगा। इसी अभय भाव से मिलने वाली रौशनी भय के अँधेरी काली अमावस्या को हमेशा के लिए दूर कर सकती है।

लज्जा

व्यक्ति-11

(नकारात्मक)

शर्म से सिर झुका जा रहा है। लाज के मारे शरीर में एक अजीब सी ऐंठन हो रही है, उसे अपने काबू में करना मुश्किल लग रहा है। ख़ुद को अभिव्यक्त करने में कठिनाई महसूस हो रही है। गालों पर अजीब सी सुर्खी आ गई है और नज़रे सीधे सामने देख नहीं पा रही है।

मन धीर-धीरे पिघलता सा जा रहा है और ऐसा लगता है जैसे मैं अपने बचपन में आ गया हूँ। चाह कर भी बोल नहीं पा रहा और बोलने जाऊँ तो शब्द अटक जाते हैं और संकोच के कारण चुप्पी छा जाती है।

यह क्या सोचेगा? लोग क्या कहेंगे? कहीं वह मेरे बारे में ग़लत न सोच ले! इतने लोगों के बीच मैं अपने मन की बात कैसे कहूँ। कई बार मैं अपनी इस मानसिकता के कारण, अपना ही नुक़सान कर जाता हूँ और फिर बाद में पछताता हूँ। इस लज्जा वृत्ति पर नियंत्रण कैसे हो?

कोरस -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

वो पूर्ण हैं। यह भी पूर्ण है। उस पूर्ण से यह पूर्ण निकला हैं। उस पूर्ण से इस पूर्ण के निकलने के बाद भी वो सदा पूर्ण ही शेष रहता है।

(सकारात्मक)

सुना है लाज स्त्री का गहना है और प्रेम संबंध को मधुर बनाने में मददगार होता है। किंतु इसकी अधिकता मनुष्य को संकोची और मितभाषी बनाती है जिसके कारण वह अपने मन की बात कह नहीं पाता। जब-जब हम प्रेम में पड़ेंगे तो लाज का सामना करना ही होगा और जब-जब प्रशंसा के गीत हम पर लिखे जाएंगे तब-तब लाज मुखरित होगा।

लाज के बंधन से कैसे निकलें? क्या निर्लज होना एक उपाय है? पर

क्या निर्ल्लजता एक बंधन नहीं है और उसका दूसरों पर दुष्प्रभाव भी तो पड़ता है। फिर क्या किया जाए?

रास्ता है। पहले अपने मन की बात को अकेले में करने का अभ्यास करें नि:संकोच होकर, फिर उन्हीं बातों को और सभ्य ढंग से दूसरों के सामने रखें। शरीर के साथ भी ऐसे ही अभ्यास करना होगा। अकेले में शरीर की नग्नता से परिचित होना होगा और उससे जन्मे संकोच से मुक्त होने का प्रयास करते रहना होगा। अभिनय की शक्ति का यहाँ पूरा प्रयोग हो सकता है। जैसे एक अभिनेता को दूसरों के सामने नि:संकोच प्रदर्शन करना पड़ता है वैसे ही यदि हम इस दृष्टि से औरों से जुड़ें कि एक प्रदर्शन करना है तो लज्जा पर धीरे-धीरे नियंत्रण आ सकता है।

कुल

व्यक्ति-12

(नकारात्मक)

(क) जानते भी हो हम लोग किस ख़ानदान से संबंध रखते हैं? तुम और तुम्हारे जैसे लोग हमारे आस-पास खड़े भी नहीं रह सकते। अपनी बिरादरी में हमारे ख़ानदान का रुतबा सबसे ऊँचा है। और यह बात अच्छी तरह से समझ लो, कि तुम क्या हो, यह तुम्हारा ख़ानदान बता देगा। याद रखो, मैं अगर तुम जैसों के साथ उठ बैठ रहा हूँ, तो यह मेरा बड़प्पन है, मेरी महानता है। तुम्हें मेरा एहसान मानना चाहिए कि मैं तुम्हें इस लायक समझता हूँ कि तुम्हारे साथ बातचीत करूँ, अपने पास बिठाऊँ और अपनी बिरादरी में शामिल करूँ।

(ख) मैं आप लोगों की बराबरी कैसे कर सकता हूँ? हम तो खुद को बचपन से ही छोटे और मामूली मानते हैं। हमारा ख़ानदान तो ग़रीबों और पीड़ितों का रहा है। आप जैसे बड़े लोगों के सामने तो बात करना तो दूर खड़े रहने में भी कंपकंपाहट होती है। आप लोगों के घर नौकर-चाकर शान व शौकत, दौलत-शोहरत और बुद्धि देखकर तो हम चकाचौंध हो ही जाते है। सच में आपकी महानता और बड़प्पन का एक छोटा सा हिस्सा हमारी झोली में गिरे तो हम कृतार्थ हो जाएंगे।

कोरस -

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतंगमय।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो।
मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(सकारात्मक)

खुद को दूसरों से बड़ा या छोटा मानना कितना मज़बूत बंधन है मन का। यह भाव हमारे मन को और संकीर्ण बनाता है। परमात्मा की बनाई इस सृष्टि में सब तो बराबर हैं। सब एक हैं। फिर भी यह सोच बड़े और छोटे की क्यों पैदा होती है? शायद हमारा सामाजिक ढाँचा इसके लिए जिम्मेदार है। सदियों से जिस ख़ानदान को धन-वैभव प्रचुर मात्रा में मिला उसके परिवार जनों में यह विचार बैठ गया कि हम बड़े लोग हैं और ठीक ऐसा ही विचार उन परिवारों के मन में बैठ गया जो अभाव में जिए हैं। यदि सामाजिक व्यवस्था ऐसी हो जाए जहाँ सबको अपने हक का हिस्सा मिले तब शायद इस मानसिक बीमारी से छुटकारा मिले। अपने आप को दूसरों के मुकाबले बड़ा या छोटा मानना एक दोष है और समान भाव से दूसरे को देखना एक चारित्रिक गुण।

शील

व्यक्ति 13

(नकारात्मक)

मुझ जैसे सभ्य, शिक्षित और सुशील व्यक्तित्व से ऐसी बात कह रहे हो? तुम तो गँवार हो, अशिक्षित हो और आधुनिक युग के ज्ञान से दूर, अँधकार में कूपमंडूक की तरह जी रहे हो। तुम क्या मुझसे बात करोगे? भाषा का जो ज्ञान मुझे है, ज्ञान-विज्ञान की जो समझ मुझे है, अपनी बात को कहने और लिखने का जो सलीका मेरे पास है, उससे तुम क्या मुकाबला करोगे?

मैं मंदिर के उस कलश के समान हूँ जिसकी स्थापना पूरे पूजा-स्थल की शोभा बढ़ा जाती है। मैं माथे पर लगाए उस तिलक के जैसा हूँ जिससे एक साधारण व्यक्ति भी पूजनीय् हो जाता है। मैं हूँ आकाश का सबसे चमकता सितारा, धरती का सबसे कीमती रत्न, बेदी पर चढ़ाया गया फूल, विद्वान की विद्या, एक कुमारी का सौन्दर्य और किसी वैभवशाली का यश और प्रताप।

कोरस–

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतंगमय।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो।
मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(सकारात्मक)

अपने सभ्य होने का इतना अंहकार कि दूसरे के अस्तित्व को ही मैं अस्वीकार कर रहा हूँ। यह तो अति हो गयी। मैंने भाषा सीख ली, मैंने विद्या जान ली, मैं धन कमाने में आगे बढ़ गया लेकिन मेरे ह्दय का विकास तो नहीं हुआ। चित् निर्मल तो हुआ नहीं। मन के विकार तो अभी भी वैसे ही हैं जैसे पहले थे। तो फिर मेरी इस सभ्यता का क्या अर्थ।

ह्दय से होने वाले संवाद को सीखना होगा। उदात्त विचारों को, भावों को अपने जीवन में ऊँचा स्थान देना होगा। करुणा, दया, ममता, क्षमा, प्रेम, विनम्रता जैसे भावों को सजग रूप से जगाना होगा।

हम दूसरों से कैसे व्यवहार करें, अपने से कमजोरों और मुसीबत के मारे लोगों से कैसे पेश आऐं, इससे सिद्ध होगा कि हम सही अर्थ में कितने सुशील और सभ्य हैं।

मेरी शिक्षा, मेरा विज्ञान, मेरी विद्या, मेरी आधुनिकता, सब दो कौड़ी की है यदि मेरे तमाम हुनर और गुण किसी कमज़ोर के जीवन में आशा का संचार न कर पाए।

रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं कायल।
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है।।

मान

व्यक्ति 14

(नकारात्मक)

मेरा अपमान! तुम्हारा साहस कैसे हुआ? क्या समझते हो तुम मुझे? क्या

लगा तुम्हें कि मैं कौन हूँ? तुम्हारी नज़रों में मेरी इज्ज़त है? तुम जो भी हो, जैसे भी हो, जहाँ-कहीं भी हो, एक बात अच्छी तरह से समझ लो। मेरा सम्मान न करके तुम अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी भूल कर रहे हो। मुझे छोटा दिखाना, मुझे कमज़ोर समझना, अपने से कमतर समझना और मेरी बातों को हल्के में लेना, यह सब मुझे तक़लीफ़ दे रहा है। कोई मुझे माने या न माने लेकिन मैं ख़ुद को मानता हूँ और एक क़ाबिल और लाय़क आदमी समझता हूँ और इसीलिए सबसे यह उम्मीद करता हूँ कि मुझे भी क़ाबिल और लाय़क समझे।

मुझे धन न मिले, नाम और यश न मिले, चलेगा लेकिन मेरे आत्म सम्मान को ठेस पहुँचे यह मैं हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा।

कोरस -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

वो पूर्ण हैं। यह भी पूर्ण है। उस पूर्ण से यह पूर्ण निकला हैं। उस पूर्ण से इस पूर्ण के निकलने के बाद भी वो सदा पूर्ण ही शेष रहता है।

(सकारात्मक)

किसी ने मेरा अपमान किया तो मुझे इतनी चोट क्यों लगी? इस पर जब विचार की रौशनी डालता हूँ तो यह समझ में आता है कि मेरे मन में मेरी अपनी छवि कितनी बड़ी, कितनी महत्वपूर्ण है। किसी दूसरे ने उस छवि को यदि धूमिल किया तो कितना बुरा लगा!

क्या हुआ यदि मैं उसकी नज़रों में नालाय़क हूँ या कम महत्वपूर्ण हूँ। यह तो उसकी अपनी दृष्टि है। बहुत लोग है ऐसे जिनकी दृष्टि में मैं लाय़क और महत्वपूर्ण हूँ। लेकिन क्या दूसरों का नज़रिया मेरे बारे में, मुझ पर इतना असर डाल सकता है? कोई मुझे अच्छा समझे तो मैं ख़ुश और कोई बुरा तो मैं नाख़ुश। इससे तो यह सिद्ध हुआ कि मैं एक मशीन हूँ जिसकी चाभी दूसरों के हाथ में है। वह जब चाहें मुझे चला सकता हैं। ऐसे में क्या करूँ? सच है कि मैं मशीन तो हूँ तो फिर इस मशीन को और अधिक से अधिक जान लूँ। शरीर, मन और बुद्धि के स्तर पर स्वयं को पूरी तरह से जानने का प्रयास करूँ। जैसे प्रकृति में मौसम बदलते हैं वैसे ही मैं हृदय के आकाश में अपने अंदर के बदलते मौसमों को एक साक्षी की तरह देख पाऊँगा।

जुगुप्सा

व्यक्ति-15

(नकारात्मक)

यह हुई न बात! अब जो उसकी निन्दा शुरु हो रही है, इसमें मुझे बड़ा रस आ रहा है। दूसरे की निन्दा करने और सुनने में जो मज़ा है उसे कैसे बयान करूँ। पता नहीं क्यों विद्वान जनों ने इस निन्दा रस को सबसे उत्तम स्थान क्यों नहीं दिया? आ-हा-हा कैसा आनन्द आ रहा है यह सुनने में कि वह कितना छोटा, कमीना, कमज़ोर, नीच, धृर्त, पाखंडी, धोखेबाज़ और ठग है। उसे अपने किये की सज़ा मिल रही है और वह अब कष्ट में हैं, यह जानकर कितना हर्ष हो रहा है। मेरे हृदय का कमल, देखो-देखो, कैसे खिल रहा है। यह सुनते हुए कि उसने अपना पूरा जोर लगाया और उसे फिर मुँह की खानी पड़ी। उसकी हर कोशिश बेकार हो रही है और उसके अवगुणों का चिट्ठा अब सबके सामने खुल गया। हाँ यह तो है कि उसके सामने मैं उसकी प्रशंसा करूँगा और उसकी असफलता पर अफ़सोस व्यक्त करूँगा लेकिन यहाँ उसके पीठ पीछे अपने मित्रों के बीच उसकी धज्जियाँ उड़ाने में, उसकी खिल्ली उड़ाने में, उसकी असफलता की कहानी को चटकारे ले लेकर सुनाने में बड़ा मज़ा आ रहा है।

कोरस-

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतंगमय।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो।
मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(सकारात्मक)

क्या मिला उसकी निन्दा करने में? इससे तो मन दूषित ही हुआ है। निन्दा से बचने का कहीं कोई उपाय तो होगा। मन का निरीक्षण लगातार करते रहना होगा। कभी भी उसे बेलगाम घोड़े की तरह छोड़ देने से नहीं चलेगा। 'होश' का अभ्यास करना होगा जिसके कारण उन शुरु के विचारों पर नज़र रख सके

जब मन निन्दा करने की ओर अभी अग्रसर हुआ ही है। यदि उस समय जागरुक होकर विचारों और भावों को देख सकें तो संभव है उसी समय उस निन्दा करने के भाव पर रोक लगाने में सफल हो जाऊँ।

वह व्यक्ति, जिसकी निन्दा करने में रस लेने जा रहा था, वह भी परमात्मा का ही अंश है और मेरे मैं का विस्तार है। मैं उसमें भी तो मौजूद हूँ। उसकी निन्दा कहीं गहरे में मेरे अपनी ही तो निन्दा है। तो फिर क्यों न उसके प्रति करुणा के भाव को जगाने का प्रयास करूँ। और यदि उसने कभी, किसी समय मेरा अहित किया है तो क्यों न उसे क्षमा कर दूँ। अब देखो न! यह कहने से ही मन का बोझ कितना हल्का हुआ है। (प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

दृश्य-8

(प्रकाश आता है।)

सूत्रधार : किसी ने सही कहा है लाईफ इज़ रिलेशनशिप। जीवन का नाम है, रिश्ता, सम्बन्ध। हमारे मन में जो भी सकारात्मक या नकारात्मक भाव उठते है, वो हमेशा किसी रिश्ते के दायरे के अंदर ही होते है। प्रेम है तो कोई स्त्री है या कोई मित्र है। घृणा है तो कोई शत्रु है। ईर्ष्या है तो कोई प्रतियोगी है। हमारे जितने भी नज़दीकी रिश्ते है, वो सब ''लव-हेट'' हैं। मतलब प्रेम और घृणा है। जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन्हीं से घृणा भी करते हैं। जहाँ मित्रता होती है, वहाँ शत्रुता के भाव भी पैदा होते है। जो आज अच्छा लगता है वो कल बुरा लग जाता है। ये जो विराट रंग-मंच पर अच्छे-बुरे की ''अभिनय-लीला'' चल रही है, ये हमारे नज़दीकी रिश्तों की वजह से ही पैदा होते हैं। जैसे - पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माँ-बेटी, सास-बहू, भाई-भाई, बहन-बहन, मालिक-नौकर, सीनियर-जूनियर इत्यादि।

आइए, कुछ ऐसे नज़दीकी रिश्तों को देखते हैं जिनमें मौजूद द्वंद को हम कैसे सुलझा सकते हैं या कम कर सकते हैं।

(प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

दृश्य-9

(प्रकाश आता है।)

पिता-पुत्र का दृश्य

पुत्र : पापा, वो इंटरटेन्मेंट सेक्शन आपके पास है क्या? हैलो, इज दिस सिनेमैक्स? थ्री इडियट की टिकट अवेलेवल है क्या? आठ बजे के शो की? दो टिकट। हाँ-हाँ, मैं एक घंटा पहले आकर कलेक्ट कर लूँगा। ओ.के.। थैंक्यू।

पिता : तुम फिल्म देखने जा रहे हो?

पुत्र : हाँ, और खाना मैं आकर खाऊँगा।

पिता : अरे सुनो। राय अंकल से बात कर लो और उनसे अपोयटमेंट फ़िक्स करके मिल लेना। तुम्हारी जॉब की बात उनसे कर ली है मैंने।

पुत्र : माँ ने आपको बताया नहीं?

पिता : क्या नहीं बताया?

पुत्र : यही कि अभी मैं नौकरी नहीं करना चाहता। मैंने एम.बी.ए. का फॉर्म भर दिया है।

पिता : एम.बी.ए. का फॉर्म भर दिया है? अजीब बात करते हो। बी.ई. की डिग्री ले चुके हो। नाउ यू आर एन इंजीनियर। किसी अच्छी कंपनी में अप्लाई करो, बेटा।

पुत्र : पापा, आप जानते हैं, सिर्फ बी.ई. की डिग्री से किसी भी अच्छी कंपनी में करियर बनाना मुश्किल है।

पिता : करियर बनाने में वक़्त लगता है। और फिर टेक्नीकल डिग्री लेने के बाद और पढ़ने का क्या तुक है। आखिर मैंने ऐज़ एन इंजीनियर अपना करियर बनाया भी और रिटायर भी हो गया।

पुत्र : मगर पापा, वो टाइम कुछ और था। आज मल्टीनेशनल कंपनी का ज़माना है। सिम्पल बी.ई. से जहाँ मैं दस साल में पहुँचूँगा। एम.बी.

ए. में दो साल देने पर वही पोज़िशन मुझे जल्दी मिलेगी।

पिता : ऐसा कुछ भी नहीं है। तुम अपने करियर को लेकर डेफिनेट नहीं हो। मेहनत से डर रहे हो। रिस्पोंसीबिलिटी से भाग रहे हो।

पुत्र : प्लीज़ ट्राई टू अंडरस्टेंड पापा, मुझे अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास है। इसलिए मैं करेंट सिचुएशन के हिसाब से चल रहा हूँ। और एजूकेशन कभी भी बेकार नहीं जाती।

पिता : तो क्या ज़िन्दगी भर पढ़ते ही रहोगे? इट्स जस्ट वेस्ट ऑफ टाइम एण्ड मनी। अरे नौकरी करो...करियर बनाओ...शादी करो...लाइफ में सेटल हो जाओ। नहीं, और पढ़ना है। मैंने पहले ही कहा था तुम्हारी माँ से कि तुम इंजीनियरिंग को लेकर सीरियस नहीं हो।

पुत्र : आप बिल्कुल भी समझने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। मैं अगर अच्छे करियर, अच्छी पोज़िशन, अच्छी सेलेरी के बारे में सोच रहा हूँ तो ग़लत है? उलटा मुझे....

पिता : मैं बाप हूँ तुम्हारा, तुम समझाओगे मुझे। तुम से ज़्यादा दुनियाँ देखी है मैंने। तुम्हारी उम्र में मैं एक बच्चे का बाप बन चुका था। और तुम इस उम्र में बाप से फीस से पैसे माँग रहे हो? रिटायर हो चुका हूँ मैं। कहाँ से लाऊँ पैसे? श्वेता की शादी कौन करेगा? तुम करोगे? बजाय मेरा सहारा बनने के मुझ पर और बोझ मत लादो।

पुत्र : तो आपसे पैसे कब माँगे मैंने? मैं ख़ुद कर लूँगा इंतज़ाम। मैं तो लोन के लिए अप्लाई भी कर चुका हूँ। मैं तो बस आपसे डिसकस कर रहा था।

पिता : राय क्या लेनी है मेरी? तुम इंजीनियर हो चुके हो, अब नौकरी करो। ये लो राय अंकल का कार्ड, उनसे मिटिंग फ़िक्स कर लो तुम्हें नौकरी मिल जाएगी।

पुत्र : पापा, आपसे तो बात करना ही बेकार है। मुझे नहीं चाहिए कोई कार्ड-वार्ड। जा रहा हूँ मैं.... (बेटा चला जाता है।)

पिता का स्वगत् ।

पता नहीं ऐसा क्यों करता हूँ मैं। हाँ ये ठीक है कि मैं रिटायर हो चुका

हूँ। सेहत भी अच्छी नहीं रहती और फिर श्वेता की शादी करनी है। मगर इस सब के कारण मैं राहुल को कैसे रोक सकता हूँ, उसका करियर बनाने से। आखिर मुझे इस जैनरेशन गैप को समझना चाहिए। मुझे राहुल का करियर बनाने में सहायक होना चाहिए रुकावट नहीं।

पुत्र का स्वगत।

पिछले हफ़्ते भी जब पापा से बात की थी तो झगड़ा हो गया था। और आज फिर हम दोनों उलझ पड़े। मैं जानता हूँ कि वो मेरा बुरा नहीं चाहते पर उनकी सोच पुरानी है। वो अपने युग के दृष्टि को इस युग के दृष्टि में अप्लाई करने की कोशिश करते है। इसलिए मेरे आइडियाज उन्हें समझ में नहीं आते। मैं जानता हूँ वे रिटायर हो चुके हैं। श्वेता की शादी की ज़िम्मेदारी भी है उनके ऊपर। इसलिए वो कभी-कभी अपना सेल्फ कंट्रोल खो देते हैं। और पता नहीं क्यों मैं भी शांति से कभी अपनी बात उन्हें समझा ही नहीं पाता। शायद यही जैनरेशन गैप है। लेकिन मैं इतना भी सेलफ़िश नहीं हूँ कि अपने एमबीशन के लिए पापा का बोझ बढ़ाऊँ। मुझे उनसे आराम से बात करनी चाहिए। और अगर वो गुस्सा होते भी हैं तो भी मुझे चुप रहकर सब बर्दाश्त कर लेना चाहिए। आख़िर वो मेरे पापा हैं।

सूत्रधार : सभ्यता के शुरुआत से ही पिता-पुत्र के रिश्तों में जटिलताएँ और मुश्किलें देखी गयी और हर युग में अलग-अलग ढंग से लोगों ने इसे सुलझाने की कोशिश भी की।

हर पुत्र शुरु में अपने पिता से अभिभूत होता हैं, प्रभावित होता है लेकिन धीरे-धीरे वह प्रभाव कम होता जाता है और यहाँ तक कि एक वक्त ऐसा आता हैं जब पुत्र अपने पिता की सिर्फ़ कमज़ोरियाँ और ग़लतियाँ ही देख पाता है। यह वक़्त नाज़ुक होता है और ऐसे में दोनों के रिश्तों की खाई बढ़ती जाती हैं। उसी समय कुछ करना आवश्यक होता है। पिता भी इस बात से नाराज़ और ख़फ़ा रहते हैं कि उसका पुत्र न तो उसकी बात मानता है और न उसके विचारों को समझ पा रहा है। इस समय दो पीढ़ी में मौजूद दूरी भी अपना काम कर रही होती है।

अभिनय का थोड़ा प्रयोग करने से एक-दूसरे को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

(पापा मंच पर बैठे हैं। बेटा आता है।)

पुत्र : पापा मैं आपके लिए समोसे लाया हूँ। (पापा को देता है।)

पिता : (समोसे खाते हुए) अरे समोसे। बीस साल से वही क्वालिटी बिना लहसुन प्याज के शुद्ध देशी घी में बने। तुम भी खाओ।

पुत्र : जी मैं खाकर आया हूँ।

पिता : तुम्हारी फिल्म कैसी रही?

पुत्र : जी बहुत अच्छी।

पिता : तुम्हारे लोन का क्या हुआ?

पुत्र : सेक्शन हो गया है। अगले हफ़्ते तक मिल जाएगा। पापा, आई एम वेरी-वेरी सॉरी। प्लीज़, मुझे माफ़ कर दीजिए। मुझे ऐसे बात नहीं करना चाहिए था।

पिता : इट्स ओके! ग़लती मेरी भी थी। मुझे समझना चाहिए था कि तुम अपने दिल की बात मुझसे नहीं करोगे तो किससे करोगे।

पुत्र : थैंक्स पापा, आई लव यू। (पिता के गले लगता है।)

पिता : अच्छा सुनो, एम.बी.ए. करना है तो आई.टी.एम. से करो, ये...

पुत्र : ओ...पापा, मैंने आई.टी.एम. से ही तो फार्म भरा है।

पिता : चलो अच्छा है, यानी कि हमारे ख़यालात मिलते भी हैं। (दोनों हँसते हैं।)

पुत्र : अच्छा पापा आज मैं आपको फिल्म दिखाने ले चलता हूँ।

पिता : अरे...नहीं-नहीं बेटा, नहीं।

पुत्र : पापा आज आप टिकट बुक कीजिए। (सिनेमैक्स को फोन लगाता है।)

पिता : हेलो....सिनेमैक्स! आज के शो के दो टिकट्स मिलेंगे। ....कौन-सी फिल्म? ...थ्री इडियट। ...अरे....कॉर्नर सीट नहीं....मैं अपने बेटे के साथ आ रहा हूँ।

हाँ...हाँ... ओ.के...थैंक्स...चलो बेटा जल्दी चलो फिल्म का टाइम हो रहा है। (प्रकाश बन्द होता है।)

दृश्य-10

(प्रकाश आता है।)

सूत्रधार : माँ-बेटे के संबंध में क्या कहा जाए? माँ और बेटे के रिश्ते को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने बहुत कुछ कहा है। Oedipus Complex की बात शायद आप सब ने सुनी हो। बेटे के माध्यम से शासन करने की इच्छा हर माँ की होती हैं और इसमें बहू की भूमिका शामिल हो जाती है। दोनों स्त्रियों के बीच में बेटा ऐसे पिस जाता है जैसे चक्की के दो पाटों में आटा। उसके लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और अक्सर वह उलझ कर रह जाता है कि एक को ख़ुश करने से दूसरा नाख़ुश हो जाता है और दोनों उसका साथ दें इसकी सारी कोशिशें बेकार हो जाती है।

ऐसे में यदि अभिनय की शक्ति पर भरोसा करें तो काम आसान हो सकता है। अभिनय की रचनात्मक प्रक्रिया से हम अपने जीवन को थोड़ा बेहतर बना सकें, यही प्रयोजन है अभिनय-योग का।

माँ-बेटे का दृश्य

बेटा : अरे माँ कहाँ जा रही हो तुम?

माँ : बेटा मैं जा रही हूँ। मेरी कोई इज़्ज़त नहीं है इस घर में। तुम्हारी बीवी के पास तो मेरे लिए समय ही नहीं है। जब देखो मोबाइल पे लगी रहती है। कमरे में बैठी घंटों टी.वी. देखती रहती है। इस घर की मालकिन नहीं नौकरानी बना के रख दिया है मुझे। मैं तो जा रही हूँ तेरे बड़े भाई के पास कानपुर, वैसे भी मेरा मुम्बई में मन नहीं लगता।

बेटा : तो आख़िर तुम क्या चाहती हो? मैं उससे कई बार कह चुका हूँ कि वो आपसे मिले, आपके साथ वक़्त बिताए पर वो सुनती नहीं तो मैं क्या करूँ? आप अपनी तरफ़ से भी तो कुछ कोशिश कर सकती हो।

माँ : तुम तो ख़ुद उसके गुलाम बन गये हो। वह भी समझती है कि वो भी कमाती है और शायद तुमसे ज्यादा ही कमाती है...तो फिर क्यों

किसी की सूनूँ। तुम्हारी तो उसके सामने जुबान बन्द हो जाती है इसलिए उसे किसी का डर है ही नहीं।

बेटा : तो क्या मैं रवीना से कह दूँ कि नौकरी छोड़ दो और घर पे बैठी रहो और सास की सेवा करो। माँ आज के समय में दोनों को (पति-पत्नी) कमाना ज़रूरी है।

माँ : मैं भी कभी बहू थी। रात में घंटों भर सास के पाँव दबाती थी। और तुम्हारी पत्नी तो घर आते ही अपने कमरे में घुस जाती है, उसके बाद मोबाइल पे लग जाती है, होटल से खाना मँगाती है और खुद ही खा जाती है। मैं मरूँ या जिऊँ इससे कोई मतलब नहीं।

बेटा : माँ, आपको पता नहीं ऑफिस के काम में स्ट्रेस बहुत होता है फिर घर लौटकर खाना बनाने का मन नहीं करता। फिर आपको क्यों परेशान करे? सो होटल से खाना मँगा लेती है, वैसे आप तो बाहर का खाना खाती भी नहीं हैं।

माँ : तुम तो उसी की तरफ़दारी करोगे न। अब परसों की ही बात ले लो, तुम्हारी मौसी आई थी, तीन घंटे के लिए यहाँ बैठी। तुम्हारी महारानी पाँच मिनट के लिए यहाँ बैठी रही फिर अन्दर चली गई। उससे इतना भी न बना कि चाय ही बनाकर पिला दें।

बेटा : क्या माँ इतनी सी बात....पहले भी तो आप करती ही थी।

माँ : अच्छा! तो फिर उस दिन उसका भाई जब आया था तो चाय ही नहीं बनाया, बल्कि ऑफिस से हाफ डे की छुट्टी लेकर खाना भी पकाया। अपने रिश्तेदारों की ख़ातिरदारी तो करती है पर जब हमारे रिश्तेदार आते है तो साँप सूंघ जाता है।

बेटा : माँ....आप क्यों चाहती हैं कि वो एक बाई की तरह काम करे...जब उसका मन होगा वो बनाएगी।

माँ : उसका मन काम करने का होता कब है? और जो थोड़ा बहुत करता भी है तो तू उसकी मदद कर देता है। कपड़े वॉशिंग मशीन में धोती है लेकिन आधा काम तू कर देता है। जब खाना बनाने किचन में जाती है तो साग-सब्ज़ी तू काट के दे देता है...हम अपने ज़माने में दस-दस लोगों का खाना बनाते थे रोज़ और तीन लोगों

का खाना बनाने में उसकी जान जाती है।

बेटा : माँ, आज के ज़माने में औरत और मर्द को गृहस्थी की गाड़ी कन्धे से कन्धा मिलाकर खींचनी पड़ती है। वो दिन लग गये जब घरों में बीवियों से नौकरानियों का काम लिया जाता था।

माँ : तो क्या तुम्हारे इस ज़माने में सास से नौकरानी का काम लिया जाएगा?

बेटा : क्या कह रही हो माँ।

माँ : देर रात तक तुम लोग डीवीडी पर फिल्में देखते हो न! सुबह जब वो ऑफिस के लिए जाती है तो ऐसे मेज पर डीवीड को पटक के जाती है ऐसे (हाथ से इशारे करते हुए दिखाती है।) खुद क्यों नहीं दे आती, तो क्या मुझे नौकरानी समझा है उसने। दो-दो दिन तक तुम्हारे कमरे में कॉफी के मग पड़े रहते है, इतनी भी अकल नहीं कि धो ले, मुझे धोना पड़ता है।

(तभी वहाँ रवीना आती है और ताली बजाते हुए कहती है।)

रवीना : वाह! बहुत अच्छे। मुझे नहीं पता था कि मेरी तारीफ़ में इतनी बातें हो रही है।

माँ : तुझे किसने यहाँ बुलाया, तू यहाँ क्यों आई?

रवीना : मैं भी तो सूनूँ कि माँ-बेटे में क्या बातें हो रही है।

बेटा : रवीना तुम अपने कमरे में जाओ, तुम माँ-बेटे के मामले में दखल न दो।

रवीना : मामला सिर्फ़ माँ-बेटे का नहीं है....अब घर का मामला है...मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि बाहर और घर का काम एक साथ नहीं कर सकती। मैं भी इंसान हूँ। क्या-क्या करूँ? और अगर उसपे जब माँ को करना पड़ता है तो इतनी बातें सुनाती हैं। इसलिए कहा था एक बाई रख लो। हम दोनों कमाते हैं। एक बाई तो अफ़ोर्ड कर ही सकते हैं।

माँ : देखा-देखा, किस तरह बातें बनाकर मुझे ग़लत ठहरा रही है?

बेटा : माँ वो बस बाई रखने की बात कर रही है।

माँ : तू भी उसी का पक्ष ले रहा है। मेरा अपमान कर रहा है। हाय! देखो कैसे बीवी के सामने माँ का अपमान कर रहा है।

बेटा : अरे माँ...सुनो तो!

माँ : नहीं नहीं....मुझे और कुछ नहीं सुनना।

बेटा : माँ, तुम हमें ग़लत समझ रही हो।

माँ : बस...अब तू मुझे कानपुर भेज दे।

बेटा : माँ यह क्या कह रही हो?

माँ : मुझे यहाँ कोई नहीं समझता, मुझे अब यहाँ से जाना है। यहाँ से चली जाऊँगी तो तुम दोनों को शांति मिल जाएगी। (रोने लगती है) वैसे मेरी ज़रूरत यहाँ है भी क्या? (चली जाती है।)

बेटा : अरे सुनो तो! माँ.... (रवीना को) देखा। माँ का दिल दुखा दिया।

रवीना : माँ का दिल नहीं एक औरत का दिल।

बेटा : मतलब?

रवीना : अभी थोड़ी देर पहले जो बात कर रहीं थीं कि वो एक माँ नहीं एक औरत थी....जो अपने प्यार को छिनता हुआ देख कर जल उठी थी। जब तक मैं नहीं आई थी तब तक तुम्हारे हर चीज़ पर उनका हक़ था, मगर मेरे आने के बाद उनका हक़ कम होता जा रहा है और इस बात की पीड़ा है उन्हें।

बेटा : अगर ऐसा होता तो वो मेरी शादी ही नहीं करवातीं।

रवीना : हर माँ को अपने बेटे की शादी करवानी ही पड़ती है। यह एक सामाजिक दबाव है। बेटे की शादी कराके वो घर में एक नई स्त्री लाती तो है लेकिन शासन करने के इरादे से। अगर उसे शासन करने को नहीं मिलता तो वो बेचैन हो जाती है और इस हद तक जा सकती है कि अपने बेटे की शादी को तुड़वा दें।

बेटा : तुम तो मेरी माँ को ही सीधा-सीधा ग़लत ठहरा रही हो।

रवीना : माँ का अपने बेटे से आध्यात्मिक प्रेम होता है यह बात सब समझते है। मगर उस प्रेम में ही ईर्ष्या पैदा हो जाती है जब उस बेटे के जीवन में एक स्त्री आती है। बेटे को कुछ कहती नहीं है मगर सारा

आक्रोश उस स्त्री पर निकालती है।

बेटा : तो तुम्हारे कहने का मतलब जब तक स्त्री माँ है वो अच्छी है मगर सास बनते ही बिगड़ जाती है?

रवीना : जितनी भी दयालु और सहनशील स्त्री क्यों न हो सास बनते ही हिटलर बन जाती है। मैंने तो तय कर लिया है, बेटा बड़ा हो जाए, पैरों पर खड़ा हो जाए, शादी करे और अपने अलग घर में रहे।

(यह कह कर वो चली जाती है और बेटा आवाज़ देते हुए पीछे-पीछे जाता है। प्रकाश जाता है, अगला दृश्य तीन अलग-अलग स्थानों पर स्पॉट लाइट पर।)

माँ का स्वगत

जाने क्यों? इतनी सारी बातें उसे सुना डाली। बेचारा ऑफिस से थका हारा आया था और मैंने उसे ख़्वअमख़्वअह और परेशान कर डाला। पर मैं भी क्या करूँ। इतने दिनों से मेरे मन में भी यह बातें घूम रही थी। अपने बेटे से न कहूँ तो और किससे कहूँ। बहू मेरी बात सुनती कहाँ है? उसे भी तो यह समझ में आना चाहिए कि मेरे साथ यह क्या हो रहा है। आख़िर घर की बड़ी मैं ही तो हूँ। पर शायद मैं कुछ ज़्यादा ही बोल गई। यह सच है कि बेटा मेरा है, मेरी कोख से जन्मा है पर गृहस्थी तो उसे अपनी स्त्री के साथ ही चलानी है। उसकी तो सुननी पड़ेगी उसे। दोनों में प्रेम होगा तभी तो घर गृहस्थी ठीक से चल पाएगी। शायद मैं ही उन्हें समझ नहीं पाई और हमेशा ताने देती रही। पर मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूँगी। (प्रकाश बन्द हो जाता है और दूसरा जलता है।)

रवीना का स्वगत।

शायद मैंने भी कुछ ज़्यादा ही बोल दिया है पर मैं क्या करूँ? पढ़ी-लिखी हूँ, अपना खर्च ख़ुद उठाती हूँ। माँ की एक ही बात बार-बार सुनकर मैं परेशान हो गई हूँ। अपना गुस्सा न निकालूँ तो मैं बीमार पड़ जाऊँ। पूरे दिन ऑफिस की भाग-दौड़, काम की चिक-चिक से परेशान हो जाती हूँ और जब थकी हुई घर आती हूँ तो घर के मसले अलग। क्या करूँ? कई बार ऐसा लगता है कि इन्हें बहू नहीं बल्कि नौकरानी चाहिए। लेकिन शायद मुझे अपने घर और ऑफिस को अलग रखना चाहिए। माँ अगर पुराने ख़्यालों की है तो मैं तो पढ़ी-लिखी हूँ। कम

से कम मुझे तो समझना चाहए कि जो मेरा पति है वो उनका बेटा भी है। बेटे पर माँ का अधिकार है ही। शादी के बाद उनका अधिकार कम हो रहा है, इसलिए वो मुझ पर चिढ़ रही हैं। अगर मेरी सेवा से वो ख़ुश रहती हैं तो मुझे थोड़ी बहुत सेवा कर लेनी चाहिए। मुझे समझ में आ गया है कि जैसे भी हो मुझे अपने घर को तोड़ना नहीं है। इसके लिए मुझे जो भी करना पड़े मैं करूँगी, अपने रिश्ते को सुधारने के लिए थोड़ी बहुत एक्टिंग भी करनी है तो करूँगी।

(प्रकाश बन्द होता है और तीसरा जलता है।)

बेटे का स्वगत।

हे भगवान! मैं क्या करूँ? कुछ समझ नहीं आ रहा है। कैसे गृहस्थ जीवन में फँस कर पिसता जा रहा हूँ मैं। एक तरफ़ मुझे जन्म देने वाली मेरी माँ और दूसरी तरफ़ मेरी जीवन संगिनी। मैं यह नहीं कहता कि मेरी माँ ग़लत है, वो जिस ज़माने की है, उस ज़माने में लड़कियाँ ऐसी ही हुआ करतीं थीं। माँ की सोच अपनी जगह ठीक है। पर इसका मतलब यह नहीं है कि रवीना ग़लत है। आज के समय की लड़की है, पढ़ी-लिखी और अपने पैरों पर खड़ी और मेरे साथ जॉब करने वाली लड़कियाँ भी तो ऐसे ही हैं और मैं भी तो ऐसे ही लड़कियों के साथ स्कूल, कॉलेज में पढ़ा हूँ।

समझ में नहीं आ रहा मैं क्या करूँ? जब माँ का साथ देता हूँ तो रवीना मुझसे कहती है 'मम्माज़ू बॉय' और जब रवीना का साथ देता हूँ तो माँ कहती है 'ज़ोरू का ग़ुलाम'।

(अब दोनों तरफ से माँ और रवीना आती है और 'मम्माज़ू बॉय' / ज़ोरू का गुलाम बोलते रहते हैं।)

बस...बस...बस। यह दोनों तो कुछ करेंगे नहीं, अब मुझे ही कुछ करना होगा।

(तीनों स्पाट लाइट ऑन होती है और सूत्रधार बारी-बारी तीनों के पास जाकर अपनी बात कहता है।)

सूत्रधार : मन के विकारों को दूर करने में अभिनय सहायक हो सकता है।

अभिनय का असर मानसिक जगत् पर शब्द और भाव से पड़ता है। यदि हम शब्द और भावों का उपयोग एक विशेष ढंग से करे तो मानसिक और भावनात्मक जगत में परिवर्तन ला सकते हैं और अपने अन्दर की नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक बना सकते हैं।

अब इस रिश्ते में दोनों माँ और पत्नी का मन ईष्या से ग्रस्त हुआ है जिसके कारण परिवार में तनाव हो रहा है। पुत्र, परेशान और चिंता का शिकार है और दोनों स्त्रियाँ ईर्ष्या की। अब अभिनय इनमें कैसे सहायक सिद्ध हो सकता है? (ये बातें करते हुए सूत्रधार बारी-बारी से तीनों पात्रों के पास घूम-घूम कर अपनी बात कहता है।)

सूत्रधार : अँधेरे से कभी सीधे लड़ाई नहीं की जाती। घने अँधेरे में भी यदि छोटा सा दीप जला दो तो वह रौशनी आगे चलने में सहायक होती है। ईर्ष्या से भी सीधे युद्ध करना बेकार है। मैत्री, प्रेम और सहिष्णुता के दीप जलाने होंगे। इन भावों को शब्द देकर विचार के जगत में परिवर्तन लाना होगा। विचार सघन हो तो भाव बन सकते हैं और फिर उन भावों की मज़बूती आपके कर्म जगत में एक स्थायी परिवर्तन ला सकती है। इस परिवार में फिर से माधूर्य लाने के लिए अभिनय करना होगा, तभी गृहस्थी की गाड़ी सुचारू ढंग से चलेगी।

(बात करते-करते बेटे के पास आता है और उसके कान में कुछ कहता है। म्यूज़िक के दौरान यह दृश्य चलता है और बेटे की आँखों में चमक आती है। वह घूमता हुआ मंच के दूसरे भाग में जाता है।)

स्त्री : आ गए माँ के कमरे से। सुन ली सारी शिक़ायतें।

बेटा : अरे! रवीना तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि माँ ने आज कमाल कर दिया।

स्त्री : हाँ कमाल की शिकायत तो करती ही हैं तुम्हारी माँ।

बेटा : यही तो कमाल की बात है, आज वह शिकायत नहीं कर रही थीं,

बल्कि यह कह रही थीं कि अगर रवीना को टी.वी. देखना है तो शौक से देखे।

स्त्री : माँ ऐसा कह रही थी ? तुम सच कह रहे हो ?

बेटा : अरे वो तो यह भी कह रही थी कि बहू दिन भर की थकी होती है, तो क्या हो गया जो वो देर से उठती है। आज से सुबह की चाय मैं ही बना दिया करूँगी। उसे आराम करने दिया करो।

स्त्री : अच्छा। अगर वो ऐसा कह रही हैं तो मैं भी उठ जाया करूँगी, वैसे सुबह की चाय बनाने में देर ही कितनी लगती है।

बेटा : और पता है कह रही थी कि तुम उनके साथ बैठ कर समय की कमी के कारण बात-चीत नहीं कर पाती हो, तो कोई बात नहीं, उन्होंने इसका रास्ता खोज लिया है। वह अब ज़्यादा से ज़्यादा समय ध्यान करेंगी, ईश्वर में मन लगायेंगी।

स्त्री : सच। मेरे बात न करने से उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी ?

बेटा : हाँ। सच में।

स्त्री : चलो क्या फ़र्क पड़ता है। मैं भी कुछ देर बैठ कर उनके साथ यहाँ-वहाँ की बातें कर लिया करूँगी। वह भी ख़ुश हो जायेंगी।

बेटा : एक बात और उन्होंने कमाल की कह दी, वो बाई रखने के लिए तैयार हो गई। कह रही थी कि खाना बनाने को लेकर जो झगड़े होते है वह ख़त्म हो जायेंगे।

(थोड़ी देर के लिए रवीना सोच में पड़ जाती है फिर एका-एक कहती है।)

रवीना : कहीं तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे हो ?

बेटा : नहीं-नहीं मैं सच बोल रहा हूँ, क्यों क्या हुआ ?

रवीना : नहीं कुछ नहीं, मैं सोच रही थी कि खाना ख़ुद ही बना लिया करूँगी, दाल-चावल चढ़ाने में वक्त ही कितना लगता है। वह तो समय की कमी की वजह से बना नहीं पाती वरना खाना बनाना तो मेरा शौक है।

बेटा : सच। तुम यह दिल से कह रही हो?

रवीना : तुम्हें यक़ीन नहीं हो रहा है न, मैं अभी खाना बनाती हूँ। बोलो क्या खाओगे?

बेटा : मैं...मैं. हाँ दाल बाटी और थेपला और हाँ साथ में ढ़ोकला भी।

रवीना : मैं यह सब नहीं बनाऊँगी, मैं तो माँ की पसन्द का लौकी पड़ी हुई दाल, साथ में सब्ज़ी, दही का रायता और पापड़ बनाऊँगी।

बेटा : रोटी भी बनाना।

रवीना : हाँ, साथ में चावल भी बना दूँगी, ठीक है न? और हाँ एक बात और अब हम माँ की समय पर सेवा भी किया करेंगे, तभी तो हमारे बच्चे हमारी सेवा करेंगे, हमारा कहना मानेंगे, ठीक है न? अब तुम माँ के पास जाकर बैठो, उन्हें अकेले रहना पसन्द नहीं, तब तक मैं भी खाना बना लेती हूँ फिर सब साथ बैठ कर खायेंगे।

बेटा : (मुस्कुराता है) हाँ, सच कहा तुमने, मैं माँ के पास जाता हूँ।

(बेटा माँ को पुकारते हुए मंच से निकल जाता है, प्रकाश बन्द हो जाता है।)

(प्रकाश आता है।)

बेटा : माँ। कहाँ हो तुम माँ?

माँ : क्या बात है? क्यों चिल्ला रहे हो? यहाँ क्यों आ गया? जा बैठ अपनी बीवी के पास।

बेटा : अब मैं अकेले वहाँ क्या करता सो आ गया तुम्हारे साथ वक़्त बिताने।

माँ : क्यों? बहू क्या कर रही है?

बेटा : अरे। तुम्हें नहीं पता। रवीना खाना पका रही है, वह भी तुम्हारे पसन्द का।

माँ : क्या बात कर रहे हो? मुझे तो यक़ीन नहीं हो रहा है।

बेटा : हाँ, माँ अभी देख लेना।

रवीना : खाना तैयार है।

(प्रकाश क्रमशः धीरे-धीरे बन्द होता है और फिर प्रकाश आता है और हम देखते है कि तीनों खाना खा रहे हैं।)

बेटा : अरे खाना बहुत ही सादा बना है रवीना।

रवीना : (माँ के पास प्यार करके बोलती हुई) खाना तुम्हारी पसन्द का नहीं माँ की पसन्द का बनाया है समझे जी।

माँ : देखा बेटा मैं कहती थी न मेरी बहू लाखों में एक है।

(सब हँसने लगते हैं।)
(प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है)

दृश्य-11

(प्रकाश आता है।)

सूत्रधार : आज की इस भोगवादी संस्कृति ने एक ऐसे रिश्ते को जन्म दिया है जिसमें न केवल अनेक जटिलताएँ मौजूद है बल्कि तनाव और द्वंद भी पूरी-पूरी मात्रा में है। पहले ये रिश्ते बड़े शहरों तक ही सीमित थे और विवाह से पहले तक ही इसकी सार्थकता थी, किन्तु अब ये तेज़ी से छोटे शहरों और क़स्बों तक पहुँच चुका है तथा विवाह के बाद भी और किसी भी उम्र के बंधन को माने बगैर अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुका है। इस रिश्ते के बग़ैर बहुत से लोगों का जीवन सूना हो सकता है और यहाँ तक कहा जा सकता है कि कई वैवाहिक संबंधों को बनाए रखने में इस रिश्ते का बड़ा योगदान है।

मैं इशारा कर रहा हू गर्लफ्रेंड, बॉयफ्रेंड के रिश्ते की ओर जिसमें लोगों की रूचि अब पहले से अधिक हो गई है। अब ज़्यादातर लड़के-लड़कियाँ जल्दी या छोटी उम्र में शादी नहीं करना चाहते और चूँकि लम्बे समय तक किसी प्रेम संबंध के बिना रहना कठिन है इसलिए ये युवा वर्ग में एक अनिवार्यता सी बन गई है। 25 वर्ष के लड़के की कोई गर्लफ्रेंड न हो तो अपनी मित्र मंडली में वो अपना सम्मान और स्थान दोनों खो बैठता है। यही हाल लड़कियों का भी है। मोबाइल फोन की तरह गर्लफ्रेंड या बॉयफ्रेंड बदलना एक फैशन-सा हो गया है।

विवाहित लोगों में भी ये एक सामान्य सी बात हो गई है। पाँच-छ: वर्ष की उबाऊ दाम्पत्य जीवन के बाद पति को किसी गर्लफ्रेंड और पत्नी को किसी बॉयफ्रेंड की जरूरत पड़ ही जाती है जिसकी वजह से उनकी काम ऊर्जा सक्रिय बनी रहती है। तनाव ग्रस्त जीवन से जुझने के लिए वैसे भी सेक्स एक औषधि की तरह काम करता है। ये बात प्राय: सभी का मानना है।

भले ही इस रिश्ते को कानून और धर्म की स्वीकृति नहीं मिली है जिस वजह से ये अभी भी परदे के अन्दर है किन्तु इससे जुड़े द्वंद्व और तनाव स्पष्ट दिखते और अपना असर छोड़ जाते हैं।

आइए एक ऐसे ही गर्लफ्रेंड, बॉयफ्रेंड रिश्ते के अन्दर मौजूद तनाव को देखते हैं।

प्रेमी-प्रेमिका या गर्लफ्रेंड-बॉयफ्रेंड का दृश्य :

(बॉयफ्रेंड अपने घर में बैठा है और उसका मोबाईल बजता है।)

बॉयफ्रेंड: हाँ। बोलो।

गर्लफ्रेंड : (आवाज़) बोलो क्या? दरवाज़ा खोलो।

बॉयफ्रेंड: मतलब?

गर्लफ्रेंड : मतलब ढूँढते रहना बाद में। दरवाज़ा खोलो। बाहर खड़ी हूँ। (बॉयफ्रेंड दरवाज़ा खोलता है और दनदनाती हुई गर्लफ्रेंड अन्दर आती है।)

गर्लफ्रेंड : तो ये हो रही है तुम्हारी मीटिंग। ज़रूरी काम में बिज़ी। मेरा फोन उठाने तक की फ़ुर्सत नहीं और न ही एस.एम.एस. का जवाब देने के लिए टाइम।

बॉयफ्रेंड: वो। सब अभी-अभी चले गए। हम लोग आज सुबह 8 बजे से ही बैठे हैं।

गर्लफ्रेंड : और मेरे आने के जस्ट पहले ही सब चले गए। बेवकूफ़ किसे बना रहे हो तुम? साफ़ देख रही हूँ, पिछले 2 हफ़्ते से तुम मुझे अवॉयड कर रहे हो। कभी मीटिंग का बहाना तो कभी काम का बहाना, कभी दोस्तों के साथ पार्टी या फिर अपने बॉस के साथ

क्लाइंट से मिलना। सबके लिए टाइम है। एक मैं ही हूँ फालतू। बेकार। जिसकी कोई कद्र नहीं। कोई रेस्पेक्ट नहीं।

बॉयफ्रेंड: ग़लत सोच रही हो तुम। पिछले दिनों से ज़्यादा बिजी हो गया हूँ मैं। काम कर रहा हूँ। तुमको समझना होगा कि अगर काम में बिज़ी हूँ तो....

गर्लफ्रेंड : काम में बिज़ी मैं भी रहती हूँ। मेरी भी कम से कम 12 घंटे की ड्यूटी हो ही जाती है। फिर भी मैं फोन करती हूँ। एस.एम.एस. पर पूछती रहती हूँ। तुमको तो वो भी बुरा लगता है।

बॉयफ्रेंड: हाँ। तो इतना क्यों पूछती रहती हो? खाना खाया? पानी पिया? अब क्या कर रहे हो? कहाँ जा रहे हो? ऑफिस में और कौन है? घर में और कौन है? पुलिस कमिश्नर की तरह वही घिसे-पीटे सवाल...।

गर्लफ्रेंड : हाँ, मैं पूछूँगी और पूछती रहूँगी। और तुमको बताना भी पड़ेगा। और ऐसी कौन सी नानी मर जाती है तुम्हारी, पूछने में....।

बॉयफ्रेंड: अरे! रोज वही सवाल? पिछले एक महीने से वही एक ही बात। कुछ तो आगे बढ़ो अब। तुम इतना पीछे पड़ जाती हो कि काम पर ध्यान लगाना मुश्किल हो जाता है।

गर्लफ्रेंड : काम पर ध्यान लगाने या फिर दूसरी लड़कियों से फ्लर्ट करने में। तुम्हारे दोस्त दीपक ने बताया मुझे कि परसों फिल्म देखने, वो नेहा भी तुम लोगों के साथ थी।

बॉयफ्रेंड: तो? सबकी फ्रेंड है वो। अकेले मेरे साथ नहीं गई फिल्म देखने वो। तुमसे कहा था साथ चलने को तो तुम्हारे ऑफिस में मीटिंग निकल आई। चलना चाहिए था न साथ, तो ये शिकायत ही नहीं होती।

गर्लफ्रेंड : तुमने जानबूझकर 6 बजे की शो की टिकटें खरीदी। तुमको मालूम था कि शाम को मेरी एक मीटिंग है। तुम नहीं चाहते थे कि मैं साथ आऊँ। मैं आती तो नेहा के साथ मस्ती कैसे होती।

बॉयफ्रेंड: तुम भी न। बहुत शक करने लगी हो आजकल। ट्रस्ट नाम की भी कोई चीज़ होती है या भूल गई।

गर्लफ्रेंड : हाँ, ट्रस्ट नाम की चीज़ होती है लेकिन ब्लाईंड ट्रस्ट नहीं। तुम बस

पंद्रह दिन में एक बार, दो-चार घंटों के लिए मिलो और उसके बाद ग़ायब हो जाओ। छः बार फ़ोन करो तब उठाओ। जो पूछती हूँ उसका सीधा मुँह जवाब न दो और बात-बात पर गुस्सा हो जाओ। शक तो होगा न। मेरी फीलिंग्स की कोई कद्र नहीं है क्या? मैं पागलों की तरह तुम्हारे बारे में सोचती रहूँ। तुम्हारी फ्रिक करती रहूँ कि उसने खाना खाया या नहीं, पता नहीं तबीयत खराब तो नहीं। लेकिन महाशय को तो पड़ी ही नहीं। मेरा पूछना अब परेशान करने लगा है तुम्हें। तुम भागना चाहते हो मुझसे। (रोती है।) दूर जाना चाहते हो तो साफ़-साफ़ बताओ न कि अब हो गया, मन भर गया मुझसे। अब कोई प्यार-व्यार है नहीं। दूसरी चाहिए तुम्हें।

बॉयफ्रेंड: हो गया रोना शुरु। आदत हो गई है तुम्हें ऐसे बार-बार मुझे परेशान करके खुद रोने की। मुझे ब्लैक मेल करने की। आख़िर चाहती क्या हो? मैं काम नहीं करूँ? (गुस्से में) बस! तुम्हारे फ़ोन और एस.एम.एस. का जवाब देता रहूँ? वही नौकरी कर लूँ? आई लव यू - आई लव यू करता रहूँ? तभी तुमको चैन मिलेगा। कई बार कह चुका हूँ कि काम में अगर बिज़ी हूँ तो ज़्यादा एस.एम.एस. या फ़ोन मुझे अच्छा नहीं लगता। अरे! भरी मीटिंग में सिरियस डिस्कशन चल रही हो तो तुम्हारे फ़ोन या एस.एम.एस. का जवाब कैसे दे सकता हूँ। सबकी नज़रें एक-दूसरे पर रहती हैं। अच्छा लगता है क्या?

गर्लफ्रेंड : तुमको सिर्फ़ अपने काम और नौकरी की परवाह है। मेरी कोई वैल्यू ही नहीं है तुम्हारी लाइफ़ में। मैं ही बेवकूफ़ की तरह अपना टाइम बर्बाद कर रही हूँ। (जाने लगती है।)

बॉयफ्रेंड: कहाँ जा रही हो? अरे! सुनो एक मिनट। बात तो सुनो। फिर वही तमाशा। रोज़-रोज़ का ड्रामा हो गया है।

सूत्रधार : स्त्री-पुरुष के बीच कैसा भी संबंध क्यों न हो, दोनों एक-दूसरे को समझने में असमर्थ ही होते हैं। कारण गहरे हैं और शायद प्रकृति ने दोनों को एक-दूसरे से अलग इसलिए बनाया है ताकि एक आकर्षण बना रहे और सृष्टि को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती रहे। सदियों

से इस दिशा में प्रयास हुए हैं कि कैसे दोनों एक–दूसरे के साथ समझौता करते हुए चलें पर समस्या अभी भी वैसी ही है। कुछ लोगों का मानना है कि दोनों रेल की दो समानांतर पटरियों के समान हैं जो साथ–साथ तो चलती हैं पर एक नहीं हो पाती। दोनों के विचार अलग, इच्छाऐं अलग और जीवन जीने की दृष्टि अलग।

(प्रकाश बंद होता है और बारी–बारी से दो अलग–अलग स्थान पर प्रकाश आता है।)

बॉयफ्रेंड: वह जब रो देती है तो मैं सोचने के लिए मज़बूर हो जाता हूँ। हालाँकि ये सच है कि मुझे कई बार ऐसा लगता है कि उसके रोने में सच्चाई नहीं है पर उसके चेहरे पर जो दु:ख और पीड़ा दिखती है वो अस्वीकार नहीं की जा सकती। मैं ये समझ नहीं पाता कि वो पीड़ित क्यों है? ये तो मानी हुई बात है कि हम दोनों एक–दूसरे के प्यार में हैं। पर रोज़–रोज़ प्यार का इज़हार करते रहना कहाँ की समझदारी है? शुरु के दिनों की बात अलग थी पर अब तो हम एक–दूसरे के हो गए हैं। ठीक है अलग–अलग घरों में रहते हैं पर मिलना तो है। तो फिर क्या है उसकी परेशानी? कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे ये लगता है कि मैं किसी और से भी इसी तरह जुड़ा हुआ हूँ? क्या ये असुरक्षा का भाव उसकी असली मुश्किल है? अगर हाँ। तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? क्या करना चाहिए मुझे?

गर्लफ्रेंड : नहीं मुझे उसका ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं। बात न हो, एक–दूसरे का ख़्याल रखने का भाव न हो तो फिर रखा क्या है इस रिश्ते में? जब दोनों की ज़िम्मेदारी है तो फिर वो एकदम से ख़ुद को दूर कैसे रख सकता है? माना कि रोज़ मैं उसे खाना बना कर खिला नहीं सकती पर पूछ तो सकती हूँ। उसमें मेरा अपनापन ही तो है। फोन पर थोड़ी–थोड़ी देर में बात करने में परेशानी क्या है? और एस.एम.एस. का ज़माना है, तो उसका उपयोग क्यों न हो? मेरे ज़्यादा पूछने से अगर उसे परेशानी होती है

तो थोड़ा कम कर सकती हूँ। हाँ कभी-कभी असुरक्षित महसूस करती हूँ। क्या करूँ? खुद की, संपूर्ण भावनाओं को जब उसे सौंप दिया है तो थोड़ी असुरक्षा तो होगी। वो अगर मेरी कोमल भावनाओं को नहीं समझे तो मेरे समर्पण का क्या मतलब?

(प्रकाश बंद होता है और धीरे-धीरे आता है। द्रष्टव्य होता है कि बॉयफ्रेंड मोबाइल पर बात कर रहा है। दोनों थोड़ा-थोड़ा अभिनय का प्रयोग कर रहे हैं।)

बॉयफ्रेंड: (फोन पर) हाँ बोलो।

गर्लफ्रेंड : (फोन पर) कुछ नहीं। तुम बिज़ी हो?

बॉयफ्रेंड: हाँ, पर बात कर सकते हैं। आज तो तुम्हारी छुट्टी है। कैसा जा रहा है दिन?

गर्लफ्रेंड : नॉट बैड। घर के छोटे-मोटे काम निपटा रही हूँ। तुमने कुछ खाया? सॉरी, जानती हूँ तुम्हें पूछना पसंद नहीं फिर भी....

बॉयफ्रेंड: तुम भी कैसी बात कर रही हो? सुबह दूध पिया था। अरे हाँ, कल सुबह जो तुमने एस.एम.एस. में टिप्स दिए थे वो बहुत काम आये मीटिंग में।

गर्लफ्रेंड : अच्छा? चलो जानकर खुशी हुई। देखो, मैं तुम्हारे कुछ काम तो आ ही सकती हूँ। अपना असिस्टेंट बना लो।

बॉयफ्रेंड: हा हा हा, असिस्टेंट बनते-बनते तुम मेरी बॉस बन जाओगी, इसका डर लगता है।

गर्लफ्रेंड : हा हा हा, तो फिर बॉस ही बना लो। साथ में असिस्टेंट बन जाऊँगी। जैसे तुम्हारी मर्ज़ी। जब जो जी चाहे समझ लेना।

बॉयफ्रेंड: हम्म! बात में दम है। कल तुमने एक बार भी फोन नहीं किया। क्या बात है? सब ठीक तो है?

गर्लफ्रेंड : हाँ, मैंने सोचा तुम्हें थोड़ी आज़ादी अच्छी लगती है, तो मैं भी कुछ तुमसे सीखूँ और देखूँ कि आज़ाद पंछी बनने में मज़ा है या नहीं।

बॉयफ्रेंड: तो क्या पाया? आज़ादी का उत्सव कैसे मनाया?

गर्लफ्रेंड : नहीं, बहुत मज़ा तो नहीं आया। शायद हमारी जाति बंधन में रहकर ही, वो सुख पाती है जो तुम्हारी जाति आज़ाद होकर, स्वच्छन्द रहकर ले पाती है।

बॉयफ्रेंड: ये तो है, लेकिन हमारी जाति भी ज़्यादा आज़ाद रहकर बोर हो जाती है। शायद थोड़ा बंधन थोड़ी आजादी, ऐसा हमारे स्वभाव को ठीक लगता है।

गर्लफ्रेंड : हम्म! बात में दम है। वैसे कल एक प्रयोग किया। जो-जो तुमसे कहना चाहती थी, तुम्हारी तस्वीर से कह दिया। कुछ तसल्ली तो हुई।

बॉयफ्रेंड: अरे वाह! ये अच्छा तरीका है। पर राज़ की बात कहूँ? तुमने तो अब ये तरीका ढूँढा है, मैं तो कब से इस पर अमल करता आया हूँ।

गर्लफ्रेंड : अच्छा! कहा नहीं।

बॉयफ्रेंड: तस्वीर से तो कहता था। अच्छा मेरी तस्वीर ने कुछ जवाब दिया?

गर्लफ्रेंड : हाँ! कुछ-कुछ। वो मुझे पुराने एस.एम.एस. में मिल गए।

बॉयफ्रेंड: हम्म! वेरी स्मार्ट। कल मैं भी काम में तो था पर आधा घंटे बाद नजर फोन पर जाती थी कि अब आय, अब आया, मैसेज।

गर्लफ्रेंड : तो मतलब मेरा इंतज़ार किया, मेरे मैसेज का।

बॉयफ्रेंड: बिल्कुल। हो कहाँ अभी?

गर्लफ्रेंड : तुम्हारे घर के दरवाज़े पर।

बॉयफ्रेंड: क्या?

(दरवाज़ा खोलता है और पिछले दृश्य के जैसे, गर्लफ्रेंड अन्दर आती है किन्तु दनदनाते हुए नहीं बल्कि सहज और सौम्य भाव से।)

बॉयफ्रेंड: तुम? तुम बाहर ही थी।

गर्लफ्रेंड : हाँ।

बॉयफ्रेंड: तो तुमने कहा क्यों नहीं? अन्दर क्यों नहीं आई?

गर्लफ्रेंड : तुम बुलाओगे तो आऊँगी।

(बॉयफ्रेंड उसका हाथ पकड़ लेता है और अपने करीब लाता है।)

बॉयफ्रेंड: बुला तो लिया मैंने।

गर्लफ्रेंड : तो आ भी तो गई मैं।

बॉयफ्रेंड: आई लव यू।

गर्लफ्रेंड : लव यू टू। मिस्ड यू।

बॉयफ्रेंड: मिस्ड यू।

(प्रकाश बंद होता है और फिर प्रकाश आता है।)

सूत्रधार : जी हाँ अभिनय में शक्ति है। हम इस प्रकार यदि अपने जीवन में अभिनय का प्रयोग करें तो निश्चित रूप से हम एक बेहतर मनुष्य बन सकते हैं। और यदि मुझसे पूछा जाए मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? तो मैं कहूँगा। एक बेहतर मनुष्य बनना। जो देव तुल्य है। और वो बग़ैर अपने भीतर मौजूद असुरों के संहार के बिना नहीं हो सकता। इस विराट ब्रह्मांड में देव-असुर का संग्राम निरंतर चल रहा है। हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस संग्राम की चुनौतियों को स्वीकार करना है। और उसमें विजयी होकर अपने मनुष्य होने की सार्थकता को सिद्ध करना है। तभी हम गर्व से और दृढ़तापूर्वक इस बात की घोषणा कर सकते हैं कि हाँ मैं मनुष्य हूँ। मैं मनुष्य हूँ। मैं मनुष्य हूँ।

(सभी कलाकार मंच पर आते हैं और एक स्वर में)

कोरस-

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्।

(प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होता है।)

बजने दो शहनाई....यार।

पात्र

मयंक : 33 वर्षीय युवक।

कामया : 22 वर्षीय लड़की। उच्च वर्ग की अधिक अंग्रेजी बोलने वाली, फिल्मी दुनिया में रूचि।

वानी : 24 वर्षीय मध्यवर्गीय लड़की।

हंसल : 21 वर्ष का लड़का। मयंक का छोटा भाई।

केतन पटेल : मयंक और हंसल का पिता।

श्रीमती पटेल : मयंक और हंसल की माँ।

अंक-1

समय : आज।

स्थान : मयंक का बैचलर अपार्टमेंट।

(पर्दा उठता है और कुछ आवाजें सुनायी देती हैं।)

कामया : नहीं मयंक।

मयंक : come on sweet-heart.

कामया : मयंक नहीं। (लिफ्ट के बंद होने की आवाज़ सुनाई देती है।)

कामया : मयंक कोई देख लेगा। तुम क्या कर रहे हो?

मयंक : बस, सिर्फ़ 5 मिनट के लिए चली आओ। एक-एक बीयर पीते हैं।

कामया : नहीं मयंक प्लीज़।

मयंक : प्लीज़ कामया, Please, just one last drink.

(अब हम देखते हैं कि मयंक पटेल, 33 वर्षीय युवक कामया के साथ घर के अन्दर दाख़िल होता है। कामया 22 साल की सुन्दर युवती, skirt, top और hat पहने, हाथ में बैग लिए मयंक के साथ अनमने भाव से आती है। मयंक उसका सामान हाथ में लेकर नीचे रखता है और पलंग पर बैठाने की कोशिश करता है।)

कामया : मयंक, प्लीज़, छोड़ो मुझे। मेरा मन नहीं है।

मयंक : पर तुम्हीं ने तो कहा था कि तुम्हें गर्मी लग रही है।

कामया : हाँ देखो ना। पसीने से कैसे भीग गई हूँ।

मयंक : तभी तो कह रहा हूँ कि एक-एक बीयर लेते हैं।

(दौड़ता हुआ फ्रिज की तरफ जाता है और बीयर की एक बोतल निकाल लेता है।)

कामया : मयंक, मैं ऊपर जाकर जल्दी से नहाना चाहती हूँ।

(फिर से अपना बैग उठाती है। मयंक तेज़ी से आकर बीयर उसके हाथ में थमाता है और बैग नीचे रख देता है। फिर बीयर की कुछ बूँदें उसके सिर पे डालता है।)

मयंक : ठंडे-ठंडे पानी से नहाने का मज़ा लेने से पहले ठंडी बीयर का मज़ा तो लो।

कामया : (हल्की सी झुंझलाहट के साथ) तुम पागल हो क्या? Cheapo. (मयंक अपने हाथ से उसे बीयर पिलाता है।)

मयंक : तुम्हें शायद पता नहीं कामया, तुम्हारी यही पसीने की गंध मुझे मतवाला बना देती है। (Kiss करने लगता है।)

कामया : छि: मयंक। क्या कर रहे हो? कितना चिप-चिप हो रहा है। (उठकर दूसरी जगह जाती है।)

मयंक : मत्स्यगंधा हो तुम। मत्स्यगंधा।

कामया : What?

मयंक : एक ऐसी मछली जो अपनी गंध से सबको अपनी ओर खींच लेती है। (फिर उसे पीछे से पकड़ लेता है और इस बार वो कुछ नहीं कहती।)

कामया : फिर?

मयंक : फिर उन्हें अपने जाल में फँसाकर, धीरे-धीरे उनका रस चूसने लगती है। (कहकर उसे फिर kiss करने लगता है और वो हटती है।)

कामया : कहाँ से सीखी तुमने ये सब बातें?

मयंक : अपने गुरु, वात्सायन से।

कामया : वात्सायन। Who is he?

मयंक : सभी मछलियों की गंध को पहचानने वाले बहुत बड़े गुरु। (कहकर फिर उसे पकड़ लेता है और दोनों थोड़ी देर एक-दूसरे की बाँहों में ही रहते हैं।)

कामया : ओह! (दोनों साथ-साथ बीयर भी पी रहे हैं।)

मयंक : अब लग रहा है कि हमारी वीक एंड (Weekend) की छुट्टियाँ पूरी हुई।

कामया : पूरे चार दिन रहे हम साथ-साथ।

मयंक : (उसे Kiss करते हुए।) कितनी hot और sensational हो ना तुम। कोई भी पुरुष तुम्हें पाने के लिए अपनी ज़िंदगी की बाज़ी लगा सकता है। तुम्हारी आँखों का नशा इस बीयर के नशे से भी ज़्यादा तेज़ है। तुम्हारा चेहरा सच में ऐसा है, जैसे किसी मूर्तिकार ने

तुम्हें गढ़ा हो। तुम्हारे हाथ एक पेंटर के हाथ हैं। तुम्हारे होंठ जैसे फूलों की पंखुड़ियाँ!

कामया : सच मयंक? तुम्हें लगता है कि मेरा असर ऐसा है?

मयंक : तुमने देखा नहीं। वहाँ resort में क्या हो रहा था? लोग एक नज़र तुम्हारी ओर देख रहे थे और फिर Pool में jump मार रहे थे। एक नज़र तुम्हारी और फिर Pool में छपाक। एक नज़र फिर छपाक... एक नज़र फिर छपाक.... एक नज़र फिर छपाक.... एक नज़र फिर छपाक... फिर छपाक.... फिर छपाक... (बोलते-बोलते उसकी गर्दन पर kiss करने लगता है।)

कामया : मयंक क्या करते हो तुम? क्यों इतनी ज़ोर से काटते हो? लगती है बाबा! It hurts.

मयंक : मेरे गुरु ने सिखाया है। (स्वतः) erotic zones! लड़की के erotic zone पर kiss करो। तो फिर वो हमेशा तुम्हारे पीछे-पीछे भागती है। (मयंक फिर से उसके गले की ओर बढ़ता है। kiss करता है और हँसते हुए कहता है।)

मयंक : love bites! Love bites!

कामया : (हँसते हुए प्यार से कहती है।) Kiss me!

(मयंक उसे kiss करता है।)

मयंक : Hmmmm........अभी तो ये अंगड़ाई है।

कामया : अब मुझे गर्मी नहीं लग रही। छुट्टियाँ बिताने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। सच में, We had a wonderful time.

मयंक : ya...ya....it was fun.

कामया : हालांकि, वो तो आया ही नहीं।

मयंक : कौन?

कामया : वो, B- TV के producer.

मंयक : ओह! वो.... mr Mirchandani. तुम्हें तो पता ही है ना, इन show-biz के लोगों का। कभी भी वक़्त के पाबंद नहीं होते।

कामया : ओह! अच्छा उस sms में क्या लिखा था?

मयंक : कौन सा sms? ओह हाँ.... उसका sms आया था। Next week वो वापस मुंबई आ रहा है।

कामया : कभी-कभी सोचती हूँ तो बहुत हैरानी होती है।

मयंक : किस बात से?

कामया : कि इतना बड़ा आदमी मुझसे होटल में मिलने आ रहा था।

मयंक : होटल नहीं वो resort है.... resort.

कामया : अच्छा resort. But it was nice. मैं तो कभी अलीबाग गयी ही नहीं।

मयंक : अलीबाग नहीं खंडाला।

कामया : ओह, मुझे तो नाम याद ही नहीं रहते। पर सच, इतना बड़ा आदमी इतनी दूर सिर्फ़ मुझसे ही मिलने आ रहा था। oh God! सिर्फ़ मुझसे मिलने।

मयंक : वो मैंने कहा ना, (झूठ बोलते हुए) कि उसकी अगली फिल्म जो है वो एक पहाड़ी लड़की की कहानी है। और मुंबई में तो पहाड़ है नहीं। कश्मीर, शिमला और मसूरी जाने में तो वक्त लगता है। तो जैसे ही मैंने उससे कहा कि हम खंडाला में हैं, तो खंडाला की पहाड़ियों के बीच में तुम कैसी दिखोगी वो ये देखना चाहता था। (बोलते-बोलते उसका साँस फूल जाता है।) इसलिए वो खंडाला तुमसे मिलने आ रहा था।

कामया : पक्का?

मयंक : एक दम पक्का।

कामया : कितनी ग़लत बात है ना, हम रूम से बाहर ही नहीं निकले वहाँ तो।

मयंक : वो इसलिए की बाहर बहुत तेज़ बारिश होने के आसार नज़र आ रहे थे न। और फिर हम उस प्रोड्यूसर का भी तो इंतज़ार कर रहे थे। (उसे फिर से Kiss करने लगता है।) खंडाला की पहाड़ियों में, भीगे कपड़े पहने, चारों ओर हरे-भरे पेड़ों के बीच में तुम कैसी लगती हो। (इंटरकॉम बजता है।)

कामया : hey, the intercom.

मयंक : (उसी धुन में) मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा।

कामया : हो सकता है ये मेरे लिए हो।

मयंक : तुम्हारे लिए? तुम तो 14वीं मंज़िल पर रहती हो न।

कामया : लेकिन अक्सर यहाँ पायी जाती हूँ।

(मयंक उठता है और फ़ोन उठाता है।)

मयंक : येस, कौन? हंसल...अरे भाई, तू यहाँ....अभी? ....आ जा अगर ज़रूरी है तो। तूने घर तो देखा है ना। (फ़ोन रखता है।) मेरा छोटा भाई है। (कामया से)

कामया : ओह! तो मैं चलती हूँ।

मयंक : (उसका हाथ पकड़ते हुए) अरे अभी कहाँ? ये तो सातवाँ फ्लोर है। पूरा एक मिनट लगेगा उसे।

कामया : (अपना बैग उठाते हुए) मैं जाती हूँ। और वैसे भी मुझे नहा कर चेन्ज करना है। (मुस्कुराते हुए कहती है) क्या तुम्हारा छोटा भाई काफ़ी देर तक रहेगा?

मयंक : नहीं। अगर तुम ऐसे पूछोगी तब तो बिल्कुल नहीं।

कामया : तुम बीस मिनट में ऊपर क्यों नहीं आ जाते?

मयंक : तुम उन्नीस मिनट में नीचे क्यों नहीं आ जाती?

कामया : Ok, fine. Bye मयंक। (गले लगते हुए)

मयंक : Bye वानी।

कामया : (गुस्से से अलग होते हुए) कामया। पिछले 4 दिनों में तुम 3 बार मुझे वानी बुला चुके हो।

मयंक : मैंने वानी नहीं कहा। मैंने कहा .....Honey...... honey.

कामया : हाँ?

मयंक : हाँ!

कामया : ओह, तो ठीक है।

(वो मुस्कुराते हुए चली जाती है। मयंक चैन की साँस लेता है। अपना सूटकेस उठाता है और अन्दर जाने लगता है। दरवाज़े की घंटी बजती है।)

मयंक : आजा आजा। दरवाज़ा खुला है।

(हंसल पटेल, मयंक का छोटा भाई अपना बैग लिए अन्दर आता है। हंसल अपने बड़े भाई का ठीक उल्टा है। थोड़ा शर्मीला, थोड़ा nervous, थोड़ा कम आत्मविश्वास वाला)

हंसल : (इधर उधर देखते हुए) हैलो, भाई। बिज़ी हो क्या?

मयंक : (अन्दर से) हाँ–हाँ...बस आया। (बाहर आते हुए) hey! What's up? इस बैग में क्या है?

हंसल : मेरे कपड़े, टूथब्रुश, शेविंग किट और कुछ किताबें।

मयंक : मज़ाक कर रहे हो क्या?

हंसल : नहीं।

मयंक : मतलब छोड़ के आ गए? हमेशा के लिए।

हंसल : हाँ मैं 6 night suits लेकर आया हूँ। मेरे लिए तो वो हमेशा के लिए ही हैं।

मयंक : मुझे विश्वास नहीं हो रहा हंसल। तुम सच में घर से भागकर आ गए?

हंसल : थोड़ी cheating की है मैंने। दरअसल मैं टैक्सी लेकर आया हूँ।

मयंक : सच में? मतलब मेरा छोटू क़ैदख़ाने की जंज़ीरें तोड़कर निकल आया?

हंसल : हाँ भाई। बहुत साल पहले हमने ही तो ये तय किया था।

मयंक : (गाते हुए)

छोड़ आये हम....वो गलियाँ....... – 2

जहाँ तेरे जाने के, बाद रहा करते थे,

जहाँ बटाटा–कांदा, परेशान किया करते थे,

लीला बुआ की पप्पी, दिन रात लिया करते थे।
छोड़ आये हम....वो गलियाँ ...... – 2

जहाँ फ़र्श पे बैठ के, खाना खाया करते थे,
जहाँ डैडी के डर से, घर जल्दी आया करते थे।
सुबह जल्दी से उठकर, दुकान जाया करते थे,
मम्मी के डर से ठेपले, हर रोज़ खाया करते थे।
छोड़ आये हम....वो गलियाँ..... – 2

मयंक : तुमने मुझसे कुछ कहा क्यों नहीं?

हंसल : कहता कब? तुम रविवार से तो काम पर आये ही नहीं।

मयंक : ओह हाँ! डैड कुछ कह रहे थे मेरे बारे में।

हंसल : ऑफिस पर तो कुछ नहीं, लेकिन घर पर उनका गुस्सा भयानक था। बात-बात पर चीज़ें पटक रहे थे। डाइनिंग रूम की खिड़कियाँ टूटते-टूटते बची हैं। तुम थे कहाँ भाई?

मयंक : खंडाला।

हंसल : खंडाला! इस बार कितनी पहाड़ियाँ चढ़े। (happily)

मयंक : (हँसते हुए) नहीं नहीं। इस बार नहीं।

हंसल : पर भाई, कैसे करते हो ये सब? मैं अगर 5 मिनट देर से पहुँचूँ तो एक तो वो मेरी तनख़्वाह काट लेते हैं, मेरी छुट्टियाँ कम कर देते हैं और तो और घर पे खाना भी कम मिलता है।

मयंक : क्योंकि वे तुमसे उम्मीद करते हैं और मुझसे वो पूरी तरह से नाउम्मीद हो चुके हैं।

हंसल : तुम मुझसे अच्छे हो भाई। कम से कम वो तुम्हें बच्चों की तरह तो ट्रीट नहीं करते। पता है परसों रात जब मैं देर से घर पहुँचा, क़रीब 1 बजे, तो उन्हें तो बहुत ही बुरा लगा। तुम्हें मालूम है उन्होंने क्या किया? जैसे ही उनके बेडरूम के दरवाज़े से गुज़रा, मुर्गे की तरह बांग देने लगे। कुकडू कू.....

मयंक : मज़ाक कर रहे हो। अच्छा फिर तुमने क्या कहा?

हंसल : क्या कहता? मैं भी वापस कुकडू कू करना चाहता था, पर हिम्मत नहीं हुई।

मयंक : cute हैं डैड हमारे।

हंसल : फिर कल मेरा बर्थडे था। मैं 21 साल का हो गया हूँ।

मयंक : ओह हाँ। सॉरी मैं तो भूल ही गया। Happy Birthday भाई। Happy Birthday......

हंसल : थैंक्स भाई।

मयंक : तुम्हारा present due रहा।

हंसल : कोई बात नहीं। Mom और dad ने तो दे ही दिया।

मयंक : अच्छा क्या दिया उन्होंने present में?

हंसल : A surprise party. Mom, Dad & Mehta family.

मयंक : ये मेहता फ़ैमिली कौन है?

हंसल : अरे वही भाई, जो पिछले साल Mom-Dad को art of living की workshop में मिले थे।

मयंक : अरे! लेकिन उनसे तुम्हें क्यों मिलाया? वो तुम्हारे दोस्त थोड़ी हैं।

हंसल : सोचो-सोचो। मुझे मेहता फ़ैमिली से क्यों मिलाया जा रहा है? सोचो-सोचो।

मयंक : अ.....उनकी एक जवान बेटी है। (सोचते-सोचते)

हंसल : ओह! क्या आपकी बिटिया शादी के लायक हो गई है।

मयंक : मतलब वो अपनी बेटी को दिखाने लाये थे? तुम्हारी जन्मदिन की पार्टी में?

हंसल : जी। घाघरे में लिपटी हुई। हाथों में मेहन्दी पुती हुयी। उसका नाम. ..क्या था?

मयंक : एक मिनट.....मुझे guess करने दो .....अ.....हेतल?

हंसल : ग़लत जवाब। स्नेहल।

मयंक : उसका I.Q. ?

हंसल : 170

मयंक : उसका weight ?

हंसल : 170

मयंक : बाप रे बाप! क्या चाहते हैं डैड ?

हंसल : भाई, कुछ नहीं हो सकता। मैंने अपना 21st Birthday एक ऐसी लड़की के साथ बिताया जिसने मुझसे ऐसे-ऐसे सवाल पूछे कि क्या बताऊँ। जैसे मैं कितने पैसे कमाता हूँ? (अब उसकी mimicry करते हुए) Do u smoke? आपका favorite restro कौन सा है? क्या आपने अमिताभ बच्चन का बंगला देखा है? Do u meditate?

मयंक : (हँसते हुए) Oh! I'm sorry हंसल।

हंसल : दिन-ब-दिन हालत बद से बदतर होती जा रही है। वो मेरा cupboard check करते हैं। मेरे sms देखते हैं। उन्हें अगर laptop चलाना आता तो मेरे email भी चेक करते। facebook और orkut भी देखते। मयंक भाई, समझ में नहीं आता कि मैंने ऐसा क्या कर दिया ? It's driving me crazy.

मयंक : बहुत सीधी बात है बेटा। वो डर रहे हैं कि कहीं तुम मेरे नक्शे कदम पर ना चलने लग जाओ।

हंसल : पर मैं तो चल पड़ा ना भाई। मैं आज सारा दिन सोचता रहा और मैंने तय किया कि मुझे निकल जाना चाहिए। और ये देखो, में आ गया।

मयंक : मुझे तुम पर नाज़ है हंसल। I love you.

हंसल : भाई, तुम सचमुच सोच रहे हो ना कि जो मैंने किया वो सही किया ?

मयंक : ऐसा क्या कर दिया तुमने? किसी का ख़ून थोड़े ही किया है? सिर्फ 1 घंटे की ही दूरी पे तो हो उनसे। नौकरी तो अभी भी उन्हीं की कर रहे हो। क्यों ?

हंसल : हाँ। लेकिन अब उसमें भी थोड़ा लोचा है?

मयंक : मतलब?

हंसल : मुझे मालूम है इससे घर में थोड़ी परेशानी तो होगी। लेकिन मैं डैड के साथ बिज़नस नहीं करना चाहता।

मयंक : सच?

हंसल : मैं वहाँ ख़ुश नहीं हूँ मयंक। तुम्हारी बात और है। तुम बिज़नस में अच्छे हो। लेकिन मैं नहीं हूँ।

मयंक : अरे अभी तुम नए हो ना इसीलिए ऐसा कह रहे हो।

हंसल : नहीं भाई ये बात नहीं है। मेरा वहाँ मन नहीं लगता। दुनियाँ में हज़ार important चीज़ें हो रही हैं। लोग टी.वी. shows बना रहे हैं, फिल्में बना रहे हैं। बाहर की कितनी बड़ी-बड़ी companies यहाँ बिज़नस करने का प्लान बना रही हैं। मैं काँदा बटाटा बेचने में अपना पूरा जीवन कैसे लगा दूँ?

मयंक : पर उसमें क्या दिक्क़त है? ये भी तो एक बिज़नस ही है।

हंसल : तुम्हारी बात अलग है भाई। तुम तो सेल्समैन हो, बाहर जाते हो, लोगों से मिलते हो, ज़िंदा लोगों से। और मैं। दिन भर आलू और प्याज ही देखता रहता हूँ, जो कभी बदलते नहीं। जो कभी बूढ़े नहीं होते। जिनके रंगों में कोई परिवर्तन नहीं आता। आह! दिन भर उन्हें देखते-देखते मैं ख़ुद आलू प्याज हो गया हूँ।

मयंक : तुम जानते हो तुम क्यों ऐसा feel कर रहे हो? उसकी एक वजह है। तुम्हें unwind करने का मौक़ा नहीं मिल रहा है। दिन भर की मेहनत तो ठीक है, लेकिन रात! रात अलग ढंग से बितानी चाहिए। मछलियों के संग। तितलियों के संग। (हँसता है।)

हंसल : हाँ, शायद आप ठीक कह रहे हैं।

मयंक : लेकिन अब तुम सब कुछ छोड़ के आ रहे हो ना?

हंसल : हाँ, बस थोड़ी ही देर में?

मयंक : थोड़ी देर में मतलब?

हंसल : डैड बस थोड़ी देर में घर आ रहे होंगे।

मयंक : मतलब तुमने डैड से कहा नहीं कि तुम घर छोड़ के जा रहे हो।

हंसल : मैं कह नहीं पाया भाई।

मयंक : पर क्यों ? तुम्हें डर लग रहा था क्या ?

हंसल : हाँ। शायद 4 दिन से आप भी काम पर नहीं आये। डैड का मूड भी कुछ उखड़ा-उखड़ा सा था। और वैसे भी मैं उन्हें hurt नहीं करना चाहता था। हाँ ये सही है कि वो थोड़े अड़ियल हैं और पुराने ख़्यालों के हैं। पर दिल के तो अच्छे हैं ना।

मयंक : हाँ-हाँ, मैं समझता हूँ।

हंसल : मैं वो...शॉप से जल्दी निकलकर घर आ गया था। फिर मैंने आराम से एक चिट्ठी लिखी जिसमें मैंने अपनी सारी बातें कह दी और उनके बैड पर रख दी। अब सुबह जब हम ऑफिस में मिलेंगे तो सारी बातें करेंगे। क्यों क्या कहते हो भाई ?

मयंक : हाँ, ठीक ही तो है। तुमने सही किया। मुझे तुम पर नाज़ है। तुम क़ैदख़ाने से निकल आये बेटा। चलो, celebrate करते हैं। तुम क्या लोगे ? Whiskey या beer

हंसल : हाँ-हाँ....

मयंक : अरे whiskey या beer

हंसल : Whiskey....

मयंक : whiskey....

हंसल : और साथ में ऑरेंज जूस।

मयंक : Oh! Whiskey और orange juice. शहर के bar tenders को तुमसे कुछ सीखना चाहिए। (वो ड्रिंक बनाने लगता है।) अरे हाँ! माँ ने तुमसे कुछ कहा नहीं ?

हंसल : वो तो बहुत परेशान हैं। तुम तो जानते ही हो कि उनके लिए घर की शान्ति सबसे बड़ी चीज़ है।

मयंक : और घर की सफाई।

हंसल : हा...हा...घर की सफाई भी। (हँसते हुए)

मयंक : अरे हाँ....कैसा है हमारे शांत घर का साज़ो सामान?

हंसल : दीवाने आम में अभी भी घुसने पर पाबन्दी है।

मयंक : (हँसते हुए) दीवाने आम। मुझे याद है, मुझ पर पाबन्दी इसलिए लगी थी क्योंकि मैंने कई साल पहले वहाँ ashtray में जलती हुयी cigarette छोड़ दी थी।

हंसल : पर भाई, आप जानते हो मैं क्यों घर छोड़ के भागा हूँ? मैं mom के नए फ़ितूर से तंग आ चुका था। जब से उन्होंने वो meditation camp attend किया है, तब से तो घर में खाने का सिस्टम ही बदल गया है। अब ज़मीन पर पालथी मार के भोजन करना पड़ता है। मुझसे नहीं होता ये सब। मैं आदमियों की तरह चेयर पर बैठ के खाना चाहता हूँ।

मयंक : आराम से आराम से बच्चे। One step at a time. Otherwise, ज़ोर का झटका लगेगा। आज तुम अपने कपड़े ज़मीन पर फेंक सकते हो। फिर कुछ दिनों के बाद तुम और बड़ी चीज़ों के लिए तैयार हो सकते हो। जैसे अपने जूते मोज़े इधर-उधर फेंक देना। किसी भी समय म्यूज़िक बजाना। ड्रिंक के लिए दोस्तों को घर ले आना वगैरह वगैरह।

हंसल : अरे भाई! बड़ा मज़ा आएगा ना। बस, आप और मैं। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था। बहुत अच्छी जगह है ये तो।

मयंक : हर चीज़ की क़ीमत देनी पड़ती है बेटा।

हंसल : ओह हाँ, मैं तो भूल ही गया था। मेरा rent कितना होगा?

मयंक : कौन सा rent?

हंसल : मेरा मतलब है मेरा शेयर? मैं नहीं रहूँगा यहाँ बिना rent दिए।

मयंक : ठीक है। तुम........3 हज़ार दे देना।

हंसल : 3 हज़ार? इतना कम कैसे? यहाँ का rent 6 हज़ार से तो कहीं ज़्यादा होना चाहिए था।

मयंक : देखो हंसल, तुम्हारा शेयर अभी 3 हज़ार ही है। डैड जब तुम्हारी

तनख़्वाह और बढ़ा देंगे तब तुम मुझे और दे देना।

हंसल : Ok. लेकिन हम सब शेयर करेंगे। खाना–पीना, gas, electricity सब agreed?

मयंक : agreed. तुम्हारा हिसाब शुरु होता है अब। (गिलास पकड़ाते हुए) 75 Rupees (फिर गिलास उठाते हुए) Here is to the Patel brothers. वो सपना जो बरसों पहले हम दोनों ने देखा था। Town की सारी तितलियाँ तुम्हारी और suburbs की सारी तितलियाँ मेरी। (दोनों एक–एक सिप लेते हैं और मयंक उसे आँख मारता है।) क्यों, कैसी लगी?

हंसल : अ...... different है।

मयंक : Different तो होगी ही। तुम्हीं ने तो ईजाद की है। (फोन की घंटी बजती है।)

मयंक : Ten to one it is a gorgeous गर्ल (ये ज़रूर miss femina होगी) (फोन पर) hello miss femina. अरे माँ! आप? कैसी हैं? आप माँ (ममा)........हम सब आप ही के बारे में बात कर रहे थे.... हाँ–हाँ....अभी 10 मिनट पहले ही आया है....बिल्कुल सही है.... अरे माँ....अगर मैं उसका ख़्याल नहीं रखूँगा तो कौन रखेगा। एक मिनट बस, अभी देता हूँ। (फोन हंसल को पकड़ाता है।) दीवाने ख़ास की मल्लिका।

हंसल : (घबराया हुआ–सा फोन उठाता है और मयंक एक और पेग बनाने में मशगूल हो जाता है।) हाँ–हाँ....माँ....ठीक हूँ माँ....आप ठीक हो?.....नहीं–नहीं.....अभी खाना नहीं खाया.....खा लूँगा। अच्छा माँ वो....डैड ने लेटर पढ़ा? ओह....अभी वो शॉप पर ही हैं..... क्या?.....नहीं–नहीं माँ, मैं नहीं चाहता कि आप उस लेटर को छिपायें.....मैं चाहता हूँ कि डैड उस लेटर को पढ़ें। वो क्या कर रहे हैं? हे भगवान!

मयंक : क्या हुआ हंसल? सब ठीक तो है?

हंसल : माँ मैं जानता हूँ उससे सब गड़बड़ हो जायेगी लेकिन.... (थोड़ी घबराहट बढ़ती है)....नहीं–नहीं....नहीं माँ....नहीं प्लीज़ .....नहीं

माँ.....नहीं।

मयंक : माँ रो रही है क्या?

हंसल : माँ रो रही है।

मयंक : रो रही है?

हंसल : (फोन पर) माँ....आप प्लीज़ रोइए मत। नहीं–नहीं....आप प्लीज़ मुझसे ये सब मत कहिये।

मयंक : क्या चाहती हैं वो? कि तुम वापस घर आओ।

हंसल : नहीं–नहीं....माँ.....प्लीज़ लेटर मत फाड़ना। प्लीज़ लेटर मत फाड़ना। मैं....मैं....मैं घर नहीं आ सकता।

मयंक : मेरी बात कराओ माँ से।

हंसल : लेकिन मेरी ज़िंदगी का क्या होगा?

मयंक : अरे मेरी बात करा ना।

हंसल : (ज़ोर देकर) नहीं मा.....प्लीज़, प्लीज़ लेटर मत फाड़ना....आपको मेरी कसम।

मयंक : अरे फोन इधर दो तुम।

हंसल : (मयंक से) एक मिनट मयंक। प्लीज़ मुझे बात करने दो। (वापिस फोन पर) अच्छा ठीक है माँ....मैं....मैं सोचता हूँ इस बारे में। मैं करता हूँ.....आपको वापस फोन करता हूँ। थोड़ी देर में। promise. लेकिन वो लेटर मत फाड़ना। ....(फोन रखता है।)

मयंक : तुम सोचोगे.....किस बारे में?

हंसल : 10 मिनट पहले घर पे डैड का फोन आया था। चिल्ला रहे थे। तुम्हारी कोई मीटिंग थी ना आज? और तुम्हें......

मयंक : अरे बाप रे। Mr. Aahujaani! मैं तो भूल ही गया।

हंसल : माँ को डर लग रहा है कि जब उनको पता चलेगा कि मैं भी आज ही घर छोड़ के गया हूँ तो वो तो टूट ही जायेंगे।

मयंक : ठीक है ठीक है....इतना घबराने की कोई बात नहीं है। मैं सब handle कर लूँगा।

हंसल : पर वो अपना सारा ग़ुस्सा माँ पर ही निकालेंगे। तुम तो जानते हो जब वो चीखना-चिल्लाना शुरु करते हैं तो कितना तमाशा हो जाता है।

मयंक : अब तुम क्या चाहते हो?

हंसल : पता नहीं। हो सकता है, मुझे लगता है मुझे वापस घर जाना चाहिए। (अपना बैग उठाने लगता है।)

मयंक : घर जाना चाहते हो? पर क्यों?

हंसल : हमारी ग़लती की सज़ा माँ को क्यों मिले?

मयंक : मुझसे मत पूछो। मैं सुबह के 3 बजे मुर्गे की तरह बांग नहीं देता।

हंसल : तो क्या करूँ मैं भाई?

मयंक : Grow up. Be a man. 21 साल के हो चुके हो तुम अब...

हंसल : तो इसका मतलब सब कुछ भूल जाऊँ।

मयंक : हंसल, मुर्गी के दड़बे से कब बाहर निकलोगे तुम? 21 साल के हो चुके हो। ज़िंदगी का मज़ा लेना कब शुरु करोगे? 60 साल में।

हंसल : भाई, ये कैसे complicated हो गया मामला? कुछ समझ नहीं आ रहा...मैं तो आप ही की तरफ हूँ। निकलना चाहता हूँ पर वो डैड ही हैं जो...

मयंक : हंसल। हाँ मैं समझता हूँ कि डैड दिल के बहुत अच्छे हैं, लेकिन वो ये समझ नहीं रहे हैं कि ज़िंदगी में चीज़ें बदलती हैं। बरसों से काँदा बटाटा का ही बिज़नस कर रहे हैं ना। तुम्हारे अंदर जो परिवर्तन आ रहा है ये उन्हें दिखाई नहीं दे रहा।

हंसल : हाँ। मैं जानता हूँ पर....

मयंक : पके हुए फल हो तुम इस वक़्त। डाल को छोड़ो।

हंसल : हाँ भाई। शायद आप सही कह रहे हो।

मयंक : तो तुम रुक रहे हो न?

हंसल : हाँ-हाँ। बिल्कुल।

मयंक : (उसके गले में बाँहें डालते हुए) That's the little brother I love

and adore. जाओ अपना सामान अन्दर कमरे में रख दो।

हंसल : (सामान उठाते हुए) मेरी वजह से आपको यहाँ कोई disturbance तो नहीं होगी?

मयंक : नहीं–नहीं। बिल्कुल भी नहीं। हमें बस कुछ नियमों का पालन करना होगा। (मुस्कुराते हुए) थोड़ी देर में एक लड़की आने वाली है।

हंसल : लड़की? तो आपने पहले क्यों नहीं कहा? आप जब भी किसी लड़की के साथ अकेले होना चाहें, तो मुझे बता देना। मैं फिल्म देखने चला जाया करूँगा।

मयंक : बेफ़िक्र रहो, जैसा मेरा schedule है, एक भी picutre तुम miss नहीं करने वाले। (घंटी बजती है।) तुमने सुना? 10 मिनट पहले आ गयी।

हंसल : भाई मैं इसे अन्दर रख के....फिर जाता हूँ।

मयंक : नहीं नहीं नहीं। रुको। मैं चाहता हूँ कि तुम उससे मिलो। (दरवाज़े की तरफ जाता है।) आर यू ready? (घुटनों के बल बैठता है और मंत्र बोलता है।) नाम्योह्यो....रेंग्येक्यो (4–5 बार) और मेरी तीसरी ख़्वाहिश ये है कि जैसे ही मैं दरवाज़ा खोलूँ। इस दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की वहाँ खड़ी मिले। (हाथ से हंसल को इशारा करता है और दरवाज़ा पूरा खोल देता है। बाहर उसके डैड खड़े हैं।) Dad!

(हंसल पहले नज़दीक आता है और डैड को देख कर फौरन छिप जाता है। डैड अन्दर आते हैं। मयंक थोड़ा हैरान और परेशान। डैड कमरे पर नज़र दौड़ाते हैं। उनके चेहरे पर थोड़ी परेशानी के भाव हैं।

मयंक : डैड! ये तो कमाल हो गया। आपने तो अच्छा ख़ासा......surprise दे दिया। आज.... कैसे हैं आप?

पापा : कैसा हूँ मैं? बताता हूँ थोड़ी देर में, कि कैसा हूँ मैं। (उनका घर पर नज़र दौड़ाना अभी भी चल रहा है।)

मयंक : बस डैड! घर की थोड़ी सी setting change की है। ये bean bag नया लाया हूँ। कैसा है?

पापा : सारो छे। सारो छे। बहुत अच्छी नौकरी कर रहे हो शायद तुम। क्यों? (गिलास को सूँघता है।)

मयंक : मैं बस अभी-अभी आया हूँ। आपको फोन करने ही वाला था।

पापा : अच्छा है कि फोन companies को तुम पर depend नहीं करना पड़ता।

मयंक : मैं बस आपको फोन करके बताने ही वाला था कि मैं दो दिन क्यों नहीं आ पाया।

पापा : बताने की कोई ज़रूरत नहीं है।

मयंक : नहीं, ज़रूरत है डैड...

पापा : क्यों? क्या मैं समझता नहीं कि तुम हफ्ते में 2 दिन की कड़ी मेहनत करते हो और इसीलिए तुम्हें 5 दिन की छुट्टी चाहिए? मैं सब समझता हूँ।

मयंक : डैड....डैड मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैं...मैं खंडाला गया था...और मुझे संडे रात तक वापस आना था....लेकिन मेरे पाँव में....मोच आ गयी थी। मैं ड्राईव नहीं कर पाया...मुझे लगा के फ्रैक्चर हो गया है।

पापा : X-ray रिपोर्ट आ गयी?

मयंक : Dad...I'm sorry dad....i'm sorry.

पापा : सॉरी....इससे ज़्यादा की तो मैं उम्मीद भी नहीं कर सकता।

मयंक : Dad मैं कल सुबह ऑफिस पहुँच जाऊँगा।

पापा : बहुत बढ़िया। तुम्हें पता तो मालूम है ना? क्यों?

मयंक : जी...जी डैड मुझे मालूम है।

पापा : देखो। मैं हमेशा कहता था कि तुम कितने लायक बेटे हो। ठीक है, कल सुबह मिलते हैं।

मयंक : जी।

पापा : (जाने लगते हैं फिर रुकते हैं।) अरे हाँ वो ahujani के deal का क्या हुआ ?

मयंक : Ahujani?

पापा : अरे वो नागपुर वाला, जिसके बारे में तुम कह रहे थे कि वो deal तुम्हारे बाएँ हाथ का खेल है।

मयंक : ओह....हाँ....हाँ। एक दम ठीक।

पापा : एकदम ठीक, बड़ी ख़ुशी हुई सुनकर। उसका फोन आया था आज।

मयंक : अच्छा ? आर्डर confirm करने के लिए ?

पापा : हाँ-हाँ....आर्डर confirm करने के लिए।

मयंक : तो ऑर्डर मिला ?

पापा : जी हाँ। बिल्कुल मिला।

मयंक : कितने का ?

पापा : सोचो-सोचो, कितने का मिला होगा ? जरा सोचो।

मयंक : अ...वो...वो...डैड....

पापा : अरे सोचो। हमें ahujani से कितने का ऑर्डर मिला ? सोचो तो... guess तो करो।

मयंक : कुछ नहीं मिला क्या ?

पापा : एकदम सही। कुछ नहीं मिला।

मयंक : एक मिनट.....एक मिनट डैड....

पापा : बहुत अच्छी छुट्टियाँ मनाई तुमने। निखट्टू। तुम्हें मालूम है खंडाला में 4 दिन की छुट्टियाँ मनाने का कितना खर्चा आता है ? निखट्टू।

मयंक : अ....मैंने.....मैंने उसे फोन करने की कोशिश की थी, पर उसका. ..उसका नंबर नहीं मिल रहा था।

पापा : पहाड़ी पर चढ़कर फोन किया होगा न... ?

मयंक : (फोन की तरफ जाता है।) मैं....मैं अभी उसे फोन करता हूँ।

पापा : कहाँ करोगे फोन उसे?

मयंक : नागपुर।

पापा : नागपुर में किस से बात करोगे, मंत्री जी से? वो यहाँ है।

मयंक : मुंबई में?

पापा : Hotel J W Marriott में। 2 दिनों से वो यहाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है और तुम्हें खंडाला में छुट्टियाँ बिताने से फुर्सत नहीं है। Trekking करने से फुर्सत नहीं है।

मयंक : डैड....मैं आपसे वादा करता हूँ...ये deal मैं हाथ से जाने नहीं दूँगा।

पापा : क्यों? ऐसा पहली बार होने वाला है क्या? लिस्ट दिखाऊँ? तुम्हारी छुट्टियों की लिस्ट से भी लम्बी लिस्ट है मेरे पास। करते रहो trekking।

मयंक : डैड......मैं समय पर नहीं पहुँच पाया बस....इसका trekking से कोई लेना-देना नहीं है।

पापा : ओह हाँ! मैं तो भूल ही गया था, trekking के अलावा तुम्हारा cricket...तुम्हारी नींद....लड़कियाँ....drinking parties ...कमाल के नवाब हैं आप। निखट्टूओं को manufacture करने का बिज़नस अगर मैंने शुरु किया होता तो तुम जैसे 10 की ज़रूरत पड़ती।

मयंक : डैड, ये सही नहीं है। ये सही नहीं है, ऐसा बिल्कुल नहीं है। मैं काफ़ी वक्त देता हूँ बिज़नस में।

पापा : 2 साल। 6 साल में तुमने 2 साल दिए हैं....बस। मेरा अपना बेटा। दुश्मनों से ज़्यादा मदद मिलती है मुझे।

मयंक : क्यों ना मिले। आप मुझे भी तो अपना दुश्मन ही समझते हैं।

पापा : मैं दुश्मन समझता हूँ? टहलता हुआ ऑफिस में 11 बजे कौन आता है। 3-3 घंटे का लंच ब्रेक कौन लेता है? शाम होते ही बीयर पीने के लिए कौन चला जाता है? तुम होते कब हो ऑफिस में?

मयंक : क्या मतलब मैं होता कब हूँ? क्या कहना चाहते हो आप?

पापा : कब होते हो? कब? छुट्टियाँ लेने में माहिर हो तुम बस। कभी

सरकारी छुट्टियाँ, कभी ये त्यौहार कभी वो त्यौहार। कभी mothers day, कभी fathers day, कभी valentine डे। नई-नई तरह की छुट्टियाँ ईजाद करते हो तुम। पिछले दफ़े तो friends day पर भी छुट्टी ले ली थी तुमने।

मयंक : तेरी तबियत ठीक नहीं थी डैड।

पापा : जब काम पे आते हो तो तबियत ठीक नहीं रहती। डिस्को में जाते ही और दोस्तों से मिलते ही तबियत ठीक हो जाती है तुम्हारी?

मयंक : पहली बात कि आप सही नहीं कर रहे। और दूसरी बात, क्या फायदा है मेरे ऑफिस आने का? आपको तो मेरी ज़रूरत ही नहीं है। बिज़नस के किसी भी मामले में कभी कोई राय, कोई मशविरा लिया है आपने मुझसे?

पापा : अय्याशी से फुर्सत मिले तब ना।

मयंक : देखा-देखा....मेरी बात तो आप सुनते ही 8नहीं।

पापा : ऑफिस में टाइम से आओ, सुनूंगा।

मयंक : तीन साल से तो आ ही रहा था। तब मेरी बात इसलिए नहीं सुनी जाती थी, क्योंकि तब मैं बच्चा था। और अब, जब मैंने अपना कमरा ले लिया है तो मेरी बात इसलिए नहीं सुनी जाती क्योंकि मैं निखट्टू हो गया। बात मानो डैड, बात मानो। आप मुझे उतनी भी इज़्ज़त नहीं देते जितनी आप watchman को देते है।

पापा : अरे उसका कम से कम ये तो पता रहता है कि वो रात को क्या करता है। कहाँ रहता है।

मयंक : तो मेरा भी तो पता है। थोड़ी मस्ती करता हूँ, उसमें बुराई क्या है? वैसे डैड मैं रात को क्या करता हूँ, ये मेरा अपना मामला है।

पापा : ओर चार-चार रातें घर वालों को पता ही ना चले कि तुम कहाँ हो तो? अरे छोड़ो मुझे क्या पड़ी है? मैं क्यों अपना माथा फोड़ रहा हूँ? जो करना है करो, और निखट्टू की तरह मरो।

मयंक : मैं निखट्टू क्यों हूँ? आप मुझे निखट्टू क्यों कहते हैं डैड?

पापा : शादी की तुमने?

मयंक : नहीं।

पापा : तो फिर तुम निखट्टू हो।

मयंक : अरे पर मुझे मौक़ा तो मिले। मैं कर लूँगा।

पापा : बरसों से सुन रहा हूँ मैं। तुम जब 26 के थे, 27 के थे, 28 के थे, 29 के थे तब तुम bachelor थे। पर अब तुम तीस से ऊपर हो गए हो और अभी भी तुम्हारी शादी नहीं हुई। इसीलिए तुम एक निखट्टू हो, बस। बात ख़त्म।

मयंक : तो तीसवाँ साल expiry डेट है क्या? मैं बस life enjoy करना चाहता हूँ डैड। ज़िंदगी के कुछ अनुभव लेना चाहता हूँ। ठीक वैसे ही, जैसे हर normal, Healthy, Indian लड़का कर रहा है।

पापा : Healthy तुम हो। Indian भी तुम हो। लेकिन normal, तुम नहीं हो।

मयंक : क्यों ऐसा कह रहे हैं आप?

पापा : देखो-देखो....अपने छोटे भाई को देखो। उसे कहते हैं नोर्मल। वो लड़का करेगा कुछ। तुम्हारे जैसा तो कभी नहीं होगा। इस जन्म में तो नहीं।

मयंक : सच? आपको झटका लगने वाला है।

पापा : सबसे पहले ऑफिस में आता है वो। दिन भर मेहनत करता है। नहीं-नहीं, मुझे उससे कभी कोई झटका नहीं लगेगा।

मयंक : आपने अपने लेटर्स देख लिए?

पापा : क्या?

मयंक : नहीं-नहीं....कुछ नहीं।

पापा : ख़ैर, मैं तुमसे ज़्यादा बहस नहीं करना चाहता। कल सुबह 8 बजे ऑफिस आ जाना।

मयंक : 8 बजे? लेकिन उस वक़्त तो कोई भी नहीं होता।

पापा : तुम रहोगे वहाँ। और शाम के 7 बजे तक रहोगे। और शनिवार को भी रहोगे, इतवार को भी रहोगे और छुट्टी के दिन भी रहोगे। तंग

आ गया हूँ मैं तुम्हारा बाप बन के। आज से मैं तुम्हारा बॉस हूँ।

मयंक : ठीक है डैड। लेकिन 8 बजे आने का क्या फायदा? 9 बजे से पहले तो कुछ भी नहीं होता।

पापा : तुम तो वैसे भी फेसबुक पर ही लगे रहते हो? 1 घंटा और देख लेना।

मयंक : ठीक है, ठीक है। मैं आ जाऊँगा।

पापा : और Ahujani के deal के साथ। तुम अगर उसका order sign करके नहीं लाये, तो तुम सीधा trekking करते हुए किसी दूसरी जगह नौकरी ढूँढने के लिए चले जाना।

मयंक : जी डैड, मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा।

पापा : तुम्हारी पूरी कोशिश से हम हमेशा मुसीबत में फँसे हैं। तुमसे मैं चमत्कार चाहता हूँ...चमत्कार। कल सुबह 8 बजे Ahujani की deal के साथ।

मयंक : जी डैड।

पापा : जिस दिन तुम्हारा भाई तुम्हारे जैसा हो गया, मैं समुद्र में कूद कर अपनी जान दे दूँगा।

(डैड चले जाते हैं। हंसल अन्दर के कमरे से घबराया हुआ आता है।)

हंसल : भाई तुमने सुना? मैंने पहले ही कहा था।

मयंक : (फोन की तरफ जाते हुए) कौन से होटल की बात कर रहे थे वो? J W Marriott ना?

हंसल : अब देखना, घर जाते ही वो लेटर पढ़ेंगे और अपने आप को मार देंगे...हम सबको मार देंगे। जैसे वो...जैसे वो...जैसे सनसनी न्यूज़ शो में दिखाते हैं। मयंक भाई, फोन मुझे दो।

मयंक : एक मिनट हंसल, एक मिनट। मुझे Ahujani से बात करनी है।

पापा : Ahujani से? लेकिन हमें पहले माँ से बात करनी होगी, इससे पहले कि डैड घर पे पहुँच जाएँ, माँ से कहना होगा कि वो लेटर

को फाड़ दें।

मयंक : Will you relax हंसल ? किसी को मारने वाले नहीं हैं वो, जब तक वो खाना ना खाएँ। मैं हूँ ना, मैं सब ठीक कर दूँगा।

हंसल : पर कैसे ?

मयंक : Ahujani से मिल कर सब ठीक हो जाएगा। (फोन पे) hello, may I have the no. of J W Marriott Please.

हंसल : और अगर तुम नहीं कर पाए तो ?

मयंक : घबराओ मत हंसल। वो Ahujani मुंबई इसलिए आया है क्योंकि मैंने उसे एक party offer की थी। (फोन पर) Yes, thank u. (नंबर नोट करता है फिर नंबर डायल करता है।)

हंसल : ये मैंने क्या कर दिया। बहुत ही गलत समय चुना मैंने घर से निकलने का। बहुत बड़ा तमाशा होने वाला है घर पे। भाई मैं...मैं. ...जा रहा हूँ भाई।

मयंक : इस दरवाज़े के बाहर एक क़दम भी रखा तो ज़िंदगी भर तुम्हारी शक़्ल नहीं देखूँगा।

हंसल : मयंक भाई, आप मेरी मदद क्यों नहीं कर रहे हो ?

मयंक : (फोन पर) Mr. Ahujani please....Thank you. (हंसल से) ज़रूरत से ज़्यादा मदद कर रहा हूँ तुम्हारी। बचा रहा हूँ तुम्हें मैं। अब इस बार अगर तुमने बढ़े हुए कदम वापस खिंच लिए तो 5 साल तक फिर मौक़ा नहीं मिलेगा। (फोन पर, खड़े होते हुए) Hello, Mr. Ahujani?....Mayank Patel... मैं कहाँ था ?....मुझे बताते हुए थोड़ा अजीब सा लग रहा है....आप तैयार हैं ?....जी, नागपुर ?....मुझे लगा कि आप शायद मुझसे वहीं मिलना चाहते हैं. ...हाँ-हाँ....शायद थोड़ा communication gap हो गया था...जी-जी. ..तितलियाँ मेरे साथ हैं।

हंसल : तितलियाँ ? भाई आप....

मयंक : (फोन पर हाथ रखते हुए) will you shut up? (वापस फोन पर) जी-जी....आप आज रात की बजाय कल सुबह की flight से

वापस नहीं जा सकते?....तितलियों को उड़ने के लिए फिर से बुलाऊँ...वो तो मेरे साथ ही हैं यहाँ।

हंसल : कहाँ....कहाँ...?

मयंक : (फोन पर हाथ रखते हुए) बेवक़ूफ़ चुप नहीं रह सकता क्या? (वापस फोन पर) वो क्या था?....जी वो....एक तितली पंख फड़फड़ा रही थी....रंगीन??? (ज़ोरों से हँसता है, फिर हंसल की ओर देख कर) डार्लिंग वो जानना चाहते हैं कि तुम रंगीन हो या नहीं?....Mr. Ahujani आपने कभी कोई बेरंग तितली देखी है क्या?....जी नहीं ....एक दम उड़ने के लिए तैयार....आपका होटल?...room no. 326..... आधे घंटे में....आप तैयार रहिये.... खाने पीने का इंतज़ाम कीजिये...मैं उन्हें लेकर आता हूँ। (फोन रखता है और ज़ोर से हँसता है।) I hate myself. (फिर लैपटॉप खोलता है, और उसमें कुछ देखता है।)

हंसल : भाई मैंने तो किसी को ऐसा करते हुए कभी नहीं देखा। क्या आपकी हर शाम ऐसी ही होती है?

मयंक : अ.....दिवाली से पहले थोड़ा काम कम होता है। (लैपटॉप में देखते हुए) married.........married...........pregnant.......... married...canada.....canada....dubai.... हाँ, ये रही, लोपमुद्रा।

हंसल : लोपमुद्रा?

मयंक : (फोन पर) हैलो लोपा.....क्या आप जानती हैं इतनी ख़ूबसूरत आवाज़ के लिए आपको गिरफ़्तार किया जा सकता है?....मयंक . .....(हँसता है)....अभी-अभी यूरोप के टूर से वापस आ रहा हूँ। वहाँ एक specialist ने मुझसे कहा कि अगर मैं आधे घंटे के अन्दर आपसे ना मिलूं, तो मुझे heart attack हो सकता है... (हँसता है)....हाँ, आज शाम मेरा दोस्त एक छोटी सी पार्टी दे रहा है....कमाल का sense of humor है उसका....अच्छा सुनो....लोपा. ...तुम्हारी roommate फ्री है क्या?....वो दिल्ली वाली लड़की?. ...wonderful....तो उसको भी ले आओ ना....नहीं-नहीं....मैं साथ नहीं आ सकता....मुझे ड्रिंक्स लेकर आनी है...तुम लोग मुझे वहीं

मिलो ना ?....J W Marriot, room-326, Mr. Ahujani.... आधे घंटे में....I just love you हम्म्म्म....क्या ? ? ?....हाँ...मयंक पटेल.... (फोन रखता है)....Yup...we are set.

हंसल : भाई, आप तो james bond की तरह काम कर रहे हो।

मयंक : मुझे अभी निकलना चाहिए (तभी फोन की घंटी बजती है) अरे यार! अब कौन है? हैला, कौन? वानी!....तुम क्या कर रही हो यहाँ?...no no....no baby.....no.... अभी? well....sure....ठीक है....आ जाओ। (फोन रखता है) इसको भी अभी आना था।

हंसल : कौन है?

मयंक : एक लड़की है।

हंसल : एक और? ऊपर आ रही है?

मयंक : (अपने आप से) पर वो तो कल वापस आने वाली थी, आज कैसे आ गयी?

हंसल : तो फिर आप क्यों मिल रहे हो उससे?

मयंक : मैं उसे avoid नहीं कर सकता।

हंसल : मुझे लगता है avoid करना आपके लिए सबसे आसान है।

मयंक : तुम नहीं समझोगे। ये लड़की अलग है, औरों के जैसी नहीं है। थोड़ी अलग है।

हंसल : ओहो हो! तो यही है वो?

मयंक : अरे मैंने ऐसा कब कहा? मैंने सिर्फ़ यही कहा कि वो थोड़ी अलग है।

हंसल : (उछलते हुए) भाई अगर आप शादी के लिए हाँ कह दो, तो घर में सारी समस्याऐं हल हो जायेंगी। आपको पता है, माँ ने तीन साल पहले ही टेंट वालों को पैसे दे दिए थे।

मयंक : शादी? और मैं? क्या मज़ाक कर रहा है।

हंसल : भाई मुझे लगा कि ये अच्छी लड़की है।

मयंक : अच्छी नहीं, बहुत अच्छी है। पर शादी, अभी नहीं। सुनो...तुम

बाहर जाओ। मैं उसे अकेले में मिलना चाहता हूँ। (घंटी बजती है, हंसल जाने लगता है) सुनो....इधर से नहीं....kitchen की side entrance से जाओ। और सुनो...10–15 मिनट में आ जाना। (हंसल अब kitchen के दरवाज़े से जाता है।)

हंसल : अब समझा....brad pitt 11 बजे ऑफिस क्यों आता है। भाई आजकल बहुत ओवर टाइम कर रहे हैं। (चला जाता है।)

मयंक : (दरवाज़े की तरफ जाता है और आधा दरवाज़ा खोलते हुए कहता है) नाम्योह्यो...रेंग्येक्यो। (4-5 tmes) और मेरी तीसरी ख़्वाहिश ये है कि जैसे ही मैं अपनी आँखें खोलूँ। इस दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की मेरे सामने खड़ी मिले। (बंद आँखों से दरवाज़ा खोलता है। वानी वहाँ खड़ी है।) मेरी तीसरी ख़्वाहिश पूरी हुई। चली आओ....विश्व सुन्दरी....चली आओ। (वानी अन्दर आती है।)

वानी : तुम्हारी पहली दो ख़्वाहिशें ज़रूर पूरी हो गयी होंगी।

मयंक : कैसी हो वानी?

वानी : अच्छी हूँ। वापस आ गई हूँ, इसलिए। (मयंक उसे गले लगाता है।)

मयंक : hmmm......ऐसे खुशबू से भरी हुयी।

वानी : (उसे हटाते हुए) रोज़ नहाती हूँ, इसलिए।

मयंक : यहाँ आओ। पिछले दो हफ्तों से बस तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था। (वानी packet को अपने और मयंक के बीच में रखती है।) इस packet को नीचे रखो ना।

वानी : पहले खोलो इसे।

मयंक : (packet को लेते हुए) क्या है इसमें?

वानी : गिफ्ट है।

मयंक : मेरे लिए। पर क्यों?

वानी : क्योंकि तुम्हें पसंद करती हूँ, और तुम्हें मिस करती हूँ।

मयंक : मिस तो मैंने भी किया। पर मैं तो तुम्हारे लिए कोई गिफ्ट नहीं

लाया।

वानी : कोई बात नहीं। मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हें ज़्यादा चाहती हूँ। तीन हजार रुपये ज़्यादा। अब खोलो भी।

मयंक : (packet खोलता है, उसमें track suit है।) वानी....hey...track suit.... मेरे लिए।

वानी : पिछली छुट्टियों में तुम्हारा खो गया था ना? याद है?

मयंक : (ख़ुश होता है) कमाल है वानी। तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे track suit की ज़रूरत है? मैं तो खुद ख़रीदना चाहता था, पर मुझे टाईम ही नहीं मिला। तुम्हें कैसे याद रहा?

वानी : Telepathy। दिल को दिल से राह होती है। अच्छा है ना?

मयंक : अच्छा नहीं....बहुत अच्छा है....vani you are wonderful सिर्फ़ तुम ही ऐसा कर सकती हो। यहाँ आओ....यहाँ आओ...(उसे अपनी बाँहों में ले लेता है और किस करता है।)

वानी : आह....The commission.

मयंक : Thank you vani darling. (फिर से किस करता है।)

वानी : You are welcome very much. (मयंक उसे और किस करना चाहता है, लेकिन वानी पीछे हटती है।) मयंक relax.

मयंक : अभी commission पूरा कहाँ हुआ?

वानी : मयंक मैं 800 km लम्बा सफर तय करके आ रही हूँ और अभी पकड्म-पकड़ाई नहीं खेल सकती।

मयंक : (मयंक उसे पीछे लपकता हुआ) तुम मत खेलो, मैं खेलता हूँ। टाइम भी बचेगा और energy भी।

वानी : मयंक प्लीज़। मेरी कमज़ोरी का फ़ायदा मत उठाओ। मेरे लिए तो ये हारी हुई बाज़ी है न।

मयंक : हारी हुई बाजी! कैसे?

वानी : क्योंकि मैं तो तुम्हारी तरफ हूँ ना। (वो उसे पकड़ लेता है और वानी उससे छिटक के निकल जाती है।) Not fair मयंक। तुम और मैं, मेरे ही ख़िलाफ? अच्छा एक बात बताओ। ऐसा क्या है

तुममें ?

मयंक : पता नहीं। शायद मैं brad pitt जैसा लगता हूँ।

वानी : Oh god no. तुम भूल जाते हो कि मुझे तो brad pitt पसंद ही नहीं। मेरा favorite तो Leonardo Dicaprio है। पर हाँ। तुममें कुछ बात तो है। कुछ जादू तो किया है तुमने मुझ पर। पर याद रखना, जिस दिन मुझे पता चला कि तुमने क्या किया है, एक झटके में तुम्हारे तिलिस्म को तोड़ दूँगी।

मंयक : मेरी जान! कोई नहीं तोड़ सकता मेरे तिलिस्म को। (उसे पीछे भागता है।)

वानी : मयंक नहीं...

मयंक : एक kiss...

वानी : नहीं....

मयंक : सिर्फ़ एक kiss....

वानी : नहीं....

मयंक : एक kiss.... अगर तुम्हारी थकान उससे कम नहीं हुई तो मैं रुक जाऊँगा। और अगर तुम्हारी थकान उससे थोड़ी भी दूर हुई, तो जादू का खेल पूरा खेला जाएगा।

वानी : नहीं मयंक। This is not fair.

मयंक : अच्छा ठीक है, मैं अपने हाथ पीछे बाँध लेता हूँ, और सिर्फ़ अपने होठों का इस्तेमाल करूँगा। (बोलते-बोलते कुर्सी पर खड़ा हो जाता है।)

वानी : नहीं मयंक प्लीज़ अभी नहीं। मैं अभी ये खेल खेल नहीं सकती। बस घर जाने से पहले तुम्हें देखना चाहती थी। बहुत थक गई हूँ।

मयंक : (Chair से नीचे उतरता है) Ok! काफी hectic tour था।

वानी : बहुत ही ज़्यादा। (उसके बगल में बैठ जाती है।)

मयंक : (हँसते हुए) Poor kid. शो के लिए दोबारा कब जा रही हो?

वानी : वो लोग दो हफ़्ते में जा रहे हैं।

मयंक : वो? तुम नहीं?

वानी : नहीं, मैं नहीं।

मंयक : क्यों? कोई दूसरा शो मिल गया क्या?

वानी : अरे नहीं बाबा। मैं शो नहीं, ये पूरा शो बिज़नस ही छोड़ रही हूँ।

मयंक : मज़ाक कर रही हो क्या?

वानी : (खड़ी हो जाती है) अच्छा इस बारे में कल बात करते हैं। तुम मुझे फोन करोगे darling? दोपहर में?

मयंक : एक मिनट। मैं इस बारे में बात करना चाहता हूँ।

वानी : बात करने के लिए कुछ है ही नहीं।

मयंक : कैसे नहीं है? तुम अपना career छोड़ रही हो और कह रही हो कि.

वानी : ओह मयंक! कैसा career?

मयंक : अरे...तुम एक singer हो। हो कि नहीं?

वानी : पता नहीं, कभी-कभी तो शक होता है।

मयंक : पर सब कुछ तो अच्छा जा रहा था तुम्हारे लिए। इतने musical shows कर रही थी।

वानी : Musical shows नहीं थे वो मयंक। Industrial shows थे। 2 घंटे की exhibition में 5 मिनट की performance हम देते थे audience की entertainment के लिए। अभी जो शो कर के आ रही हूँ, वो पराग साड़ी के लिए था। **पहनो पहनो पराग साड़ी...पहनो पहनो पराग साड़ी...**पर लोगों की दिलचस्पी साड़ियों में कम और हम लड़कियों में ज़्यादा रहती है। और साड़ी बेचने वाले भी हमें साड़ी नहीं, mini skirt पहना के गाना गवाते हैं।

मयंक : पर ऐसे कैसे तुम अपना promising career छोड़ दोगी? तुम्हारी personality अच्छी है, तुम्हारा look अच्छा है। Music business में और क्या चाहिए? आजकल तो cricket players भी album बनाने लगे हैं।

वानी : पर talent की भी ज़रूरत होती है।

मयंक : हाँ। अगर तुम्हें artistically अच्छा होना है तो। star बनने के लिए किसी टैलेन्ट की ज़रूरत नहीं है।

वानी : मेरे पास तो दोनों में से कुछ भी नहीं है।

मयंक : तुम्हारा attitude मुझे समझ में नहीं आ रहा। क्यों कर रही हो ऐसा तुम?

वानी : very simple. ज़्यादा समय तुमसे दूर नहीं रहना चाहती।

मयंक : (घबराता हुआ) ओ...अच्छा ये बात है।

वानी : जी। यही बात है। (मुस्कुराते हुए) No more travelling, no more buses and trains and no long distance phone calls. मैं तुमसे बस इतनी दूर रहना चाहती हूँ कि जब चाहूँ तुमसे मिल सकूँ।

मयंक : अच्छा, तो तुमने अपना मन बना लिया है?

वानी : हाँ। कितना सुकून मिल रहा है इससे।

मयंक : तो तुम अब क्या करोगी?

वानी : I'll manage. जो सब लड़कियाँ करती हैं। थोड़ी modeling कर लूँगी...या किसी ऑफिस में secretary बन जाऊँगी...या फिर किसी की housewife।

मयंक : क्या? housewife?

वानी : जी। किसी ने सही कहा है, The best profession/employment for a women is to become a housewife.

मयंक : किस गधे ने ऐसा कहा?

वानी : मैं मज़ाक कर रही थी। तुम समझे नहीं।

मयंक : नहीं-नहीं....मैं समझ गया...अच्छा मज़ाक है। (घड़ी देखता है) अरे बाप रे! टाइम तो देखो। I am sorry वानी, पर अभी मुझे एक business appointment के लिए जाना है। क्या मैं बाद में तुम्हें फोन करूँ?

वानी : नहीं। मैं अभी बात करना चाहती हूँ।

मयंक : किस बारे में?

वानी : Housewives के बारे में।

मयंक : उनके बारे में क्या?

वानी : तुम तो ऐसे acting कर रहे हो जैसे ये शब्द पहली बार सुना है।

मयंक : नहीं–नहीं....मैंने पहले भी सुना है। मेरी माँ एक housweife हैं। वानी Sweetheart, ये बहुत ही serious मसला है। एक काम करते हैं, किसी दिन पूरी शाम....नहीं शाम क्यों? पूरी रात बात करते हैं। पर अभी मुझे भागना है।

वानी : कितनी गहरी लगी?

मयंक : क्या?

वानी : मैंने तुम्हारी किसी दुखती रग को छू दिया ना?

मयंक : नहीं–नहीं, ये सही नहीं है। हम शादी की बातें पहले भी कर चुके हैं। है कि नहीं?

वानी : हाँ। इसी पलंग पर। और वो शायद सिर्फ़ चुनाव के झूठे वादे थे।

मयंक : क्या फ़र्क पड़ता है? मैं चुनाव तो अभी तक जीत नहीं पाया।

वानी : Results आने अभी बाकी हैं।

मयंक : वानी Honey, तुम अभी थक चुकी हो। और मेरा अभी एक बहुत ज़रूरी business appointment है।

वानी : इस वक़्त? 7 बजे?

मयंक : मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा। 10 बजे तक फ़्री हो जाऊँगा।

वानी : किसको बेवकूफ़ बना रहे हो तुम? डेट पर जा रहे हो ना?

मयंक : अरे बाबा! It's a business appointment. और वैसे भी तुम कल आने वाली थी।

वानी : अब समझ में आया। तुम जो थोड़ी देर पहले मेरे career में इतना interest दिखा रहे थे, उसकी असली वजह क्या है? ये अब समझ में आया।

मयंक : क्या समझ में आया?

वानी : मेरे career की नहीं, अपने career की फ़िक्र है तुम्हें।

मयंक : मेरा career?

वानी : हाँ एक lover के career की। तभी तुम चाहते हो कि मैं ज़्यादा देर तुमसे दूर रहूँ।

मयंक : क्यों ? I....I....I Love you.

वानी : जी। जब मैं तुम्हारे पास होती हूँ, सिर्फ़ तब तक। जैसे ही मैं दूर हो जाती हूँ substitutions आ...हा ! कितना अच्छा है ना, एक आदर्श bachelor का जीवन ? कभी bore नहीं हो जाओगे। हर दो महीने में नए-नए बीज बोते रहोगे।

मयंक : नहीं-नहीं वानी। मेरे कहने का मतलब ये नहीं था, तुम ज़रा समझने की कोशिश करो। 33 साल का लड़का 24 साल की लड़की के मुक़ाबले बहुत छोटा होता है। कहने का मतलब है कि वो मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक रूप से शादी के लिए तैयार नहीं होता।

वानी : ओह ! तुम अपनी बात कर रहे हो ?

मयंक : सच बताऊँ ? मैंने अपनी ज़िंदगी में, ये अकेले रहना, ये सब मस्ती, ये सब पार्टी बाज़ी बहुत देर से शुरु किया। इसी वजह से मैं किसी भी committment में बंधन में फँसना नहीं चाहता।

वानी : मुझसे सच में प्यार करते, तो बंधन की बात कभी सोचते भी नहीं।

मयंक : मेरा प्यार सच्चा है वानी। कैसे समझाऊँ तुम्हें ? मैं....मेरी हालत उस बच्चे के जैसी है, जिसके tiffin box में कुछ chocolates बची हैं और वो धीरे-धीरे उन्हें खाना चाहता है।

वानी : हम दोनों क्यों इतनी बहस कर रहे हैं मयंक ?

मयंक : पता नहीं। तुम्हीं ने शुरू की थी।

वानी : अच्छा ठीक है मयंक। चलो सच का सामना करते हैं। तुम अपने मन में इन दो प्रश्नों के उत्तर दो। पहला, कि क्या मैं इस लड़की से शादी करना चाहता हूँ? दूसरा, कि क्या मैं इस लड़की से सिर्फ़ affair रखना चाहता हूँ बिना किसी commitment के ? और मुझे तुम सिर्फ़ अपना फ़ैसला बता दो। अगर तुम शादी के लिए तैयार नहीं हो तो कोई बात नहीं। मैं इसे स्वीकार कर लूँगी। मैं भागूँगी

नहीं, पर अपने सम्मान के लिए लडूँगी। हालाँकि मुझे मालूम है कि लड़ाई में जीत नहीं पाऊँगी। क्योंकि मैं तुमसे सच में प्यार करती हूँ और अगर तुम भी सच में मुझसे प्यार करते हो, तो तुम्हें मुझसे कहना होगा और मेरा हाथ तुम ज़िंदगी भर के लिए थामने को तैयार हो, ये बात मेरे और अपने घर वालों से भी कहनी होगी। बोलो, तैयार हो ? क्या फैसला है तुम्हारा ? हम चाहें तो अभी मंदिर जा सकते हैं या फिर तुम्हारे bedroom में ?

मयंक : बहुत ही मुश्किल में डाल दिया तुमने। क्या जवाब दूँ मैं ? बाप रे बाप। मतलब अगर मुझे तुम्हें लेकर अपने बेडरूम में जाना है अभी....तो मुझे सिर्फ़ कह देना होगा ?

वानी : ऊँचा-ऊँचा और साफ़-साफ़।

मयंक : पागल हो तुम। ख़तरनाक पागल।

वानी : मैं तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रही हूँ।

मयंक : क्या बोलूँ ? अगर मैं कहूँ कि चलो बेडरूम में चलो.....तो तुम चलोगी ? और अगर मैं तुमसे कहूँ कि मंदिर में चलो....तो भी तुम चलोगी ?

वानी : हाँ। इतना ही आसान है।

मयंक : मैं ये गेम नहीं खेलना चाहता। ये तो कौन बनेगा करोड़पति से भी मुश्कि़ल है।

वानी : तुम सच्चाई का सामना नहीं करना चाहते इसलिए तुम्हें मुश्कि़ल लग रहा है। कमाल है। तुम अपने आप से भी ईमानदार नहीं हो सकते।

मयंक : कैसे होऊँ ? मुझे तो मालूम ही नहीं कि मैं चाहता क्या हूँ ?

वानी : मैं ये नहीं कह रही कि तुम्हें मुझसे ज़बरदस्ती शादी करनी है। मैं सिर्फ़ जानना चाहती हूँ कि तुम्हारा इरादा क्या है ? क्या तुम मेरे साथ अपनी सारी ज़िंदगी बिताना चाहते हो ?

मयंक : मुझे नहीं पता......वानी......मुझे सच में नहीं पता।

अरे.......अरे.......कहाँ जा रही हो तुम ?

वानी : ऐसा लगता है कि तुम्हें सोचने के लिए समय चाहिए।

मयंक : नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।

वानी : मतलब तुमने अपना मन बना लिया?

मयंक : हाँ, मैंने अपना मन बना लिया।

वानी : ज़रा सुनें।

मयंक : तुम्हारा मतलब है...मैं कोई भी फ़ैसला करूँ तुम्हें पूरी तरह से मंजूर होगा?

वानी : 100%

मयंक : Ok.......o. fine.......हम bedroom की तरफ चलते हैं।

वानी : बहुत ही घटिया बात कही तुमने।

मयंक : देखा देखो, बुरा लगा न? अब तुम्हें मज़ा नहीं आ रहा?

वानी : मैं कोई शिकायत नहीं कर रही हूँ मयंक। (जाने लगती है।)

मयंक : एक मिनट....एक मिनट वानी....रूक जाओ...मैं मज़ाक कर रहा था। I am sorry. तुम्हीं ने मुझे ख़्वामख़ाह इस उलझन में डाल दिया।

वानी : नहीं मयंक....अगर मुझे तुम्हारे साथ सौदा करना ही है, तो अच्छा होगा कि मैं अपना बाकी सामान भी ले आऊँ। (उसे kiss करती हुए चली जाती है। घंटी बजती है। हंसल आता है।)

मयंक : अरे तुम कहाँ थे?

हंसल : भाई ये वही लड़की है ना?

मयंक : अरे तुम कहाँ चले गए थे?

हंसल : नीचे ही था। Sandwich खा रहा था। इसे कहते हैं भाई सुन्दर कन्या।

मयंक : तुम ऐसी सुन्दर बलाओं से दूर रहो।

हंसल : भाई मुझे तो लगा कि दूसरी लड़की भी आ गयी होगी।

मयंक : कौन सी दूसरी लड़की?

हंसल : वही जिसको आप फोन कर रहे थे। ऊपर वाली...कामया।

मयंक : अरे बाप रे। मैं भूल गया। (फोन की तरफ भागता है।)

हंसल : भाई, आपको मुझे अपना secretary बना लेना चाहिए।

मयंक : पता नहीं आज की रात मैं क्या करने वाला हूँ? अरे वो नंबर क्या था?

हंसल : ये भी क्या उतनी ही सुन्दर है जितनी वो थी?

मयंक : कामया? उससे भी ज़्यादा सुन्दर है। और commitment का भी कोई tension नहीं।

हंसल : कमाल है। कितनी अच्छी जगह है रहने के लिए। वो भी सिर्फ़ 3000 रुपये में।

मयंक : (फोन रख कर) अरे हाँ! तुमने सही कहा। हम तो सब कुछ शेयर कर रहे हैं ना? तुम क्यों नहीं उससे मिलते?

हंसल : किससे?

मयंक : अरे कामया से।

हंसल : क्या बात कर रहे हो भाई? मज़ाक कर रहे हो क्या?

मयंक : क्यों? वैसे भी नीचे आ ही रही है वो। उसे खाली हाथ भेजने का क्या फ़ायदा।

हंसल : पर वो तो आपसे मिलना चाहती है।

मयंक : रौशनी कम कर लो। परदे गिरा दो तो उसे पता ही नहीं चलेगा वो किससे मिलके गयी है।

हंसल : पर मयंक.....कहाँ मैं और कहाँ वो....मुझ जैसों को तो वो गोद में खिलाती होगी।

मयंक : जी नहीं। सिर्फ़ एक साल बड़ी है तुमसे।

हंसल : मैं उम्र की नहीं.....तजुर्बे की बात कर रहा हूँ। यहाँ आकर मुझे तो ये समझ में आया कि अभी तक मैंने अपनी सारी ज़िंदगी एक आश्रम में बिताई है।

मयंक : मेरा विश्वास करो हंसल। तुम पर वो मर मिटेगी।

हंसल : नहीं नहीं....मयंक....नहीं भाई....मैं....मैं उससे नहीं मिलूँगा।

मयंक : देखो....हंसल तुम मेरी बात मानो....उससे बात करो....उससे दोस्ती करो....ड्रिंक पियो.....just be friend. बाकी जो करना होगा वो ख़ुद करेगी।

हंसल : पर भाई.....मेरे और आपके सोचने में बहुत फ़र्क है...मैं तो लड़कियों से हाथ भी नहीं मिलाता।

मयंक : देखो हंसल, मेरा brithday gift due है ना? मैं तुम्हें वो देना चाहता हूँ जो तुम्हें आज तक नहीं मिला।

हंसल : मुझे नहीं चाहिए। मैं जैसे हूँ ख़ुश हूँ।

मयंक : मैं मन से ये महसूस कर रहा हूँ कि ये मेरा फ़र्ज है कि मैं तुम्हें उस दुनिया की सैर करा दूँ जिसकी चौखट पर एक ना एक दिन हर जवान लड़के को क़दम रखना ही होता है। क्या कहते हो हंसल? please......please हाँ कह दो.....हाँ कह दो हंसल।

हंसल : ठीक है। अगर आपको इससे ख़ुशी मिलती है, तो हाँ।

मयंक : हे....thanks बच्चे thanks (फोन की तरफ जाता है।) तुम देखना हंसल, सारा इंतज़ाम इतनी सफ़ाई से होगा कि तुम्हें कुछ भी कहने या करने की ज़रूरत नहीं होगी। (गाना गाता है।) आज उनसे पहली मुलाक़ात होगी.....फिर आमने-सामने बात होगी....फिर होगा क्या, क्या पता क्या ख़बर.....फिर होगा क्या, क्या पता क्या ख़बर.... (फोन पर) hello .....कामया? ....ya....नहीं नहीं.......एक मिनट एक मिनट......एक अच्छी ख़बर और एक बुरी ख़बर.... पहले बुरी ख़बर....अफ़सोस कि मुझे बाहर जाना पड़ रहा है.... अब अच्छी ख़बर के लिए तैयार हो जाओ......वो....यहाँ....आ.... चुका है......वही.......the producer शाम गोपाल वर्मा....

हंसल : क्या?

मयंक : आज की रात वो मेरे घर पर ही रुकने वाला है....और आपसे मिलने को बेताब है।

हंसल : मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए।

मयंक : (फोन पर) हाँ–हाँ....अभी....मैं तुम्हारे बारे में सब बता चुका हूँ।

हंसल : Please मयंक ....please.

मयंक : 10 मिनट में? ओके....अरे मुझे थैंक्स क्यों कह रही हो।

क्या मैं तुम्हारे लिए इतना भी नहीं कर सकता, ok bye......(फोन रखता है।) ball अब उसके कोर्ट में आ चुकी है। बच्चे....तुम्हें कुछ नहीं करना है.......सिर्फ़ अपना बल्ला घुमाते रहो.....

हंसल : ये आपने क्या कह दिया....मैं producer?

मयंक : तो तुम Director होना चाहते हो? मैं अभी उसे बता देता हूँ। (फोन की तरफ जाने लगता है।)

हंसल : पर आपने उससे ऐसा कहा क्यों?

मयंक : ताकि तुम्हारा काम आसान हो जाए।

हंसल : आसान?

मयंक : अब तुम पर कोई प्रेशर नहीं। सारा प्रेशर उस पर है।

हंसल : अब मैं क्या करूँ?

मयंक : करना कुछ नहीं है हंसल। उस पे फिल्मों का भूत सवार है। उसे एक मौक़ा मिल गया अपने talent को दिखाने का।

हंसल : तो मैं क्या करूँ? उसे स्टार बना दूँ?

मयंक : नहीं....अपनी फिल्म में एक छोटा सा रोल दे दो।

हंसल : कौन सी फिल्म?

मयंक : मुझे क्या पता? तुम एक फिल्म नहीं बना सकते? बैठे–बैठे कोई भी एक नया काम ले लो। जैसे....प्यार हुआ तेरी छत पे।

हंसल : फ़िलहाल तो मुझे अपना ही नाम नहीं पता।

मयंक : (शशि कपूर स्टाइल में) तुम भाई हो....मेरे भाई...जब वक़्त आएगा. ...तुम कर के दिखा सकते हो।

हंसल : 21 साल का bollywood का producer ? हे भगवान।

मयंक : अच्छा हंसल मैं चलता हूँ। मुझे देर हो रही है।

हंसल : एक...एक मिनट। कितनी देर में वो आने वाली है?

मयंक : 10 मिनट।

हंसल : 10 मिनट? अगर मैं मर गया....और उसने पुलिस को बुला लिया. ...तो....वो तो मुझे.....फिल्मसिटी में ही दफना देंगे।

मयंक : आज की रात, तुम्हारी ज़िंदगी की सबसे हसीन, सबसे रंगीन और सबसे exciting रात होने वाली है और एक दिन हंसल तुम इसके लिए ज़रूर मुझे दुआऐं दोगे। (जाने लगता है।)

हंसल : भाई रूको......क्या मुझे आने से पहले फोन करोगे?

मयंक : मैं फोन करूँगा....मैं घंटी बजाऊँगा.....मैं दूर से खाँसूगा....तुम बेफ़िक्र रहो हंसल.....सब ठीक होगा......bye bye हंसल.....and happy birthday.....(अर्थपूर्ण ढंग से) जन्मदिन की ढ़ेर सारी शुभकामनाऐं। (मयंक चला जाता है। हंसल घबराया हुआ है।)

हंसल : Happy birthday ?....मेरा भाई मुझे जन्मदिन के गिफ्ट में एक शर्ट भी तो दे सकता था...ये किस जंजाल में फँसा दिया मुझे?

(थोड़ी देर पेट पकड़ कर खड़ा रहता है। फिर दोनों गिलास उठा कर टेबल पर रख देता है। फिर अपना jacket उतारता है। अन्दर से एक दूसरा jacket ले आता है। उसे समझ नहीं आ रहा कि किसे पहने। Coffe Table पर रखा हुआ cigarette उठाता है। घंटी बजती है। घबरा जाता है और ज़ोर से बोलता।)

हंसल : आया.....एक मिनट....एक मिनट....अभी आया....(cigarette वापस रख देता है। jacket उठाता है और पलंग पर रख देता है। फिर दरवाज़े की ओर भागता है और अपने आप को control करता है। दरवाज़ा खोलता है। यहाँ 50 वर्षीय एक परेशान महिला दिखाई देती है।)

हंसल : माँ......

महिला : अरे बेटा....बड़ा अच्छा लगा ये देख कर कि तुम यहीं हो।

हंसल : माँ.....तुम यहाँ?

अंक-2

समय : आज।

मयंक का bachelor apartment ।

(Mrs. Patel एक ऐसी भारतीय माँ, जिसे हर चीज़ में दु:ख ढूँढने की आदत पड़ गयी है। हालाँकि कपड़े और वेशभूषा से वो समय के साथ हैं, लेकिन विचारों से वो पुरानी हैं। पुराने संस्कारों और रूढ़ियों से चिपकी हुयी हैं। और इसी वजह से उसके रोने धोने को गंभीरता से नहीं लिया जा सकता।)

हंसल : माँ...माँ....तुम ठीक हो ना?....माँ...सब ठीक है ना?

माँ : बेटा....एक गिलास ठंडा पानी पिला दे बेटा....रिक्शे में आते-आते मेरा तो दम निकल गया। घर में दो-दो गाड़ियाँ है, पर क्या फ़ायदा. ..आह....ऊह...

हंसल : माँ....आप यहाँ क्यों आयी? मतलब....किसलिए आयी?

माँ : आह! मेरा सर चकरा रहा है बेटा....इस गर्मी ने तो मेरी जान ले ली. ...मुझे तो लग रहा है मैं आज ही मर जाऊँगी।

हंसल : माँ....क्या चाहिए आपको?

माँ : पानी बेटा....पानी। एक गिलास ठंडा पानी बेटा....आह....ओह.... आह.... (हंसल दौड़ कर पानी ले आता है) हाय! मेरी तो क़िस्मत ही फूटी है। पता नहीं पिछले जन्म में कौन से पाप किये थे, जिनकी सज़ा अभी मिल रही है। हाय....मेरा जी मितला रहा है... आह....

हंसल : माँ....पानी। (माँ पानी का सिप लेती है।)

माँ : ओह.....अभी भी सर घूम रहा है....सर गोल-गोल घूम रहा है। (गिलास टेबल पर रखती है) आह...थोड़ा दम ले लूँ....आह!

हंसल : माँ, आपको खुली हवा में साँस लेनी चाहिए। बाहर।

माँ : थोड़ी देर के लिए आराम कर लेने दे बेटा, मयंक कहाँ है?

हंसल : बाहर। बिज़नस के सिलसिले में। अब थोड़ा सुकून मिल रहा है

माँ?

माँ : आह! सुकून मेरी ज़िंदगी में कहाँ है बेटा।

हंसल : असल में माँ....वो मुझे भी किसी से मिलना है। एक ज़रूरी appointment है।

माँ : खाना खा लिया बेटा?

हंसल : हाँ....हाँ, मैंने बस अभी sandwich खा लिया था।

माँ : क्या? खाने में sandwich? एक sandwich से कैसे पेट भरेगा तुम्हारा?

हंसल : मुझे भूख नहीं है माँ....और एक....बहुत ज़रूरी appointment है।

माँ : Sandwich कौन-सा खाया बेटा?....चल मैं तेरे लिए परांठा बनाती हूँ।

हंसल : नहीं माँ, मुझे परांठे नहीं खाने। मैंने बड़ा वाला russian sandwich खा लिया था।

माँ : छि: छि:....इस घर को तो देखो, कितनी धूल जमी हुई है।

हंसल : चलता है माँ, bachelor का घर है।

माँ : हाँ...मुझे पता है। महीनों से कोई सफ़ाई नहीं होती होगी यहाँ।

हंसल : माँ....वो....एक लड़की आ रही है।

माँ : सफ़ाई करने?

हंसल : नहीं माँ....सफ़ाई करने नहीं। मुझसे मिलने, फ्रैंड है मेरी।

माँ : आह! हंसल बेटा, मुझे तुम्हारे पापा के बारे में कुछ बात करनी थी।

हंसल : क्या हम वो कल नहीं कर सकते? वो...बस थोड़ी देर में आती होगी।

माँ : अच्छा, अब वो मुझसे ज़्यादा important हो गयी?

हंसल : माँ....तुमसे ज़्यादा important कोई नहीं है।

माँ : बेटा मुझे तेरी बहुत चिंता हो रही है। जब तक खाना तुम्हारे सामने परोस कर ना रखा जाए तब तक तुम खाते ही नहीं।

हंसल : अरे माँ, कोई नहीं खा सकता जब तक खाना उसके सामने ना रखा जाए।

माँ : (दुःखी होकर) तुम चाहते हो मैं जाऊँ? ठीक है मैं जाती हूँ।

हंसल : माँ प्लीज़, आप ऐसे मत कहें। ये मीटिंग बहुत अचानक आ गयी। अब मैं क्या करूँ। मैं avoid नहीं कर सकता।

माँ : हंसल बेटा, तेरे पापा थोड़ी ही देर में घर पहुँचने वाले हैं। हाय तौबा! तुमने उन्हें फोन पर चिल्लाते हुए नहीं सुना, फोन कंपनी वाले सुन लेते तो घर का फोन connection ही काट देते।

हंसल : माँ, अभी ये सब बात करने का समय नहीं है मेरे पास।

माँ : हाँ। लड़कियों से मिलने का समय है, मेरे लिए नहीं है?

हंसल : माँ, ये एक प्रोजेक्ट की मीटिंग है। मैं एक स्टोरी पर काम कर रहा हूँ। और ये देर रात तक चलेगी।

माँ : पढ़ने दो उन्हें तुम्हारा लेटर, जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि तुम घर से भाग गए हो, बहुत बड़ा तमाशा खड़ा करेंगे। याद है जब मयंक घर छोड़ के निकला था तब क्या किया था?

हंसल : याद है माँ, परेशान थे।

माँ : परेशान? अच्छी तरह से याद है मुझे। तीन बजे दुकान से लौट कर घर आये थे और सीधे अपने बिस्तर पर जा कर लेट गए। और फिर 4 दिन तक बाहर नहीं निकले थे। लेटे रहे वो मरने के लिए।

हंसल : पर वो मरे तो नहीं न माँ। बल्कि और वज़न बढ़ा लिया।

माँ : तुम्हें क्या लगता है, वो दुःखी नहीं थे? मुझसे पूछो, मयंक के जाने का उन्हें कितना दुःख हुआ? मुझसे पूछो। (रोते हुए) यही कहते हैं कि अगर अभी मयंक की शादी हो गयी होती तो हमारा भी एक पोता हो गया होता। पता नहीं मयंक की शादी कब होगी? और अब तुम....

हंसल : माँ प्लीज़....माँ...माँ....प्लीज़

माँ : मुझे मालूम है वो आज की रात क्या कहने वाले हैं। सारा दोष वो मुझ पर ही मढ़ देंगे। हमेशा कहते हैं कि मैंने ही तुम दोनों को सर

पे चढ़ाया है। तुम दोनों को निक्कमा बना दिया। वो कहेंगे...मुझे मालूम है वो कहेंगे। लीला बुआ के दो-दो नाती है और मेरे पास एक निखट्टू है और एक ये चिट्ठी। मैं जानती हूँ।

हंसल : माँ....माँ...देखो। कैसा रहेगा अगर हम ये बात कल घर पर आकर खाना खाने के बाद करें तो? तब डैड से भी detail में बात हो जायेगी। मैं उन्हें हर चीज़ समझा दूँगा।

माँ : कल? कल तक तो वो अपनी सारी वसीहत लिख देंगे। अपने सारे रिश्ते नातों को bye-bye कह देंगे।

हंसल : अरे माँ, वो ऐसा कुछ नहीं करने वाले। कभी-कभी वो ज़रूरत से ज़्यादा ही नाटक करते हैं।

माँ : (नाटकीय अंदाज में रोते हुए) शायद सारी गलती मेरी ही है। मैं भी दूसरी माताओं की तरह होती जो अपने बच्चों के हर काम में रोक टोक लगाती हैं, तो शायद सब ठीक होता। सारी गलती मेरी है।

हंसल : नहीं माँ, तुम्हारी जैसी माँ तो इस दुनियाँ में किसी की हो ही नहीं सकती। अच्छा अब कैसा feel कर रही हैं आप?

माँ : मुझे कैसे पता चलेगा? मैं तो कुछ feel ही नहीं कर रही। बस जी मितला रहा है।

हंसल : रात को अच्छी तरह सोओगी तो सब ठीक हो जाएगा। हाँ, बस सोते-सोते गरम दूध पी लेना।

माँ : जब तू ही नहीं तो घर में दूध किसके लिए आएगा।

हंसल : क्या माँ....आप भी। अरे आप चाय तो पियेंगी ना?

माँ : हाँ, शायद चाय पीने से कुछ जी ठीक हो जाए।

हंसल : आप हमेशा इतना emotional क्यों होती हो माँ?

माँ : अरे बेटा, विश्वास कर। मैं जान बूझ कर ऐसा नहीं करती।

हंसल : माँ, सब ठीक हो जायेगा। अब फ़िक्र मत करो। बस आप घर जाओ और सो जाओ।

माँ : चलो कल तुम आओगे ये जानकर अच्छा लगा।

हंसल : सिर्फ़ खाने पर। That I promise.

माँ : (चलते-चलते रुकती है) क्या खायेगा बेटा? क्या पकाऊँ तेरे लिए?

हंसल : कुछ भी माँ। कुछ भी पका लेना।

माँ : मैं तुम्हारी पसंद का खाना बनाऊँगी। अब तूने घर जो छोड़ दिया है।

हंसल : मुझे तुम्हारे हाथ का सब कुछ पसंद है माँ। कढ़ी बना लेना। ठीक है?

माँ : ठीक है, अगर दम आलू बनाऊँ तो कैसा रहेगा?

हंसल : Ok great. बहुत अच्छा।

माँ : साथ में मटर पनीर बना लूँ?

हंसल : ओह...For God sake माँ....कुछ भी बना लेना....प्लीज़

माँ : चिल्ला क्यों रहा है बेटा, ये सब मैं तेरे लिए ही तो करूँगी। ख़ुद के लिए थोड़ी। वैसे भी मैं 10 साल से खिचड़ी पर ही जी रही हूँ।

हंसल : Sorry...I'm sorry...माँ.....I'm sorry.

माँ : आह! मेरा दिल फिर से घबराने लगा।

हंसल : कोई बात नहीं माँ....अभी....अभी ठीक हो जाएगा।

माँ : नहीं बेटा, कल मैंने छोले भठूरे खा लिए थे ना। इसलिए लगता है थोड़ी acidity हो गयी है। तुम लोगों के यहाँ ENO है क्या?

हंसल : ENO? मैं kitchen में देखता हूँ।

माँ : उसकी बुरी नज़र लग जाती है। जब-जब वो लीला बुआ घर आती है, तब-तब उसकी बुरी नज़र लग जाती है।

हंसल : माँ, यहाँ ENO नहीं है। आप एक काम करो, टैक्सी लेकर घर चली जाओ। आराम से सोते हुए जाना।

माँ : बेटा बाहर बरसात शुरु होने वाली है। ऐसे में टैक्सी कहाँ मिलेगी मुझे?

हंसल : मैं टैक्सी लेकर आता हूँ, Ok ? मैं टैक्सी लेकर आता हूँ। (दरवाज़े तक जाता है।) आप नीचे लिफ़्ट के पास रुकना चाहेंगी ?

माँ : नहीं, मैं यहीं बैठ जाती हूँ पाँच मिनट।

हंसल : 5 मिनट ? मैं...मैं....watchman को टैक्सी के लिए बोल देता हूँ।

माँ : ऐसा भी क्या तूफ़ान आ रहा है ?

हंसल : मैं आता हूँ....2 मिनट में।

माँ : भाग क्यों रहा है बेटा ? परेशान मत....हे भगवान ! मैं किससे बात कर रही हूँ ? (अपना बैग कुर्सी पर रख देती है। ashtray उठाती है। उसे दूसरे ashtray में डाल देती है और उसे लेकर kitchen की तरफ जाने लगती है। तभी फोन की घंटी बजती है।) हैलो, कौन बोल रहे हैं ?....नहीं, वो घर पर नहीं है। क्या मैं जान सकती हूँ कि मैं किससे बात कर रही हूँ ? विनीत ! विनीत आहुजानी ? नहीं, मैं मयंक की माँ बोल रही हूँ। क्या ? मैं क्यों मज़ाक करने लगी ? मैं आपसे कह रही हूँ ना, मयंक यहाँ नहीं है। मैसेज ? एक मिनट, मैं पेन ढूँढ लूँ। (पेन ढूँढने के लिए इधर-उधर जाती है। निराश होकर वापस फोन पर आती है।) आप बोलिए मैं याद रखती हूँ। और तेज़-तेज़ बोलिए ताकि मैं उसे ज़ल्दी से लिख लूँ। ''बहुत important है। तुम्हारी पत्नी नागपुर से अचानक वापस आयी और होटल J.W. Marriot की ओर आ रही है। इसीलिए मयंक इस बात का ख़्याल रखे कि अपनी पार्टी को लेकर होटल ना आये।'' हाँ, मैंने याद कर लिया। हाँ-हाँ मुझे मालूम है। अभी मैं बोल नहीं सकती लेकिन मुझे याद है। Mr. Aahujani... होटल J.W. Marriot जी हाँ, आप ज़्यादा बोलिए मत मैं लिख लूँगी। good bye. (फोन रखती है) कमाल का मैसेज था। मैसेज नहीं, पूरी कहानी थी। पेन....अब पेन कहाँ मिलेगा ? घर में इनके पास eno नहीं है और ये लोग पेन रखेंगे। (फोन की घंटी बजती है।) हे भगवान ! मैं तो telephone operator बन गयी हूँ। हैलो, नहीं वो घर पर नहीं है। मैं मयंक की माँ बोल रही हूँ। मैं क्यों मज़ाक करने लगी ? मैं किससे बात कर रही हूँ ? कौन ? लोपमुद्रा ? ये नाम है ?

तुम कौन-सा होटल भूल गयी? Mr. Ahujani का? मुझे ये नाम कहाँ से पता चलता? अभी उसका भी थोड़ी देर पहले फोन आया था। मयंक के लिए मैसेज था। कुछ नागपुर के बारे में कह रहा था कि मयंक वहाँ ना जाए। मुझे भी समझ में नहीं आया इसका मतलब क्या है। अरे! मैं उसकी माँ हूँ। कोई secretary थोड़ी हूँ। होटल का नाम? हाँ, उसने कहा तो था! हाँ, शायद मुद्रा। ओह! अच्छा ये तुम्हारा नाम है? अच्छा रुको। हाँ, याद आया...J.W. Marriot। मयंक के लिए मैसेज? मैं तो बस कोशिश ही कर सकती हूँ बेटी। ''लोपमुद्रा traffic में फँस गई है....पर वो थोड़ी देर में J.W. Marriot पहुँच रही है।'' हाँ-हाँ, याद रहेगा...good bye. (फोन रखती है) कुछ गड़बड़ लग रही है मुझे तो। एक businessman और एक MBA की study कर के आया है लेकिन पेन किसी के पास नहीं है। इनके पापा को बताना पड़ेगा। (फोन की घंटी फिर बजती है।) हे भगवान! (फोन से) ठीक है ठीक है. ...आखिर चाहते क्या हो मुझसे? (फोन उठाती है) हैलो....कौन? आपको क्या चाहिए? नहीं, मयंक यहाँ नहीं है....मैं उसकी माँ बोल रही हूँ। फिर से ये सवाल मत पूछो मुझसे। आप हैं कौन? वानी? फिर एक मैसेज? क्या आप ख़ुद नहीं लिख सकती हैं? मेरे पास पेन नहीं। है....क्या? हाँ...हाँ....हाँ, thank you. good bye. (फोन रखती है) good bye...go home....good luck... पता नहीं? क्या-क्या बोल के गई? (पलंग पर बैठ जाती है और रोने लगती है।) इतने फोन क्यों आते हैं यहाँ? मैं तो परेशान हो गई। (फोन बजता है और वो चिल्लाती है।) क्या चाहिए तुम्हें मेरी ज़िंदगी से? (फोन की तरफ घूरती रहती है और घंटी बजती रहती है।) मैं नहीं उठाऊँगी। चाहे कुछ भी हो जाए। (घंटी बजती रहती है।) हे भगवान! मेरा सर चकरा रहा है। (घंटी बजती रहती है, वो गुस्से में फोन उठाती है।) हैलो, क्या चाहिए तुम्हें?....कौन हो तुम?....मयंक कौन? अरे मयंक बेटा! (रोने लगती है।) मैं माँ बोल रही हूँ। मैं यहाँ क्या कर रही हूँ? तेरे फोन के जवाब दे रही हूँ। वो बाहर गया है ट्रेन लाने...अ...मेरा मतलब है टैक्सी लाने।

नहीं यहाँ पर और कोई नहीं है। किसी ने फोन किया? अरे पूरी दुनियाँ ने किया। पहले एक आदमी का फोन आया था। आहुजानी? नहीं, ऐसा तो नहीं लग रहा था। (तभी दरवाज़ा खुलता है और हंसल तेज़ी से आता है।)

हंसल : चले माँ?

माँ : (फोन पर) मुझे अभी जाना होगा। हंसल टैक्सी लेकर आ गया है। तुम उससे बात कर लो।

हंसल : हाँ, टैक्सी आ चुकी है। टैक्सी नीचे wait कर रही है।

माँ : (उसे फोन देते हुए) ये ले।

हंसल : किसका है?

माँ : मंयक।

हंसल : हैल्लो, भाई। क्या गड़बड़ हो गयी? मुझे नहीं पता, मैं तो बाहर था। (माँ से) माँ किसी ने फोन किया?....

माँ : मैंने सारे मैसेज मयंक को दे दिए। मैं चलती हूँ। bye-bye बेटा।

हंसल : माँ, किसी ने फोन किया था? किसी लड़की ने?

माँ : हाँ–हाँ। हंसल, good bye.

हंसल : तो उसने कहा क्या?

माँ : मुझे याद नहीं।

हंसल : पर आपने लिखा क्यों नहीं?

माँ : पेन है तुम लोगों के घर में? लिखती कैसे? बेकार के सवाल मत पूछो मुझसे। जी घबरा रहा है मेरा। कहीं टैक्सी में ही चक्कर ना आ जाए। (चली जाती है)

हंसल : माँ–माँ। रूको। माँ सुनो। (फोन पर) हैलो भाई, मुझे नहीं पता। कुछ समझ ही नहीं आया वो क्या कह गयी? आप हो कहाँ? नहीं अभी तक तो नहीं आयी। बहुत nervous feel कर रहा हूँ। एक ड्रिंक तो पहले ही ले चुका हूँ। कोई मदद नहीं मिल रही उससे। अरे–अरे, एक मिनट एक मिनट....राम गोपाल शर्मा.....वर्मा?....

श्याम गोपाल वर्मा? Oh god! देखो भाई, मैंने अपना इरादा बदल दिया है। मैं ये सब नहीं करने वाला। मैं बाहर जा रहा हूँ। अभी... अभी....मैं एक नोट छोड़ देता हूँ आपकी तरफ से। (पेन ढूँढने लगता है और एक cabinet के shelf के अन्दर से 2 दर्जन पेन निकाल लेता है।) 8 हजार पेन और कोई पेपर नहीं। (पलंग के पीछे से झुक कर कुछ पेपर निकालता है और लिखने लगता है) ''Dear कामया, एक बुरी खबर। हरी....गोपाल वर्मा अब इस दुनियाँ में नहीं रहे......love....मयंक।'' (वो पेन रख देता है, चिट्ठी फिर से पढ़ता है और दरवाजे के नीचे चिट्ठी रखने ही जाता है कि घंटी बजती है। घबरा जाता है। घंटी फिर बजती है। वो दरवाज़ा खोलता है। बाहर कामया खड़ी है। बहुत सुन्दर कपड़े पहने।)

कामया : Hi, I'm कामया। मैं आपको disturb तो नहीं कर रही?

हंसल : नहीं–नहीं....बिल्कुल नहीं।

कामया : मयंक ने मुझसे कहा कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं। माफ कीजियेगा मैं ठीक से तैयार होकर नहीं आ पाई। दिन भर कार में थी न?

हंसल : कोई बात नहीं। आप काफ़ी अच्छी दिख रही है। (नोट फाड़ता है और उसके टुकड़े जेब में डाल लेता है।)

कामया : Thanks. आप ऐसा कह रहे हैं, तो कुछ तो बात होगी। आप पिछली बार resort में नहीं आ पाए?

हंसल : Resort? कौन सा resort?

कामया : अलीबाग....खंडाला....? पता नहीं, मुझे नाम तो याद ही नहीं रहते। माफ़ कीजियेगा मैं तो आपका नाम भी भूल गई।

हंसल : ओह! अच्छा?

कामया : हाँ, याद आया। मि. वर्मा।

हंसल : रवि वर्मा! नहीं–नहीं...रवि नहीं...

कामया : हाँ...सही कहा....रवि

हंसल : हाँ–हाँ....रवि....रवि....आप बैठिये ना।

कामया : (बैठ जाती है) Thank You. मैंने सुना, शूटिंग में कुछ प्रॉब्लम आयी थी?

हंसल : हाँ.....कुछ प्रॉब्लम थी।

कामया : क्या प्रॉब्लम थी? (कामया cigarette जलाती है।)

हंसल : वो....वो...वहाँ पे (cigarette देखता हुआ)....आग....आग...आग लग गयी थी।

कामया : कहाँ?

हंसल : वो....वहीं पे....शूटिंग में....सेट का एक हिस्सा जल गया था।

कामया : ओह....किसी को चोट तो नहीं आयी?

हंसल : नहीं....बस कुछ junior artist.... आप क्या पियेंगी?

कामया : पता नहीं....मैं थोड़ी nervous हूँ।

हंसल : आप nervous hain ? क्या पीना चाहेंगी?

कामया : आप क्या पी रहे हैं?

हंसल : Whiskey and orange juice.

कामया : ओह....so cute! मैं grand marnier लूँगी।

हंसल : Grand maa? Grand maa कौन?...

कामया : Grand marnier. It's French. You know a liquor.

हंसल : ओह अच्छा! पर यहाँ तो कुछ दिख नहीं रहा।

कामया : ओह! तो whiskey मेरे लिए ठीक है। (वो ड्रिंक serve करता है) शायद ये बात आपने भी सुनी होगी कि एक producer के लिए आप काफी young हैं।

हंसल : अच्छा, ऐसा है क्या?

कामया : आपको देख के ऐसा लगता है कि आप 26 से ज़्यादा नहीं हैं।

हंसल : अच्छा, ऐसा है क्या?

कामया : Let's make a silent toast. (दोनों आँखें बंद करते हैं और cheers करते हैं लेकिन कामया बीच में एक आँख खोल के देख लेती है)

Well, down to business.

हंसल : जी।

कामया : आप ये शायद जानना चाहेंगे कि मैंने आज तक क्या किया?

हंसल : नहीं, कोई ज़रूरी नहीं।

कामया : मैं आपसे ईमानदारी से कहूँगी, मैंने किसी फिल्म में काम नहीं किया।

हंसल : ओह! ऐसा है क्या?

कामया : लेकिन मेरे पास अनुभव है।

हंसल : हाँ....वो मयंक ने मुझे बताया।

कामया : पिछले साल मैंने एक horror show में काम किया था।

हंसल : सच में?

कामया : मैं लाश बनी थी....Dead body no. 6.

हंसल : हाँ, शायद मैंने वो horror show देखा था।

कामया : बहुत लोगों ने देखा था। सूरत और अहमदाबाद से तो इतने फोन आए कि पूछो मत। पर मैं कुछ अच्छा काम करना चाहती हूँ इसलिए मैं acting classes ले रही हूँ, बिरेन्द्र सर से। वो भी इसी बिल्डिंग में रहते हैं। उन्हीं की वजह से तो मैं मयंक से मिली। एक रात मैंने गलती से इस घर की घंटी बजा दी और...(इस लाइन के दौरान उसके घुटने पर हाथ रख लेती है और वो nervous होते हुए हँसता है।)

हंसल : कमाल है....सच में....कमाल है।

कामया : देखो न, मेरी एक छोटी सी भूल की वजह से आज मैं बॉलीवुड के एक बहुत बड़े producer के सामने audition दे रही हूँ। Life is funny...Isn't it?

हंसल : Yes yes.......Funny.....it's a joke.....a big joke.

कामया : (खड़ी होकर) क्या आप चाहते हैं कि मैं कुछ करके दिखाऊँ?

हंसल : कुछ करके मतलब?

कामया : जैसे एक सीन....या...कोई item song. आप म्यूज़िक बजाइए.... मैं....मैं कुछ करती हूँ....या सिर्फ़ ऐसे ही बात करते रहे?

हंसल : अ....Actually मैं बहुत थक गया हूँ।

कामया : ओह! क्या आप चाहते हैं कि मैं मसाज करूँ?

हंसल : मसाज?....यहाँ?

कामया : (उसके माथे पर हाथ रखती हुयी) अब....आप आँखें बंद कर लीजिये....मैं मसाज करती हूँ।

हंसल : मुझे नहीं लगता कि....

कामया : मैं बहुत अच्छा मसाज करती हूँ। मैंने इसका कोर्स भी किया है। आप relax रहिये। और अपनी सारी फिल्मों के बारे में सोचना भूल जाइए। आप हल्की-हल्की और लम्बी साँसें लीजिए। पता है मैं योगा भी जानती हूँ, रामदेव जी के साथ सुबह-सुबह 5 बजे योगा करती हूँ। गहरी साँस लीजिए और relax कीजिए। नहीं-नहीं, आप relax नहीं कर रहे हैं। आप अभी भी आग के बारे में सोच रहे हैं।

हंसल : नहीं-नहीं, मैं आग के बारे में नहीं सोच रहा था। (घंटी बजती है, और वो उछल पड़ता है।)

कामया : क्या आपने किसी को बुलाया है?

हंसल : मैंने? नहीं-नहीं, किसी को नहीं। (फोन की तरफ जाता है) मैं देखता हूँ कौन बदतमीज़ है। हेल्लो...डैड?....अ...अ.. I am sorry. मैं चिल्ला नहीं रहा....अभी?...अ..डैड देखो...मैं नीचे आ जाता हूँ. ..ओके? डैड...डैड...डैड...हे भगवान! (फोन रख देता है)

कामया : कोई प्रॉब्लम हुई?

हंसल : हैं? क्या? असल में कोई है, जो मुझसे मिलना चाहता है....लेकिन मैं उससे मिलना नहीं चाहता...पर फिर भी वो मुझसे मिलना चाहता है....एक...एक actor है।

कामया : डैड ? मुझे लगा जैसे आपके पापा हैं।

हंसल : पापा ? नहीं–नहीं, उसका एक फिल्मी नाम है। जैसे brad.....brad pitt...वैसे dad....dad shit अ....अ...मतलब dad swift.

कामया : ओह ! तो डैड ऊपर आ रहे हैं ?

हंसल : हाँ। डैड ऊपर आ रहे हैं। तुम मेरे लिए एक favor करोगी ? Actually मुझे उसके साथ थोड़ा वक्त अकेले में बिताना है। Script discuss करनी है।

कामया : ओह ! मैं समझी। मैं ऊपर जा कर तब तक grand marnier की bottle ले आती हूँ।

हंसल : हाँ–हाँ, क्यों नहीं। (वो दरवाज़े की तरफ से जाने लगती है) अरे वहाँ से नहीं....

कामया : क्यों क्या हुआ ?

हंसल : मैं नहीं चाहता कि उसे पता चले कि मैं किसी और का audition ले रहा हूँ। उसके भी दिमाग में कोई और है।

कामया : ओह अच्छा ? ये बात है। Thanks a lot Mr. Verma. (वो उसे किस करके जाती है। हंसल अपना jacket उतारता है। दोनों गिलास टेबल से उठा कर bar में रख देते हैं। जिसमें लिपस्टिक का निशान है उसे अपने रूमाल से पोंछता है। घंटी बजती है। रूमाल को अपनी जेब में ठूँस देता है। घबराहट में ऐसा कर नहीं पाता, तो रूमाल को फेंक देता है। बुक शेल्फ़ से किताब उठाता है। दरवाज़े की तरफ जाता है। ख़ुद को नियंत्रित करते हुए जैसे वो सारी शाम से पढ़ रहा है। दरवाज़ा खोलता है। पापा अन्दर आते हैं हाथ में लेटर लिए)

हंसल : हैलो डैड, प्रणाम। आप ठीक तो हैं ? यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी। मैं तो सुबह आने ही वाला था। और आपसे बात करना भी चाहता था....ऑफिस में। माँ से भी मैंने कह दिया था कि मैं कल शाम को आऊँगा ताकि मैं आपसे सारी बातें आराम से कर सकूँ। आप ग़ुस्सा तो नहीं हैं ना डैड ?

पापा : मैं? क्यों? मैं क्यों ग़ुस्सा होऊँगा?

हंसल : वो....उस.....लेटर की वजह से।

पापा : कौन–सा लेटर?

हंसल : डैड ये लेटर.....ये जो आपके हाथ में है....जो मैंने आपको लिखा।

पापा : तुमने? तुमने ये लेटर थोड़ी लिखा है। ये लेटर जिसने लिखा है मैं उसे नहीं जानता। तुम्हें तो मैं जानता हूँ। इस आदमी से मैं आज तक नहीं मिला।

हंसल : डैड....क्या ये ज़्यादा अच्छा नहीं होगा अगर हम इस बारे में कल बात करें?....शान्ति से। मैं आपसे ख़ुद detail में बात करना चाहता था।

पापा : बात करने के लिए अब बचा ही क्या है? (लेटर उठाते हुए) तीर तो कमान से निकल चुका है। Signed sealed and delivered. आज़ादी का प्रमाण पत्र निकल चुका है। अब क्या बात करें?

हंसल : डैड....मुझे लगता है कि इस वक़्त आप बहुत परेशान हैं...हमें.... ज़्यादा बात नहीं करनी चाहिए।

पापा : ख़ैर, मुझे इसकी आशंका थी। अपने भाई के साथ तुम ज़्यादा वक़्त बिताते हो, इसलिए ये तो होना ही था। मेरी बहन लीला के दो–दो नाती हैं। और मेरे पास....एक निखट्टू और एक ये letter।

हंसल : डैड वैसे ये सब अचानक नहीं हुआ। मैं उस दिन आपसे बात करना चाह रहा था लेकिन आप सुन ही नहीं रहे थे।

पापा : ये मत बोलो कि मैंने सुना नहीं। हमेशा सुनता रहा हूँ तुम सब की।

हंसल : पर जब भी मैं कोई बात कहना चाहता था आपसे, तो आप कमरे से बाहर निकल जाते थे।

पापा : थोड़ी इज़्ज़त से बात करते तो शायद मैं सुनता।

हंसल : डैड....आपकी बातों में कोई logic नहीं है।

पापा : मतलब मैं logically बात नहीं करता? बहुत अच्छे। बहुत अच्छा तरीका है अपने बाप से बात करने का।

हंसल : फिर कैसे बात करूँ मैं आपसे? आप क्या चाहते हैं? कैसे बात करूँ?

पापा : मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ, तमीज़ से। तुम्हारी उम्र का छोटा लड़का अपने माँ-बाप के साथ घर पर क्यों नहीं रह सकता।

हंसल : छोटा लड़का?

पापा : तमीज़ से।

हंसल : डैड....मैं 21 साल का हो गया हूँ।

पापा : हाँ-हाँ तुम 21 साल के हो।

हंसल : आप तो ऐसे कह रहे हैं डैड, जैसे मैं झूठ बोल रहा हूँ। मैं कल 21 साल का हुआ, हुआ कि नहीं?

पापा : हाँ तो? कोई बड़ी बात है क्या?

हंसल : क्या मतलब है डैड आपका?

पापा : तमीज़ से।

हंसल : ठीक है डैड, ठीक है। मैं ये कहना चाहता हूँ कि मैं 21 साल का हो गया हूँ और ये उम्र काफ़ी होती है किसी के लिए, अपनी ज़िंदगी में अपने फैसले लेने के लिए। आप जब 21 साल के थे तो...तो... आपकी तो शादी हो गयी थी, है ना?

पापा : तुम थे वहाँ पे?

हंसल : नहीं, मैं तो नहीं था। आप ही ने बताया था।

पापा : तब की बात और थी, मैं 11 साल का था जब मैंने काम शुरु किया था।

हंसल : अच्छा डैड ठीक है। ठीक है, मैं तमीज़ से ही बात कर रहा हूँ पर क्या है कि....आप....मेरे सवालों का कभी ठीक से जवाब देते नहीं हैं।

पापा : ओह अच्छा। क्योंकि मैं तुम्हारे भाई और उसके फिल्मी दोस्तों की तरह लच्छेदार भाषा में बात नहीं करता।

हंसल : अब ये फिल्मी दोस्त कहाँ से आ गए डैड?

पापा : क्यों? उन्हीं के साथ तो घूमता रहता है। पार्टियाँ, trekking और ना जाने क्या-क्या। पिछले दस सालों में एक भी दिन उसने कभी 12 घंटे ठीक से काम नहीं किया। और अब तुम भी वही करने वाले हो।

हंसल : नहीं डैड, ऐसा नहीं है। मैं वहाँ 12 क्या, 18 घंटे काम करूँगा। आप जैसा कहेंगे वैसा करूँगा। चाहे....चाहे मुझे अच्छा लगे या बुरा।

पापा : क्या मतलब कि अच्छा लगे या बुरा?

हंसल : डैड देखिए, मैंने अपनी ज़िंदगी में ठीक से कुछ try किया ही नहीं। कॉलेज अभी ख़त्म भी नहीं हुआ था कि आपने मुझे बिज़नस में डाल दिया। हो सकता है कि मैं इस field के लिए नहीं बना हूँ।

पापा : तुम इस field के लिए नहीं बने, मतलब? मैं इस लड़के को मुंबई में कांदा बटाटा का सबसे बड़ा wholesale dealership दे रहा हूँ और ये मुझसे कह रहा है कि मैं इस field के लिए नहीं बना हूँ। हा.

हंसल : पता नहीं मेरे पास talent है या नहीं लेकिन मेरी इच्छा है कि मैं एक writer बनूँ।

पापा : Writer? किस तरह का? चिट्ठी लिखने वाला? चिट्ठी तुम अच्छी लिखते हो। पर उन्हें खरीदेगा कौन?

हंसल : पर हो सकता है मैं बहुत अच्छा writer बन जाऊँ। अभी तक तो मौक़ा नहीं मिला ना। हो सकता है मैं नाटक लिखूँ या टीवी शो या theatre play या फिल्म...

पापा : नाटक कोई नहीं देखता। टीवी शो बंद हो जाते हैं। फिल्में चलती नहीं। लेकिन कांदा बटाटा सब खाते हैं।

हंसल : पर मुझे business excite नहीं करता डैड। मैं enjoy नहीं कर पाता।

पापा : तुम enjoy नहीं कर पाते? ठीक है, मैं वहाँ म्यूज़िक लगवा दूँगा। काम करते हुए डांस करते रहना।

हंसल : डैड, अभी थोड़ी देर के लिए बिज़नस की बात छोड़ देते हैं। मैं यहाँ रह रहा हूँ और मैं ये चाहता हूँ कि आप मुझे यहाँ रहने की

इजाज़त दे और अपना आर्शीवाद दें।

पापा : मेरे एक सवाल का जवाब दो। अगर तुम मेरी जगह होते, मतलब अगर तुम मेरे बाप होते और इस बात की पूरी समझ रखते कि दुनियाँ में आजकल क्या हो रहा है, छोटे बच्चे कैसे kidnap हो जाते हैं, पार्टियों में चरस गांजा के चक्कर में कैसे लड़कों को जेल हो जाती है, तो क्या तुम अपने बेटे को घर छोड़ने देते?

हंसल : हाँ।

पापा : ये कोई जवाब नहीं है।

हंसल : डैड-डैड, मुझे नहीं लगता कि हम एक-दूसरे को ठीक से समझ पाएंगे।

पापा : कैसे समझ सकते हैं? तुम मुझसे ज्यादा अपने भाई की जो सुनते हो।

हंसल : नहीं, ये सच नहीं है।

पापा : क्या ये सच नहीं है कि घर छोड़ने की बात उसी ने तुम्हारे कानों में डाली?

हंसल : कानों में नहीं डैड, दिमाग में डाली।

पापा : क्या?

हंसल : दिमाग में। कानों में नहीं।

पापा : मज़ाक उड़ा रहे हो मेरा Mr. writer.

हंसल : मैं....नहीं डैड....मैं मज़ाक नहीं उड़ा रहा।

पापा : क्यों? तुम्हारा भाई तो उड़ाता है।

हंसल : ऐसा उसने कब किया?

पापा : कब किया? हाँ....सब मालूम है मुझे, उसके साथ रहोगे तो ख़ूब सीखोगे तुम। कम से कम तुमसे तो मुझे बहुत उम्मीद थी। लेकिन मयंक, मयंक से तो मैं कभी ठीक से बात भी नहीं कर पाया। लेकिन तुम....तुम तो हमेशा अच्छे थे। तुम्हें लेकर मैं कहीं भी जा सकता था। तुम इतने अच्छे थे, अगर तीन घंटे भी तुम्हें कहीं चुपचाप बैठना पड़े, तो भी तुम चूँ नहीं करते थे। आह! मुझे याद है

मैं तुमसे कहता था कि लीला बुआ को पप्पी दो, तो तुम दौड़ के जाते थे और उसे पप्पी दे आते थे। पर तुम्हारा भाई! एक बार मुझे उसके पीछे भागना पड़ा पूरा वर्ली sea-face क्योंकि वो लीला बुआ को पप्पी देने से मना कर रहा था। अब ये बताओ कि लीला बुआ को पप्पी देने में ऐसी कौन सी आफ़त आ जाती?

हंसल : वो इसलिए क्योंकि उसके शरीर से प्याज़ की बू आती थी।

पापा : देखा-देखा, कैसे उसकी तरफ़दारी कर रहे हो तुम?

हंसल : मैं उसकी तरफ़दारी नहीं कर रहा डैड।

पापा : नहीं कर रहे! अच्छा, क्या फ़ायदा तुमसे बात करने का। आख़िर में तुम करोगे वही जो वो कहेगा। तुम भी अगर उसी की तरह निखट्टू बने रहना चाहते हो तो तुम्हारी मर्ज़ी।

हंसल : भाई निखट्टू क्यों है डैड?

पापा : शादी की उसने?

हंसल : नहीं।

पापा : तो फिर वो निखट्टू है।

हंसल : डैड, आपको मुझसे कभी प्रॉब्लम नहीं हुई ना? तो फिर आपको मुझ पर भरोसा क्यों नहीं?

पापा : तुम भरोसा चाहते हो। मैं करता हूँ तुम पर भरोसा।

हंसल : मतलब?

पापा : हमारे बीच एक मुद्दा है। मैंने तुम्हारा पक्ष सुन लिया तुमने मेरा पक्ष सुन लिया। तुम अगर चाहते हो, तो छह महीने का एक trial period रखते हैं। क्यों?

हंसल : हाँ डैड। ये सही है, 6 महीने का trial period सही है।

पापा : तो ठीक है फिर। तुम घर आओ और 6 महीने के लिए घर पे रहो।

हंसल : घर आऊँ? मतलब आप ये नहीं चाहते कि मैं 6 महीने के लिए यहाँ रहूँ? Not fair डैड...आप ठीक नहीं कर रहे।

पापा : आवाज़ नीचे, आवाज़ नीचे, थप्पड़ खा कर सीखने की उम्र नहीं

रही तुम्हारी अब।

हंसल : सॉरी डैड।

पापा : बेटा अपने बाप से इस तरह से बात करता है। कभी नहीं सोचा था कि ये दिन भी मुझे देखना पड़ेगा। बहुत ही ज़ुल्म किये होंगे मैंने तुम पर शायद। क्यों?

हंसल : नहीं डैड, आप एक बहुत ही अच्छे पिता है। पर आप मुझे भी थोड़ा समझने की कोशिश कीजिये। प्लीज़, क्या कहते हैं?

पापा : मैं सोच के बताऊँगा।

हंसल : क्या मतलब आप सोच के बताएँगे?

पापा : जल्दबाजी में मैं कोई फैसला नहीं लेना चाहता। घर जा कर आराम से सोचूँगा। तब तक तुम अगर चाहो तो आज की रात तुम यहाँ रुक सकते हो। लेकिन कल, कल रात तुम चुपचाप घर आ जाओ। जो हमें करना है वो देखा जाएगा।

हंसल : ठीक है डैड। good night डैड।

पापा : कुछ पैसे चाहिए?

हंसल : मेरे पास हैं डैड।

पापा : सोओगे कहाँ पर?

हंसल : यहाँ....नीचे.....कहीं भी।

पापा : ये कोई जगह है सोने की?

हंसल : डैड मैं कर लूँगा manage. मैं आपसे कल मिलता हूँ। promise.

पापा : Promise की क्या बात है? तुमने कहा तुम आओगे। मुझे तुम पर भरोसा है।

हंसल : Thanks डैड। good night. (पापा जाने लगते हैं, फिर रुकते हैं।) क्या हुआ?

पापा : तुम्हारी माँ को फोन करता हूँ, उसे बता दूँ कि सब ठीक है। परेशान होगी।

हंसल : अरे बाप रे!

पापा : (फोन पर) हेल्लो, कान्ता बेन? .....हाँ। .....मेमसाहब को फोन दो...अच्छा? .....कहाँ गयी होगी? .....अच्छा सुनो कान्ताबेन.... एक मैसेज लिखो....हाँ-हाँ....ले लो.....पैंसिल ले लो.....(तभी कामया अन्दर से आती है और हंसल घबराया हुआ खड़ा हो जाता है।)

हंसल : Excuse me! But my grand marnier is finished. मैं एक काम करती हूँ। मैं बाहर से ले कर आती हूँ। हैलो डैड! (kitchen door से ही वापस चली जाती है। हंसल सकपकाया सा अपने पिता की ओर देख रहा है।)

पापा : हैलो....कान्ताबेन....मेमसाहब से कहना कि मैं निखट्टू के साथ हूँ. ...21 साल का निखट्टू..... (फोन पटक देता है फिर हंसल की ओर देखते हुए) निखट्टू.....

हंसल : डैड...

पापा : निखट्टू....

हंसल : प्लीज़ डैड....

पापा : निखट्टू....

हंसल : डैड मुझे बोलने तो दीजिये।

पापा : निखट्टू....

हंसल : प्लीज़ डैड...

पापा : 21 साल का निखट्टू....अपने भाई से भी बड़ा....पर अभी 12 साल छोटे हो तुम उससे....

हंसल : पर डैड आप मेरी बात तो सुनिए। (तभी दरवाजा खुलता है और मयंक अन्दर आता है।)

मयंक : डैड....?

पापा : ये लो। बड़े निखट्टू चले आ रहे हैं। आओ-आओ, हम लोग दावत कर रहे हैं।

मयंक : आप डैड....? आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

पापा : न्यौता था ना मेरे लिए? वो एक कुक रखी है ना अन्दर तुमने।

मयंक : कहाँ?

हंसल : अन्दर kitchen में।

मयंक : क्या? अरे तुमने....तुमने बताया नहीं डैड को....वो एक मीटिंग के लिए मेरा wait कर रही थी।

पापा : कहानियाँ सुनने का मुझे कोई शौक़ नहीं। उसके लिए है ना ये... writer (फोन की घंटी बजती है और डैड जाने लगते हैं।)

मयंक : डैड एक मिनट.....मैं आपसे बात करना चाहता हूँ।

पापा : बहुत सुन चुका मैं। (जाने लगता है)

मयंक : (फोन पर) अरे Mr. Ahujani आप?

पापा : (रुकता है) आहुजानी? उसे क्या चाहिए अब?

मयंक : (फोन पर) एक मिनट....थोड़ा शांत हो जाइए Mr. Ahujani....मैं आपको समझाने की कोशिश करता हूँ ....हमारे समझने में थोड़ी भूल ज़रूर हुई है....

पापा : भूल? कैसी भूल?

मयंक : कुछ नहीं डैड....कुछ नहीं.... (फोन पर) क्या?....अब मुझे कैसे पता चलेगा कि आपकी बीवी आने वाली थी?.....मुझे मेरी माँ से कोई मैसेज नहीं मिला....

पापा : किस बारे में बात कर रहे हो तुम?

मयंक : (फोन पर) अगर मैं एक बार आपकी बीवी से बात करूँ.....मगर अहुजानी....इसमें केस फ़ाइल करने की क्या ज़रूरत है?

पापा : केस? कैसा केस?

मयंक : डैड एक मिनट प्लीज़।

पापा : फोन मुझे दो। (फोन पर) हेल्लो, Mr. Ahujani.....मैं मयंक का पापा बोल रहा हूँ....क्या गड़गड़ हुई है?

मयंक : डैड वो पागल हो चुका है, आप उसकी बात मत सुनिए।

पापा : आपकी बीवी और किसने एक साथ दरवाज़े की घंटी बजाई?

नेपाली लड़की? पर उसको किसने भेजा था? समझ गया। (मयंक की ओर देखते हुए) मैं समझ गया....जी....गुडबाय। (फोन मयंक को पकड़ा देता है, वो फोन रख देता है और पापा जाने लगते हैं।)

मयंक : डैड प्लीज़, आप एक मिनट के लिए मेरी बात सुनिए....डैड प्लीज़....डैड....डैड.....प्लीज़ कुछ कहिये।

पापा : तुम और तुम्हारा भाई....हमेशा खुश रहे....ईश्वर की कृपा तुम दोनों पर रहे....ज़िंदगी भर तुम्हें संसार की सारी ख़ुशियाँ मिलें। और अगर आज के बाद मैंने तुम दोनों से बात भी की....तो मेरी जुबान कट के गिर जाए। (चला जाता है। दोनों भाई एक-दूसरे की तरफ बेचारगी से देख रहे हैं।)

हंसल : मुझे मालूम था....मुझे मालूम था...ऐसा होने वाला है।

मयंक : तुम्हें लगता है वो सच में ऐसा करने वाले हैं?

हंसल : देखना....10 मिनट मैं वो घर पहुँच जायेंगे और मेरे सारे कपड़े बहादुर को दे देंगे।

मयंक : इतने ग़ुस्से में तो मैंने उन्हें आज से पहले कभी नहीं देखा। आख़िरी बार वो मुझ पर इतना ग़ुस्सा तब हुए थे, जब मैं लीला बुआ को kiss करने से मना कर रहा था और वो वर्ली sea-face पर मेरे पीछे भागे थे।

हंसल : ये तो पक्का है कि हमारी नौकरी गयी।

मयंक : पर हमारे बिना बिज़नस कैसे करेंगे वो?

हंसल : दो मिनट की देर हुई बस....वो तो निकल ही रहे थे....बस वो ऊपर वाली item आ गई।

मयंक : आह सॉरी! सॉरी हंसल। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता था।

हंसल : आपकी गलती नहीं है भाई।

मयंक : मैंने सोचा मैं तुम्हारे लिए कुछ अच्छा....चलो....बात ख़त्म हो गई।

हंसल : कहाँ ख़त्म हो गयी? वो आ रही है....फ्रेंच बोतल ले कर.... audition देने।

मयंक : अच्छा?

हंसल : मुझे पर तो अपना डोरे डाल ही रही है। मैं कुछ तमाशा कर दूँ भाई? 5 सल का contract sign करवा लू उससे? (घंटी बजती है) भाई....भाई...मैं उसे...face नहीं कर सकता....please....please.

मयंक : ठीक है कोई बात नहीं। यहाँ से आगे की ज़िम्मेदारी मेरी है। तुम जाओ infinity में फिल्म देखने।

हंसल : हाँ, ये अच्छा आईडिया है और हो सकता है वहाँ मेरी कोई पिक्चर लगी हो। (फिर से घंटी बजती है। हंसल किचन के दरवाज़े से बाहर निकल जाता है। मयंक दरवाज़ा खोलता है। बाहर वानी खड़ी है।)

मयंक : वानी? (वानी अपना सूटकेस नीचे रखती है और मयंक के गले लग जाती है।)

वानी : मैं कोई वानी नहीं....मैं हूँ उमराव जान। तुम मेरे नवाब....मेरे सरताज। और मैं तुम्हारी कनीज़। कनीज़ की आरज़ू है कि अपने सरताज को ख़ुश रखे।

मयंक : तुमने पी रखी है?

वानी : सिर्फ़ एक quarter vodka. चलें तुम्हारे बेडरूम की तरफ? तुम्हारा बेडरूम तो उस तरफ है ना मेरे सरताज? (सूटकेस उठा कर अन्दर जाने लगती है।)

मयंक : क्या कर रही हो वानी तुम? कहाँ जा रही हो? पागल हो गयी हो क्या?

वानी : पागल? नहीं मेरे सरताज! अब तो होश में आ गयी हूँ। आपने मुझे जिस लायक समझा, मैं वही कर रही हूँ।

मयंक : क्या कर रही हो?

वानी : आपकी ख़िदमत। यही चाहते हैं ना आप? ओह हाँ! आप शायद पहले मुजरा सुनना चाहेंगे। कौन-सा गीत सुनोगे मेरे सरताज। (जा कर CD player on करती है। एक गाना बजता है और वो डांस करती है।)

मयंक : शराब पी के तुम्हारा दिमाग ख़राब हो गया है।

वानी : ज़रा सोचो मेरे सरताज। मैं रोज़ गाना गाऊँगी, रोज़ नाचूंगी और हम रोज रंगरलियाँ मनाएंगे। रोज़....

मयंक : वानी, तुम्हारी हालत देख कर मुझे घबराहट हो रही है।

वानी : तुम्हें कभी ये कहने की कोई ज़रूरत नहीं होगी कि तुम मुझसे प्यार करते हो....और शादी?....ये किस चिड़िया का नाम है? जब मुझसे बोर हो जाओ तो लात मार के भगा देना। और किसी दूसरे नवाब के पास भेज देना। मैं चली जाऊँगी।

मयंक : (म्यूज़िक ऑफ़ कर देता है) Will u stop it ? ये मज़ाक का विषय नहीं है।

वानी : ऐसा क्यों मयंक? यही तो तुम चाहते थे।

मयंक : नहीं।

वानी : नहीं?

मयंक : नहीं, मेरे कहने का ये मतलब था कि दो लोग, जो एक-दूसरे को पसंद करते हैं, एक healthy relationship में रह सकते हैं। बिना शादी किये लेकिन इस रिश्ते को हिंदी commercial फिल्म बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है।

वानी : Oh my God. शायद मैं गलत घर में आ गयी।

मयंक : देखो वानी, मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ। ये सच है कि मैं हफ़्ते में 5 दिन एक Romeo की तरह रहता हूँ, लेकिन तुम्हारे साथ, तुम्हारी बात अलग है।

वानी : संभल के संभल के मयंक, तुम commit करने जा रहे हो।

मयंक : कौन कमबख़्त इस बात को छुपाना चाहता है। I Love you.

वानी : पहले तो ऐसा नहीं था?

मयंक : लेकिन अब है। अगर मैं तुम्हारा दिया हुआ ये ऑफ़र ठुकरा सकता हूँ तो इसका मतलब है कि I am in love.

वानी : तो फिर अब हम क्या करें?

मयंक : मुझे नहीं पता।

वानी : तुम्हें नहीं पता?

मयंक : देखो वानी, मुझे थोड़ा समय दो सोचने के लिए। आज की रात काफ़ी गड़बड़ियाँ हो रही हैं। मेरी नौकरी छूट गई।

वानी : तुम तो अपने डैड के साथ काम करते हो न?

मयंक : शायद recession का असर यहाँ भी हो रहा है। इसलिए उन्होंने अपने दोनों बेटों को नौकरी से निकाल दिया है। वानी, मेरी बात समझो।

वानी : मैं कुछ समझना नहीं चाहती। तुम मुझसे प्यार करते हो, लेकिन मुझसे शादी नहीं कर सकते। और मुझसे इतना प्यार करते हो कि मेरे साथ रह नहीं सकते।

मयंक : हाँ वानी, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ।

वानी : (गुस्से में) तो ठीक है। I am sorry मयंक। लेकिन मैं अपनी सारी ज़िंदगी एक confuse आदमी का wait नहीं कर सकती। (वो जाने लगती है।)

मयंक : एक मिनट, मेरी बात तो सुनो।

वानी : किस लिए? या तो मैं अन्दर आऊँ या बाहर जाऊँ। बोलो क्या चाहते हो तुम?

मयंक : क्या सब कुछ पहले जैसा नहीं हो सकता?

वानी : अब काफ़ी देर हो चुकी है। सौदा तय हो चुका है।

मयंक : तुम इतनी बड़ी सौदागर कब से बन गयी?

वानी : मयंक, तुम्हें सौदा मंज़ूर नहीं तो हट जाओ।

मयंक : कमाल है वानी जी! तुम जीती मैं हारा।

वानी : मुझे हारे हुए लोग पसंद नहीं। (जाने लगती है।)

मयंक : (गुस्से में) ठीक है। अगर यही बात है तो मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ।

वानी : अगर तुम ऐसे शादी करना चाहते हो तो मुझे मंज़ूर नहीं।

मयंक : वानी रुको। कहाँ जा रही हो?

वानी : फ़िलहाल तुमसे दूर जा रही हूँ।

मयंक : मैं नहीं चाहता कि तुम जाओ।

वानी : I am sorry.

मयंक : मतलब मैं तुमसे दोबारा मिल नहीं पाऊँगा?

वानी : मुझे नहीं पता। जब अकेलापन तुम्हें सताए तब मुझे ढूँढने की कोशिश करना। (फोन की घंटी बजती है।) हाँ....आज तो तुम्हें शायद टाइम ना मिले? कल से शुरु कर लेना।

मयंक : (घंटी बजती रहती है और वानी अपना सूटकेस उठाती है।) वानी रुको।

वानी : फोन उठाओ मयंक। शायद तुम्हारी कोई गर्लफ्रैंड है।

मयंक : (फोन पर) हैलो....अरे माँ? वानी, मेरी माँ का फोन है।

वानी : तुम्हारी माँ? किसे बेवकूफ़ बना रहे हो मयंक?

मयंक : मैं क्यों झूठ बोलने लगा वानी?

वानी : गुड बाय। (चली जाती है)

मयंक : वानी.....वानी....रुको। (फोन पर) हैलो, हाँ माँ? क्या गड़बड़ हो गयी? डैड घर पर पहुँचे कि नहीं? लीला बुआ के यहाँ? आप टेंशन मत लो माँ। आज की रात बस वो वहाँ सो जायेंगे। जैसे ही उनका गुस्सा ठंडा होगा वो वापस आ जायेंगे। माँ प्लीज़.....प्लीज़ रो मत माँ। ठीक है। मैं आता हूँ। आज की रात मैं वहीं सो जाऊँगा। हाँ, अपने पुराने कमरे में। मुझे भी अकेलापन अच्छा नहीं लग रहा! क्यों? नहीं, अभी नहीं। माँ....प्लीज़। मैं बहुत परेशान हूँ। मेरे दिमाग़ में बहुत सारी चीज़ें घूम रही हैं। अभी decide नहीं कर सकता। अरे कुछ भी बना लो माँ....मटर पनीर, आलू गोभी, सरसों का साग....मैं खा लूँगा। आप जो भी बनाओगी मैं खा लूँगा।

अंक-3

समय : 3 सप्ताह के बाद

मयंक का bachelor apartment

(हंसल मयंक की jacket एक हाथ में लिए salsa dance की

practice कर रहा है। Jacket उसका dancing partner है। इन तीन हफ़्तों में हंसल बदल चुका है। उसके अन्दर आत्मविश्वास है और स्फूर्ति है। डांस कर रहा है और rhythm में कुछ बोल रहा है।)

हंसल : one two चा चा चा....very good चा चा चा .....turn your body चा चा चा....(फोन की घंटी बजती है)...फोन उठाओ चा चा चा.. .बहुत अच्छे चा चा चा...(अपने jacket को सोफा पर रखते हुए बोलता है।) excuse me. (फोन उठाता है।) हैलो....वर्षा....क्या आप जानती हैं आपकी इस ख़ूबसूरत आवाज़ के लिए गिरफ़्तार की जा सकती हैं? नहीं...मैं अभी-अभी वो सोनू निगम के concert की tickets arrange करने की कोशिश कर रहा हूँ वो मुझे थोड़ी देर में कॉल करेंगे। मैं ये सोच रहा था कि उसके बाद हम कुछ वक़्त के लिए enigma चलें? अ...for a little चा चा चा... ओह अच्छा...तुम मुझे pick करने आ सकती हो?....That would be wonderful.....4th cross lane.......pluto towers...... lokhandwala.....अ.......say about seven..... thanks........good bye. (फोन रखता है, ख़ुश होता है और डांस शुरु करता है।) ठीक से करो चा चा चा...आज की रात चा चा चा....तुम्हारी रात चा चा चा.....(फोन की घंटी बजती है फोन उठाता है) हैलो.....(दरवाज़ा खुलता है, मयंक अन्दर आता है, खोया-खोया, अनमना सा, अपना jacket टांगता है और किसी सोच में डूब जाता है। हंसल फोन पर जारी है।) yes yes.....it is. जी 2 tickets....हाँ मैं बॉक्स ऑफिस पर ही collect कर लूँगा....हाँ, मयंक के नाम....thank you so much.....good bye. (फोन रखता है) hi.... बिग बी......मैंने आपको देखा ही नहीं आते हुए....हा.....आपके दोस्त ने मुझे 2 टिकट दिलाई हैं....सोनू निगम के concert की। मैंने आपका नाम लेकर उससे बात की थी....ठीक किया ना?

मयंक : हाँ, ठीक ही किया। आजकल तो अपना नाम मैं भी इस्तेमाल नहीं करता।

हंसल : (हंसल उठता है और अपने dancing partner jacket के साथ फिर से डांस करता है।) and again चा चा चा....to the right चा चा चा....(भाई से) दिन भर कहाँ रहे?

मयंक : कबूतर खाने में कबूतरों को उड़ते हुए देख रहा था। किसी का फोन आया था?

हंसल : हाँ, आया था। एक वो....अ....कृष्णचंद और वेंकट सुन्दरम चा चा चा।

मयंक : क्या कहा उन्होंने?

हंसल : Nice and easy चा चा चा।

मयंक : छोटे मैं तुझसे बात कर रहा हूँ।

हंसल : क्या हुआ? (वो डांस बंद कर देता है।) क्या हुआ भाई?

मयंक : मैं तुम्हारा जवाब बिना चा चा चा के सुनना चाहता हूँ। क्या कहा उन्होंने?

हंसल : किन्होंने?

मयंक : अरे....कृष्णचंद और वेंकट सुन्दरम ने।

हंसल : कुछ नहीं, वो वापस फोन करेंगे। आप कुछ परेशान लग रहे हो भाई। सारा दिन आज आपने किया क्या? 10 बजे से गए हो और अभी 6 बजे आये हो। और आये हो तो थके माँदे, युद्ध में हारे हुए सिपाही की तरह। राज़ क्या है?

मयंक : कोई राज़ नहीं है...पक्का किसी और का फोन नहीं आया था?

हंसल : आपका मतलब वानी का?

मयंक : नहीं......वानी क्यों?....क्या उसने.....

हंसल : नहीं उसका फोन तो नहीं आया, लेकिन आप....नींद में उसका नाम ले रहे थे।

मयंक : मैं? पागल हो गए हो गया?

हंसल : परसों रात तो आप नींद में चल रहे थे। ऐसे हाथ फैलाए हुए titanic की तरह कह रहे थे ''ओह वानी......मेरी जान वानी'' मुझे तो अब सतर्क रह के सोना पड़ेगा।

मयंक : मेरी खिंचाई कर रहे हो तुम?

हंसल : आप फोन क्यों नहीं करते उसे?

मयंक : किसलिए? मेरा कोई interest नहीं है और वैसे भी अब वो वहाँ नहीं रहती।

हंसल : ओह! तो फिर कहाँ रहती है?

मयंक : मुझे क्या पता? मैंने पूछा नहीं जा के।

हंसल : तो जा के पूछ लीजिए ना, जहाँ वो पी.जी. रहती थी। हो सकता है उसने अपना नया पता वहाँ छोड़ा हो।

मयंक : उसने अपना कोई नया पता नहीं छोड़ा।

हंसल : आपको कैसे पता?

मयंक : मैं पूछ के आ चुका हूँ। सुनो हंसल, तुम ये वानी के बारे में पूछना बंद करोगे?

हंसल : ओके chapter बंद। अ....तो....एक ड्रिंक ली जाए?

मयंक : मैं ड्रिंक नहीं लेना चाहता। वैसे तुम किस ख़ुशी में ड्रिंक ले रहे हो?

हंसल : मुझे शाम को पीना अच्छा लगता है। unwind करने में थोड़ी मदद मिलती है।

मयंक : तुम्हें किससे unwind करने की ज़रूरत है?

हंसल : बस यही, रोज़मर्रा की छोटी-मोटी मुश्किलें!

मयंक : मुश्किलें? इतनी आराम की ज़िंदगी तो तुमने अब तक नहीं बिताई होगी? 12 बजे तो कुम्भकर्ण की तरह सो के उठते हो तुम। 2 बजे तक तुम्हारा नहाना-धोना चलता है। हर रात कभी पार्टी, कभी फिल्म, कभी concert. कुछ ना कुछ तो लगा ही रहता है। वैसे दिन के वक्त क्या करते हो?

हंसल : हाँ, दिन की ही तो कुछ मुश्किलें हैं जिनसे मुझे unwind करने की ज़रूरत होती है। मैं बस थोड़ी मस्ती कर रहा हूँ भाई, उसमें क्या बुराई है?

मयंक : नहीं हंसल, कोई बुराई नहीं है। सॉरी बच्चे। पता नहीं आज मेरा कुछ मूड ठीक नहीं है। घर में बैठने की इच्छा नहीं हो रही। फिल्म देखने चलोगे?। सिर्फ़ तुम और मैं?

हंसल : अरे भाई, मैं ज़रूर चलता लेकिन मुझे डेट पर जाना है।

मयंक : फिर से? इस हफ़्ते की चौथी डेट है तुम्हारी। किसको लेकर जा रहे हो?

हंसल : एक डांसर है, वर्षा नाम है।

मयंक : वर्षा।

हंसल : बहुत कमाल की लड़की है भाई! इतना मेकअप करती है कि उसका असली चेहरा कैसा है ये कोई नहीं जानता। एक reality शो में भी काम कर चुकी है।

मयंक : बिना मेकअप के मिलना उससे और रियल चेहरा देख लेना। वैसे कहाँ से पकड़ते हो ऐसी लड़कियों को?

हंसल : वर्ष तो मुझे IPA अवार्ड्स night में मिली थी।

मयंक : ओह! जहाँ तुम उस मॉडल के साथ गए थे?

हंसल : हाँ भाई, वर्षा भी अपने एक मॉडल दोस्त के साथ ही आयी थी। Award function तो हम बहुत दूर से देख रहे थे....और इतनी दूर से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था...उसने मेरी ओर देखा.....मैंने उसकी ओर देखा....हम दोनों मुस्कुराये....फिर उसने मुझे अपना नंबर दिया....मैंने उसे अपना नंबर दिया।

मयंक : रोमियो तो ख़ुश हो गया होगा?

हंसल : और पता है भाई, वो तो उसी रात मुझे अपने घर बुला रही थी... कांदिवली में।

मयंक : क्या? मुझे लगने लगा है कि मैं तुम्हारे सामने बच्चा हूँ। विश्वास ही नहीं होता कि तुम वही लड़के हो जो तीन हफ़्ते पहले मम्मी के हाथ से दूध पिया करते थे।

हंसल : पर भाई, ये क्या हुआ है मुझे?....आपने तो मुझे एक नई ज़िंदगी दे दी....यहाँ आये मुझे तीन हफ़्ते हो गए हैं...कोई मुझसे ये नहीं कहता

कि कहाँ जा रहे हो?....कब आ रहे हो....मेरी तो काया पलट हो गई भाई।

मयंक : काया पलट? मैं ख़ुद तुम्हें पहचान नहीं पा रहा।

हंसल : और भाई, यही बात मैं आपसे कहना चाहता हूँ, कि मैं आपको नहीं पहचान पा रहा हूँ। आप वो नहीं रहे जो पहले थे।

मयंक : क्या मतलब?

हंसल : आजकल हर रात घर पर ही रहते हो। तीन हफ़्ते से किसी लड़की के साथ डेट पर नहीं गए। चेहरे पर हमेशा बारह बजे रहते हैं। आप कल सलीम के यहाँ क्यों नहीं चले जाते?

मयंक : सलीम?

हंसल : मेरा hair stylist.

मयंक : तुम्हारा hair stylist? क्या बात कर रहे हो तुम्हारा hair stylist? मेरा hair stylist है वो। मैंने तुम्हें वहाँ भेजा था।

हंसल : हाँ-हाँ, मैं तो बस ऐसे ही कह रहा था। आप चाहें तो उसे वापस ले सकते हैं।

मयंक : उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। तुम वहाँ जाते हो वो ठीक है लेकिन ये याद रखो, वो मेरा hair stylist है।

हंसल : हाँ-हाँ बिल्कुल, आप ठीक कह रहे हैं। लेकिन अपना मूड तो ठीक कर लो। सब अच्छा हो जाएगा। (दरवाज़े की घंटी बजती है।) ये वर्षा नहीं हो सकती, इतनी जल्दी कैसे आ सकती है? (दरवाज़ा खोलता है वहाँ कामया mini skirt पहने खड़ी है। दरवाज़ा खोलता है।) hey....hello.

मयंक : Hello Mr. Verma.

हंसल : इनसे मिली हैं ना आप? ये हैं मि. मयंक।

कामया : Oh sure! Hi, (हंसल से) मैंने सुना आप वापस लौट आये हैं। बॉलीवुड में सब ठीक है न?

हंसल : Oh great, बस अगले हफ़्ते ही हमारी pciture floor पे जाने वाली

है।

मयंक : मुझे तो आपने फोन ही नहीं किया। शायद आपने किसी और को cast कर लिया होगा।

हंसल : Not at all. अभी तो सिर्फ़ hero final हुआ है। हीरोइन की तलाश अभी जारी है।

कामया : ओह! आपने किसको लिया?

हंसल : किसको यानी?

कामया : अ....हीरो....हीरो किसको लिया?

हंसल : ओह हीरो! नया लड़का है।

मयंक : सलीम मुस्तफा।

कामया : ओह अच्छा! नाम सुना हुआ लगता है।

हंसल : अ..excuse me, मुझे अभी तैयार होना है। आज रात कुछ locations देखने के लिए जाना है।

कामया : ज़रूर-ज़रूर।

हंसल : I will call you. I'm Still very interested. (घड़ी देखता है और ज़ोर से बोलता है।) हे भगवान! 7 बज गए। (अन्दर की तरफ चला जाता है।)

कामया : छोटी उम्र में कितने बड़े काम कर रहे हैं ये?

मयंक : हाँ। 8 colleges इसके ब्रेन पर study कर रहे हैं।

कामया : इसने फोन नहीं किया, ये तो मेरी समझ में आ रहा है। तुम्हारा क्या बहाना है?

मयंक : मेरा कोई बहाना नहीं है। मैं ज़रा busy था।

कामया : और मैं बहुत अकेली हूँ। पिछले तीन हफ़्तों में एक बार भी तुम्हारा फोन नहीं आया। मेरे मैसेज का भी जवाब नहीं दिया।

मयंक : सॉरी कामया।

कामया : सॉरी से काम नहीं चलेगा। चलो इस weekend अलीबाग चलते हैं।

मयंक : अलीबाग में क्या है?

कामया : वहाँ की पहाड़ियाँ।

मयंक : खंडाला!

कामया : नाम में क्या रखा है? मुझे बस तुम्हारा साथ चाहिए। बोलो, चलोगे ना?

मयंक : कामया, मेरी नौकरी छूट गयी है। trekking के लिए टाईम नहीं है। (कामया गुस्से में जाने लगती है।) कामया रुको। मेरी बात का बुरा मत मानो। मैं अभी भी तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ। अच्छा ठीक है। हम इस saturday को लोनावला चलते हैं।

कामया : ये हुई ना बात! गुरु वात्सायन। मुझे love bites दो।

मयंक : क्या?

कामया : Love bites. जैसे पहले देते थे।

मयंक : कामया, मेरा मन नहीं है।

कामया : Oh come on. (मयंक उसे bite करता है।) Thank you. (हँसते हुए चली जाती है। हंसल अन्दर से आता है। Sports jacket पहने हुए।)

हंसल : भाई, कैसा लग रहा है ये Jacket?

मयंक : हाँ! अच्छा है। design अच्छा है पर jacket क्यों पहन रहे हो?

हंसल : Olives में जाने के लिए अच्छा रहेगा ना?

मयंक : तुम Olives क्यों जाना चाहते हो?

हंसल : मुझे वर्षा को लेकर वहाँ जाना है। ओह! याद आया। मुझे तो table book करनी है।

मयंक : सच में कमाल है। तुम तो हंसल, इस शहर के prince बन गए हो। Latest fashion, concerts, olives में dinner. ये क्या कर दिया मैंने? अपने हाथों से भस्मासुर बना दिया।

हंसल : Hello, I would like to reserve the table for two for tonight please.......7:30.......oh is it? (फोन पर हाथ रख कर) वो कह

रहा है कि सारे table book हो चुके है। (फोन पर चुटकी बजाते हुए) क्या मेरे लिए भी table book नहीं हो सकती?...श्याम गोपाल वर्मा....प्रोड्यूसर बी टीवी....हाँ-हाँ....हो जाता है...गलतियाँ हो जाती है....So, it will be done. I appreciate that.......thank you so much......bye.....yup.....all set.

मयंक : ये मैंने क्या कर दिया?

हंसल : आपको लगता है वो convince हुआ होगा?

मयंक : क्यों नहीं? मैं हुआ।

हंसल : मुझे जाना चाहिए। (रुकता है) अरे हाँ bro, आप 11 बजे के आस-पास क्या करेंगे?

मयंक : मुरारी बाबू के प्रवचन सुनूंगा! क्यों?

हंसल : वैसे infinity में एक नई फिल्म लगी है, आप वो लास्ट शो देखने क्यों नहीं चले जाते? एक बजे तक वापस आ जाना।

मयंक : मैं एक बजे तक बाहर नहीं रहना चाहता।

हंसल : असल में........लौटते हुए....वर्षा को......साथ लेकर आना चाहता हूँ।

मयंक : तुम क्या?

हंसल : कहते हुए...अच्छा नहीं लग रहा......पर हो सकता है.......आज की रात मेरी पहाड़ी पर चढ़ने की रात हो। आपको बुरा तो नहीं लगेगा, अगर उस वक़्त आप फिल्म देखने जाएँ।

मयंक : हाँ। मुझे बुरा लगेगा।

हंसल : पर क्यों? हमारे बीच तो यही arrangement था ना, कि अगर किसी को लड़की से मिलना हो तो......

मयंक : वो मेरा arrangement था। मुझे जब किसी लड़की से मिलना हो, तब तुम फिल्म देखने जाओगे। ये हमारा बीच में कहाँ से आ गया?

हंसल : मैंने सोचा कि हम सब 50-50 कर रहे थे।

मयंक : कर रहे थे। पर अब नहीं। What guts. हम अब कुछ 50-50 नहीं कर रहे, समझ में आया?

हंसल : जी।

मयंक : Rent को छोड़ कर। आज से तुम्हारा rent होगा 7500.

हंसल : Ok.

मयंक : बहुत हो गया दान पुण्य। अब और नहीं।

हंसल : लेकिन मैं.....

मयंक : और अपना खाना भी खुद मँगाया करो साईं होटल से। तंग आ गया हूँ मैं रोज़-रोज़ ये देखते हुए, जो खाना मैं अपने लिए मँगाता हूँ, उसे तुम finish कर देते हो। मेरी magazines पढ़ते हो....मेरा टीवी देखते हो....मेरा लैपटॉप इस्तेमाल करते हो...

हंसल : आप मज़ाक कर रहे हो?

मयंक : और ख़बरदार अगर आज के बाद मेरे pizzas को हाथ लगाया तो।

हंसल : पर भाई, मैं भी तो कभी-कभी noodles बना देता हूँ आपके लिए।

मयंक : और ज़रा सफाई रखा करो घर में। अच्छा नहीं लगता ये जूते-मोज़े इधर-उधर फेंक देना.....कपड़े इधर-उधर डाल देना।

हंसल : मयंक, क्या हुआ है आपको? क्यों परेशान हैं आप? उस लड़की की वजह से?

मयंक : कौन? वानी? उसका इससे क्या लेना-देना?

हंसल : कुछ तो है जो आपको परेशान कर रहा है। मैं जानना चाहता हूँ वो क्या है?

मयंक : जानना चाहते हो? तुम हो उसकी वजह। बहुत ही ungrateful हो तुम।

हंसल : Ungrateful?

मयंक : Yes, ungrateful. मैं तुम्हें यहाँ अपने घर में लाया....तुम्हें चलना

सिखाया....तुम्हें कपड़े पहनना सिखाया.....बात करना सिखाया.... और अब देखो....you are a big man.

हंसल : तो इसमें बुरा क्या है मयंक? आप ख़ुद ही तो कह रहे थे कि you should grow up and become a man.

मयंक : मैं कहता था become a man. (फिर अपनी और इशारा करते हुए) not this man. ज़िंदगी में मेरी जगह मत लो।

हंसल : मैंने आपकी जगह कहाँ ली?

मयंक : मैं बाथरूम में नहाने के लिए नल खोलता हूँ, तो पाँच मिनट बाद देखता हूँ कि तुम वहाँ जाकर नहाने लगते हो....तुम मेरा hair stylist इस्तेमाल कर रहे हो...मेरा resto ....मेरा टिकेट ब्रोकर.... मेरा घर....मेरा jacket..... सब। कैसा लग रहा है? मुझे मज़ा आ रहा है?

हंसल : मुझे ये suggest करने वाला कौन है? आप। मुझे ज़िंदगी में मस्ती करने के लिए कहने वाला कौन है? आप।

मयंक : हाँ मैंने कहा कि मस्ती करो पर मैंने ये नहीं कहा कि सारी ज़िंदगी ऐसे ही जियो।

हंसल : ऐसे कैसे?

मयंक : निखट्टू की तरह।

हंसल : (उछलता हुआ) निखट्टू?

मयंक : सुन लिया? आजकल किन फटीचरों के साथ उठ बैठ रहे हो? ये pseudo intellectuals तुम्हारे किसी काम नहीं आने वाले।

हंसल : और आप किन लड़कियों के साथ घूमते रहे हो, जान सकता हूँ? वो ऊपर 14th floor वाली कोई साध्वी तो नहीं लगती।

मयंक : मैं तुम्हारी बात कर रहा हूँ....कहाँ थे परसों सुबह 4 बजे तक तुम?

हंसल : क्या फ़र्क पड़ता है?

मयंक : मैं जानना चाहता हूँ कि परसों सुबह 4 बजे तक तुम कहाँ थे?

हंसल : ओह...कुकडू कुँ.....आपको उससे क्या ?

मयंक : मेरे साथ बद्तमीजी मत करो।

हंसल : आप कब से पलट गए ? मैं जब यहाँ आया था, तब तो आप ऐसे जी रहे थे जैसे हर दिन नया साल हो।

मयंक : हम 33 साल के निखट्टू की बात नहीं कर रहे, हम 21 साल के निखट्टू की बात कर रहे हैं।

हंसल : ओह! आप करें तो रासलीला। और हम करें तो character ढ़ीला।

मयंक : तीन हफ़्ते पहले जब यहाँ आये थे....तो बड़े-बड़े सपने थे....writer बनेंगे। पिछली बार बूक कब उठाई थी तुमने ? लास्ट टाईम अख़बार कब पढ़ा था ? यहाँ recession छाया हुआ है और तुम्हें डांस करने से फुर्सत नहीं है।

हंसल : डांसिग का recession से क्या लेना देना ?

मयंक : नौकरी कौन ढूँढ़ेगा ?

हंसल : मैं ढूँढ़ रहा हूँ।

मयंक : कहाँ, parties में ? Award functions में ?

हंसल : पर मैंने आपसे कभी कुछ नहीं माँगा ?

मयंक : भूखों मर जाते अगर माँ खाने के packets नहीं भिजवाती रहती।

हंसल : आप कौन-सा अपना खाना खुद बनाते हो। आप भी तो वही खाते हो।

मयंक : मैं कम से कम फोन तो करता हूँ उन्हें। तुम्हें तो कोई फ़िक्र ही नहीं। और कभी सोचा है तुमने ? हम दोनों के बिना डैड कितने परेशान होंगे अपने बिज़नस को ले के ?

हंसल : तो इसका ज़िम्मेदार मैं हूँ क्या ?

मयंक : मैं तुम्हें पहली बार देख रहा हूँ।

हंसल : मतलब आप अपने आपको पहली बार देख रहे हैं। मैं आपका कार्बन कॉपी ही तो हूँ।

मयंक : जो भी हो, मुझे पसंद नहीं।

हंसल : क्यों? सारा दोष मुझ ही पर क्यों? हत्याऐं आप करो और फाँसी की सज़ा मुझे हो।

मयंक : ज़्यादा स्मार्ट मत बनो। थप्पड़ खा कर सीखने की उम्र नहीं है अब तुम्हारी।

हंसल : (फिल्मी स्टाइल में) हे भगवान....या ख़ुदा....नाम्योह्यो रेंग्येक्यो....मेरे दो-दो बाप हैं....दो-दो बाप।

मयंक : ज़्यादा उड़ो मत। मैं उनके जैसा नहीं हूँ। बिल्कुल नहीं।

हंसल : तुम अपने जैसे तो नहीं लग रहे भाई।

मयंक : कैसे लग सकता हूँ? मेरे जैसे तो तुम हो।

हंसल : हाँ, यहाँ अब तुम्हारे जैसे कुछ ज़्यादा ही हो गए।

मयंक : हो सकता है। ''तो अब इन मुझ जैसों में से जाएगा कौन?''

हंसल : आपका apartment है। आप फैसला कीजिए। तब तक मैं shave कर लेता हूँ। (अन्दर जाने लगता है, फिर रुकता है।) वैसे मेरा पानी कौन-सा है? ठंडा या गरम? (अन्दर चला जाता है।)

मयंक : इस लड़के की हिम्मत तो देखो। मैं भी देखता हूँ, मेरे बिना इसकी गाड़ी कैसे चलती है? (अपने लिए ड्रिंक बनाता है। देखता है कि बोतल खाली है।) scotch की बोतल....(खाली बोतल उठाता है, बैडरूम की तरफ जाता है और वहीं से चिल्लाता है।) निखट्टू....(तभी घंटी बजती है। बोतल को टेबल पर रखता है।) आह....वो आ गयी...वो आ गयी मेहरूनिसा। मैं इसे देखना चाहूँगा। (दरवाज़ा खोलता है तो वहाँ उसकी माँ खड़ी है।) माँ?.....माँ, आप यहाँ? आप यहाँ कैसे आ गई?

माँ : (अन्दर आती हुई) पूछो मत। बस, किसी तरह पहुँच गई....ये रिक्शा वाले भी अपनी मर्ज़ी के मालिक हो गए हैं....आधा घंटा station पर wait करना पड़ा मुझे। (सूटकेस रखती है और बैठ जाती है।)

मयंक : माँ, ये सूटकेस के साथ? कहाँ जा रही हो?

माँ : मैं कहीं नहीं जा रही बेटा....मैं यहाँ आ गयी हूँ।

मयंक : यहाँ? क्यों?

माँ : जैसे हंसल यहाँ रहने के लिए आ गया....मैं भी घर से भाग आई।

मयंक : माँ ये क्या मज़ाक है?

माँ : तुमको क्या लगता है? मुझे अच्छा लग रहा है। मेरी उम्र की औरत को इस तरह घर से भागना पड़ा। कितनी बेज़्ज़ती हुई मेरी, मैं बता नहीं सकती। जब Pedder रोड से आ रही थी, ट्रेन में। तो हमारी सोसाइटी की Mrs. Malik भी मुझे वहाँ मिली। मेरा सूटकेस देख कर पूछने लगी कि मैं कहाँ जा रही हूँ, तो मैंने झूठ बोल दिया कि कल्याण जा रही हूँ, अपनी बहन के पास। पर उसने मुझे अँधेरी स्टेशन पर उतरते हुए देख लिया। ऐसी मूर्ख तो है नहीं वो....जिसे कल्याण जाना होगा वो अँधेरी स्टेशन पर क्यों उतरेगा?। अब वो जब मिलेगी तो क्या जवाब दूँगी। आये हाय...हाय....ये दिन भी देखने थे मुझे?

मयंक : अरे माँ, पर हुआ क्या?

माँ : क्या हुआ? अरे न्यूज चैनल लगा कर देखो क्या हुआ। सब जगह ख़बर पहुँच गई होगी कि तुम्हारे डैड मेरे साथ कैसा बर्ताव कर रहे हैं। तीन हफ़्ते हो गए, तीन हफ़्ते।

मयंक : ठीक है माँ! वो अभी परेशान हैं पर वो ठीक हो जायेंगे। पहले भी ऐसा हुआ है।

माँ : नहीं बेटा। इस बार ऐसा कुछ नहीं होने वाला। इस बार बात अलग है। सुबह मुझे लगा कि एक मौका है....मैं उसे बताना चाहती थी कि देखो, मुझे याद है.....तुम्हें नहीं।

मयंक : क्या याद है?

माँ : हमारी शादी की चालीसवीं सालगिरह।

मयंक : ओह हाँ! मैं तो भूल ही गया था। बहुत-बहुत शुभकामनाऐं माँ।

माँ : Thank you बेटा। हाँ तो, मैं क्या कह रही थी? तेरी कसम खा के

कहती हूँ बेटा, मैं इतना बड़ा smile ले कर गई उनके पास (smile करके दिखाती है लेकिन फिर रोने लगती है।)....और फिर जितनी मीठी आवाज़ में बोल सकती थी....मैं बोली "शादी की सालगिरह की ढ़ेर सारी शुभकामनाऐं.....तुम्हें दुनियाँ भर की सारी ख़ुशियाँ मिलें।" (फिर रोती है।) और पता है उन्होंने मुझसे क्या कहा?

मयंक : क्या?

माँ : "शुक्रिया....और मेरी भी वही कामना है, जो तुम्हारी कामना मेरे लिए है" (फिर रोती है).....पर क्यों?....मैंने ऐसा क्या कर दिया, जो उन्होंने ऐसी बात कही?

मयंक : पर आपको क्यों ऐसा लगता है कि उन्होंने कुछ बुरा कहा?

माँ : क्योंकि उनको मालूम है कि मैं अन्दर से उनके लिए क्या कामना कर रही थी।

मयंक : हे भगवान!

माँ : तुम दोनों की वजह से हमेशा मुझ पर इलज़ाम लगाते रहते हैं "तुम्हारे दो निखट्टू"

हंसल : (अन्दर से आता है।) माँ? आप यहाँ क्या कर रही हैं?

माँ : पूछो मत। किस्मत अच्छी थी जो मैं यहाँ पहुँच गई नहीं तो अँधेरी में ही दम निकल जाता।

हंसल : ये सूटकेस किसका है?

मयंक : हमारी नई रूममेट का। (माँ से) माँ आप ख़्वामख़ाह sentimental हो रही हैं। आप यहाँ रह नहीं पायेंगी।

हंसल : यहाँ?

माँ : तो और कहाँ जाऊँ बेटा? होटल में रहूँ क्या? या लीला बुआ के घर चली जाऊँ? या फिर तुम दोनों चाहते हो कि मैं कहीं आश्रम में रहूँ?

मयंक : माँ, ऐसा नहीं है कि हम दोनों नहीं चाहते कि आप यहाँ रहे लेकिन आपको यहाँ प्रॉब्लम होगी। एक छोटा bachelor अपार्टमेंट है ना।

माँ : और क्या हूँ मैं अब? मैं भी तो एक bachelor ही हूँ। एक bachelor जिसके दो बड़े-बड़े बेटे हैं। (दरवाज़े की घंटी बजती है।)

हंसल : ओह! शायद वर्षा आ गयी।

माँ : तुम्हारी कोई दोस्त? (सूटकेस झटके से उठा लेती है और अन्दर जाने लगती है।) मैं बीच में नहीं आऊँगी। मैं बैडरूम में जाकर कुछ काम कर लूँगी।

हंसल : माँ, आपको वो सब करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

माँ : बेटा मेरी आवाज़ भी नहीं सुनोगे तुम। मैं ऐसे रहूँगी जैसे हूँ ही नहीं।

मयंक : माँ, आपको सूटकेस उठाने की ज़रूरत नहीं है।

माँ : ठीक है बेटा ठीक है। मुझे अपना ENO निकालना है। ओह! ये acidity तो मेरी जान लेकर रहेगी। (घंटी फिर से बजती है।)

मयंक : (हंसल से) जाइए Mr. Romeo, दरवाज़ा खोलिए।

हंसल : (हंसल दरवाज़ा खोलता है। बाहर उसके पापा हैं।) डैड...?

डैड : (गुस्से में) कहाँ है वो? मैं जानता हूँ वो यही है। (मयंक से) तुम्हारी माँ कहाँ है?

मयंक : अन्दर बेडरूम में

डैड : ओह! अन्दर बेडरूम में छुपा कर रखा है उसे। क्या बात है kichen में नया paint किया है। (बेडरूम की तरफ जाता है और माँ की तरफ देख कर बोलता है।) बहुत अच्छे। कमाल की माँ हैं आप। (हंसल घबराया हुआ पलंग पर बैठ जाता है।)

माँ : (अन्दर से) क्या चाहिए आपको?

डैड : वो यहाँ क्या कर रही है?

माँ : वो ENO पी रही है।

डैड : मुझे मालूम था, मैं उसे यहाँ ढूँढ़ लूँगा।

माँ : (अन्दर से आती है, हाथ में गिलास लिए हुए।) और कहाँ जाऊँगी

मैं? मेरे बच्चे हैं वो।

डैड : उसे घर पे रहना चाहिए......मैं अभी ज़िंदा हूँ।

माँ : घर पे वो रह नहीं सकती क्योंकि तुम बच्चों से ठीक से पेश नहीं आते।

डैड : ये मैं अजनबियों के सामने discuss नहीं करूँगा।

माँ : वो तुम्हारे बेटे हैं।

डैड : वो तुम्हारे बेटे हैं। मेरे लिए अजनबी हैं। क्या वो घर आ रही है?

माँ : वो घर पर ही है। आज से वो यहीं रहने वाली है।

डैड : यहाँ रहेगी? दो-दो निखट्टू लड़कों के साथ?

माँ : हाँ। और अब मैं भी निखट्टू बन गई हूँ। अब तुम्हारे पास तीन-तीन निखट्टू हैं। ख़ुश?

मयंक : डैड, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ?

डैड : किससे बात कर रहा है ये? मेरे भूत से?

हंसल : क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?

डैड : नाटक में लिख लेना। आ जाऊँगा देखने के लिए।

मयंक : प्लीज़ डैड, थोड़ा ठंडे हो जाइए। मैं आपसे बात करना चाहता हूँ।

डैड : क्या वो आ रही है?

मयंक : डैड प्लीज़, बहुत ज़रूरी है।

डैड : क्या उसने सुना मैंने क्या कहा?

मयंक : अच्छा ठीक है डैड। आप directly जवाब मत दीजिए जो मैं आपसे पूछ रहा हूँ, अगर आप उसके लिए राज़ी हैं तो एक बार आँख झपकाइए और अगर नहीं तो दो बार।

डैड : उसने सुना ये क्या कह रहा है? अगर मैं यहाँ मौजूद होता तो खींच कर एक थप्पड़ मारता। क्या वो आ रही है मेरे साथ?

हंसल : ऐसे कैसे चलेगा डैड? आपको बात करनी पड़ेगी।

डैड : ज़बरदस्ती है क्या? इनको परेशान करने के लिए इनके माँ–बाप नहीं है अब। इन्हें ख़ुश रहना चाहिए।

मयंक : क्या मतलब है कि माँ–बाप नहीं हैं?

डैड : (माँ से) इससे बोलो कि हम चार महीने के लिए जा रहे हैं। Tickets मेरे जेब में हैं।

माँ : Tickets ख़रीद लिए आपने? मैंने आपसे कहा था ना कि मैं नहीं जाऊँगी। तब तक नहीं जाऊँगी, जब तक आपके और बच्चों के बीच सब ठीक नहीं हो जाता।

मयंक : कहाँ जा रहे हैं?

डैड : जहाँ हमारी मर्ज़ी। (माँ से) इसे कहो कि हम वर्ल्ड टूर पर जा रहे हैं।

माँ : मैं कहीं वर्ल्ड टूर पर नहीं जा रही।

डैड : वो जा रही है। Tickets मेरी जेब में हैं।

मयंक : आप सच में जा रहे हैं क्या?

डैड : ये देखो। तीन हफ़्ते बाद हम साउथ अफ्रीका में होंगे। ये लोग यहाँ शान्ति से बैठेंगे और हम लोग साउथ अफ्रीका में।

मयंक : पर आप चार महीने के लिए कैसे जा सकते हैं? बिज़नस का क्या होगा?

डैड : कौन सा बिज़नस? क्या वो वर्ल्ड टूर के लिए मेरे साथ आ रही है या मैं लीला बुआ को अपने साथ ले जाऊँ?

माँ : मैंने आपसे कहा ना, मैं इस हालत में कहीं नहीं जा रही।

मयंक : डैड, बिज़नस का क्या होग?

डैड : क्या वो आ रही है?

माँ : पहले उसको जवाब दीजिए।

डैड : मैं जवाब दे चुका हूँ। कल से कोई बिज़नस नहीं होगा। मैं सब बेच रहा हूँ। मिल गया जवाब?

मयंक : क्या? सब बेच रहे हैं?

हंसल : आप ऐसा नहीं कर सकते डैड।

डैड : देखो-देखो, कैसा झटका लगा। एक trekker और दूसरा film fair award winner.

मयंक : आप क्यों बेच रहे हैं?

हंसल : आप क्या हमारी वजह से बेच रहे हैं?

डैड : तुम्हारी वजह से? तुम लोगों को लगता है कि मुझे तुम्हारी ज़रूरत है? पिछले तीन हफ़्ते से जब तुम दोनों नहीं थे, तब मैंने 10 गुना ज़्यादा बिज़नस किया है। (घंटी बजती है।)

हंसल : (घबराते हुए) भाई, अब क्या होगा?

डैड : (माँ से) मैं ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता। उसे अगर आना है, तो वो मुझसे दुबई में मिले।

मयंक : डैड....डैड प्लीज़, मैं आपसे बात करना चाहता हूँ।

हंसल : भाई...भाई, हम बाद में भी तो बात कर सकते हैं।

माँ : हंसल, दरवाज़ा खोलो कोई आया है।

हंसल : भाई-भाई, मैं....मैं क्या करूँ?

मयंक : तो तुम उस लड़की को लेकर चले जाओ ना।

डैड : लड़की? कौन सी लड़की?

हंसल : दोस्त है डैड....अपनी दोस्त है, क्या आप अपनी सारी बातें बेडरूम में नहीं कर सकते?

डैड : बेडरूम में? एक-एक हड्डी तोड़ दूँगा मैं इसकी। (हाथ उठा कर मारने लगता है। माँ बीच में आती है।)

माँ : केतन....केतन, क्या कर रहे हो?

डैड : (माँ की नकल करते हुए) केतन....केतन....

हंसल : डैड, मेरी बात........(तभी दरवाज़ा खुलता है और वानी दाख़िल होती है)

वानी : ओह! हैलो...

मंयक : वानी?

माँ : केतन....केतन.....प्लीज़, कुछ मत कहना......तुम्हें मेरी कसम।

डैड : कुछ ना कहूँ? नहीं...मुझे बैठ कर ताली बजानी चाहिए।

मयंक : तुम कहाँ थी वानी?

वानी : चिकमगलूर।

मयंक : चिकमगलूर??

डैड : मैं ये सब नहीं देखना चाहता यहाँ। (जाने लगता है)

हंसल : (रोकते हुए) डैड एक मिनट, प्लीज़।

मयंक : तो तुम किसी industrial शो के लिए गयी थी?

वानी : हाँ, एक toaster बनाने वाली कंपनी है। मैं miss automatic toaster बनी थी। तीन-तीन सेल्समैन मुझे मक्खन लगा रहे थे।

मयंक : पर तुम गई क्यों? तुमने तो कहा था कि तुम ये सब करना नहीं चाहती।

वानी : तुम्हीं ने तो मुझे inspire किया था। अ....actually मुझे लगता है कि मैं ग़लत टाईम पर आ गयी। मुझे बाद में....

मयंक : नहीं-नहीं, मेरे मम्मी-पापा हैं।

वानी : ओह! हैलो

माँ : कैसी हो बेटी?

डैड : दिमाग ख़राब है तुम्हारा? कैसी हो बेटी।

मयंक : मैंने कैसे तुम्हें inspire किया?

वानी : तुमने ठीक ही तो कहा था, मेरे पास काफ़ी टाईम है और अब मुझे talent दिखाने का मौक़ा भी मिल रहा है।

मयंक : कैसा मौक़ा?

डैड : और कैसा मौक़ा? (माँ से) तुम ये सब तमाशा देखने के लिए यही रहोगी?

हंसल : (डैड का हाथ पकड़ते हुए) डैड, आप नहीं जानते आप क्या कह रहे हैं।

डैड : धक्का दे रहा है। अपने बाप को धक्का दे रहा है?

माँ : केतन....केतन, तुम यहाँ बेडरूम में आ जाओ।

वानी : (जाते हुए) ठीक है मयंक, मुझे बाद में फोन कर लेना।

मयंक : (उसे रोकता है) नहीं मुझे अभी बताओ, तुम क्या कहना चाहती हो?

वानी : कुछ नहीं, बस जाने से पहले तुम्हें bye कहने आयी थी।

मयंक : जाने से पहले?

वानी : वो toaster कंपनी मुझे यूरोप के टूर पर ले जाना चाहती है। पैसे भी अच्छे दे रहे हैं।

डैड : शर्म नहीं आती इसे कहते हुए?

वानी : मेरे लिए बहुत अच्छा मौका है मयंक। आख़िर मुझे भी नए-नए अनुभव होने चाहिए ना?

मयंक : नए अनुभव?

वानी : हाँ, एक 24 साल की लड़की को दुनियाँ explore करने का मौका मिलना ही चाहिए।

मयंक : वानी, मेरी बात सुनो। (फोन की घंटी बजती है।)

डैड : (फोन की तरफ देखता है।) तुमने सुना? वो कुक है। काम करने के लिए जल्द ही आने वाली है। (घंटी फिर बजती है।)

वानी : एक हफ़्ता मैं अभी यहाँ हूँ मयंक। फोन कर लेना मुझे।

हंसल : डैड, आप प्लीज़ इधर आइए और मुझसे बात कीजिए।

डैड : फिर धक्का दे रहा है मुझे? (घंटी बज रही है।)

मयंक : वानी, तुम यूरोप नहीं जा सकती। मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। (घंटी बज रही है।)

माँ : मयंक तुम्हारा फोन....

वानी : तुम मुझे जाने नहीं दोगे?

मयंक : वानी, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। (घंटी बज रही है।) तुम्हारे बिना मेरी ज़िंदगी अधूरी है। इन तीन हफ़्तों में ये मुझे अच्छे से समझ में आ गया....मैंने तुम्हें कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढा। I love you sweet-heart.

माँ : मयंक, तुम्हारा फोन....

वानी : मयंक, ये बातें पहले भी मैं सुन चुकी हूँ।

मयंक : पहले की बात और थी.....अब की बात और है....तुम्हें मुझ पर विश्वास करना होगा....मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता...तुम मेरी हो वानी। (घंटी बज रही है।)

माँ : हंसल फोन तो उठाओ....

हंसल : डैड....

डैड : एक बार और उसने मुझे धक्का दिया, तो ऐसा घूँसा पड़ेगा कि नाक से ख़ून निकलने लगेगा।

हंसल : मैं धक्का नहीं दे रहा हूँ। (घंटी बज रही है।)

माँ : अरे कोई फोन ही नहीं उठ रहा है...क्या हो गया है सबको?...(खुद फोन उठाती है।)

वानी : मयंक, तुम सच कह रहे हो?

माँ : (फोन पर) हैलो...

वानी : मन से?

मयंक : हाँ, मन से। इतना सच्चा मैं आज से पहले कभी नहीं था।

माँ : मयंक, तुम्हारे लिए है।

मयंक : मैं busy हूँ। तुम मैसेज ले लो।

माँ : हे भगवान! फिर से मैसेज।

हंसल : कौन है माँ?

माँ : मुझे क्या पता बेटा....मेरे पास पेंसिल है क्या?

हंसल : ठीक है माँ, कोई बात नहीं। इतना excite मत हो।

डैड : बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। ख़ूब चिल्लाओ अपनी माँ पर। धक्का दो उसे।

हंसल : मैं धक्का नहीं दे रहा हूँ।

माँ : मयंक....कृष्ण राव....नहीं कृष्ण चंद का फोन है...मुझे तो मितली

आ रही है।

डैड : कृष्ण चंद ?.......अरे दिल्ली का सबसे बड़ा ....wholesale dealer मुझे दो फोन।

मयंक : नहीं डैड, नहीं।

डैड : हैलो.....कृष्ण चंद जी....क्या हाल चाल ?....बहुत खुशी हो रही है आपसे बात करते हुए.....आर्डर ?......कौन सा आर्डर ?....हाँ-हाँ मि. पटेल ही बात कर रहा हूँ...नहीं...उसके पिता जी....अच्छा ?... .एक मिनट। उसके लिए है।

मयंक : (फोन पर) हैलो मि. कृष्ण चंद जी....अच्छा ?....ये तो बहुत अच्छी ख़बर है....आप उसी सुबह वाले आर्डर की बात कर रहे हैं ना ?.. ..हाँ-हाँ.... हो जाएगा.... एक हफ़्ते के अन्दर पहुँच जाएगा। अरे नहीं, ये तो मेरा फर्ज़ है.....Thank you very much....good bye. (फोन रखता है।)

डैड : दिल्ली वाले कृष्ण चंद के बारे में ये कैसे जानता है ?

मयंक : मुझे ख़बर मिली कि वो शहर में है। मैंने फोन करके उनसे मीटिंग की। 2-3 बार उसे लंच पर ले गया। अकेले ? (जेब से पेपर निकालता है।) ये लीजिए। ये आर्डर है। भिजवा दीजिएगा प्लीज़। (डैड हैरानी से पेपर देखते हैं।)

डैड : मैं दो साल से दिल्ली वाले कृष्ण चंद के पीछे पड़ा हुआ था।

हंसल : तो भाई, आप काम में बिज़ी थे ? तभी वो सुन्दरम के यहाँ से फोन आया था।

डैड : सुन्दरम के यहाँ से ?...अरे आज मुझे उनके यहाँ से फैक्स आया, नए आर्डर के लिए। एक आर्डर भेजना है आज ही।

मयंक : डैड, ये तो मेरा फर्ज़ था। आपके लिए मुझे इतना तो करना ही चाहिए।

डैड : मेरे लिए ? मेरे लिए कुछ मत करो। जो करना है अपने लिए करो। मुझे तुम्हारा अहसान नहीं चाहिए।

मयंक : डैड प्लीज़...प्लीज़....मैं अहसान नहीं कर रहा। अगर आप मुझे काम पर नहीं रखना चाहते तो कोई बात नहीं। पर हम एक-दूसरे के दोस्त तो हो सकते हैं?

डैड : मैं एक निखट्टू के साथ कोई दोस्ती नहीं रखना चाहता।

मयंक : मैं निखट्टू क्यों हूँ?

डैड : शादी हुई है इसकी?

मयंक : हाँ।

डैड : तब ये निखट्टू......(मयंक की ओर देखकर) क्या?

मयंक : हाँ मेरी शादी हो सकती है, अगर वानी हाँ कह दे तो। (वानी से) वानी, मैं अभी तुम्हारे साथ मंदिर चलने के लिए तैयार हूँ। अगर वहाँ पुजारी सो भी रहा होगा तो भी मैं उसे पकड़ के ले आऊँगा। मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। हाथ जोड़ के तुमसे विनती करता हूँ.. .प्लीज़.....मुझसे शादी करोगी ना?

वानी : (शर्माते हुए) मयंक.....(मयंक उसे गले लगाता है फिर माँ की ओर देखकर) माँ....माँ, तुम टेन्ट वालों को फोन कर दो। ये वानी त्रिवेदी है और मैं इससे शादी करना चाहता हूँ।

हंसल : क्या बात है भाई?

माँ : (वानी से गले लगते हुए) अरे बेटी!

हंसल : (माँ के पास जाकर) माँ, बधाई हो आपको।

मयंक : (मयंक पिता की ओर देख रहा है) डैड....(डैड उससे दूर हटते हैं।)

माँ : केतन, तुम्हारा बेटा शादी करने जा रहा है।

डैड : मुझसे तो कोई कुछ कह ही नहीं रहा। सिर्फ़ मुझे धक्के दिए जा रहे हैं।

मयंक : डैड, मुझे नहीं पता मैं ये बात आपसे कैसे कहूँ लेकिन आपकी बातें सही थी। मेरा मतलब सही हैं। सच में मैं एक निखट्टू था। और जहाँ तक मैं समझता हूँ, हर आदमी को थोड़ी देर के लिए निखट्टू होना भी चाहिए। मुझे अगर आज ये बात समझ में आ

गयी कि शादी करना ज़रूरी है और शादी में ही प्यार ढूँढ़ा जा सकता है, तो बगैर निखट्टू बने ये नहीं हो सकता। मैं आपसे और भी बहुत कुछ कहना चाहता हूँ डैड, पर अभी नहीं। हम सब आज की रात कहीं बाहर जाकर celebrate क्यों नहीं करते?

डैड : नौकरी है नहीं इसके पास और ये celebrate करना चाहते हैं।

माँ : केतन, बच्चे हमें बाहर ले जाना चाहते हैं।

डैउ : उनसे कहो कि वो अपने पैसे बचाएँ।

मयंक : डैड, क्या आप एक बार हमारे साथ dinner पर नहीं चल सकते?

वानी : नहीं मयंक, तुम्हारे पापा ठीक कह रहे हैं। बाहर रेस्तरां में बात-चीत हो नहीं पाती। और आज मैं बातें करना चाहती हूँ। मुझे एक नया परिवार जो मिला है। (डैड से) प्लीज़, क्या हम सब कॉफी पीने आपके घर आ सकते हैं?

डैड : (उसे देखता है, फिर मुस्कुराता है) अ....हाँ, ये हो सकता है।

मयंक : Thank you डैड।

डैड : लेकिन हम जल्दी सो जायेंगे। तुम्हें कल सुबह 8 बजे ऑफिस पहुँचना है। और मैं कोई बहाना नहीं सुनना चाहता।

मयंक : आप सच कह रहे हैं? क्या आप सच में मुझे वापस रखना चाहते हैं?

डैड : जी नहीं। मैं तुम्हारी जगह चौकीदार को रखना चाहता हूँ।

मयंक : (हँसता है फिर वानी के पास जाता है) चलो, चलो....चलते हैं।

वानी : Good night मयंक।

हंसल : Good night वानी।

माँ : बेटा हंसल, तुम्हें जो अच्छा लगे तुम करो। तुम बच्चे तो हो नहीं।

हंसल : Thank you माँ।

माँ : लेकिन हर friday night को घर आ जाना। और अपने कपड़े भी लेते आना।

हंसल : डैड, आपने कुछ कहा नहीं। क्या इस तरह मेरा घर से दूर रहना

ठीक है ना?

डैड : नहीं।

हंसल : नहीं? ओह डैड!

डैड : तो मुझसे क्यों पूछ रहे हो फिर? मैं अगर ना बोलूँ तो भी उसका मतलब हाँ है। एक टाईम था जब मेरे ना का मतलब ना था। लेकिन अब तुम 21 साल के हो और ना का मतलब हाँ है। समझे?

हंसल : थैंक्स डैड।

मयंक : (हंसल से) सी यू हंसल। मैं बारह बजे तक आ जाऊँगा।

हंसल : अ....अ....भाई.......12 नहीं.....एक।

मयंक : Right. ठीक कहा मिस्टर श्याम गोपाल वर्मा। आइए माँ...डैड आइए। (सब चले जाते हैं और सिर्फ हंसल रह जाता है। जैकेट पहनता है और कमरे में इधर-उधर देखता है। घंटी बजती है।)

हंसल : (जोर से) मैं आ रहा हूँ वर्षा। (दरवाज़ा खोलता है। 50 साल की एक महिला वहाँ खड़ी है।) लीला बुआ?

लीला बुआ : मैं यहीं पड़ोस में थी, तो सोचा तुमसे मिलती चलूँ।

(गाना बजता है - बजने दो शहनाई यार।)

....The End...

मूर्ति-पूजा अधमाअधमा

[कुछ लोग नाचते गाते हुए मंच पर आते हैं और एक मूर्ति के इर्द-गिर्द गोल-गोल घुमते हुए शोर मचाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। उनमें खूब उत्साह दिख रहा है। ज़ोर-ज़ोर से वो नारे भी लगा रहे है।]

सफल देव की जय जय कार, सफल देव आये हैं द्वार।
सफल देव की जय जय कार, सफल देव आये हैं द्वार।।

सफल देव का पाके प्यार, हो जाएगा जीवन पार।
सफल देव का पाके प्यार, हो जाएगा जीवन पार।।
एक दो तीन चार, वो ही दिलाये मोटर कार।
एक दो तीन चार, वो ही दिलाये मोटर कार।।
पाँच छह सात आठ, सफल देव से मिलते ठाठ।
पाँच छह सात आठ, सफल देव से मिलते ठाठ।।
नौ दस ग्यारह बारह, सफल देव का चेहरा न्यारा।

तन तना तन तन तन तारा, सफल देव का है ये नारा।
तन तना तन तन तन तारा, सफल देव का है ये नारा।।
सफल देव का सुन के नारा, सब के हो जाएँ पौ बारा।

तन तना तन तन तन तारा, सफल देव का है ये नारा।।
सफल देव जिसको मिल जाए वो न रह जाए बेचारा।
तन तना तन तन तन तारा, सफल देव का है ये नारा।
तन तना तन तन तन तारा, सफल देव का है ये नारा।।

सफल देव से माँगू रे, पिक्चर में एक किरदार,
हे पिक्चर में एक किरदार।
सफल देव से माँगू रे, सुंदर सी सेक्सी नार,
हे सुंदर सी सेक्सी नार।
सफल देव से माँगू रे, सारी हीराइनों का प्यार,
हे सारी हीराइनों का प्यार।
सफल देव से माँगू रे, दौलत और शोहरत अपार,
हे दौलत और शोहरत अपार।
सफल देव से माँगू रे, डिस्को और बीयर बार,
हे डिस्को और बीयर बार।
सफल देव से माँगू रे, होंडा सिटी मोटर कार,
हे होंडा सिटी मोटर कार।

हे पिक्चर में एक किरदार,
हे सुंदर सी सेक्सी नार,
हे सारी हीराइनों का प्यार,
हे दौलत और शोहरत अपार,
हे डिस्को और बीयर बार,
हे होंडा सिटी मोटर कार......

हे प्रभु सफल देव, हमको यही उपहार दो।
सिर्फ़ मैं जीवित रहूँ, और सबको मार दो।।
और सबको मार दो,
और सबको मार दो,
(और इसके साथ ही सब लोग अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं।)

साधक : इतना शोर! चारों ओर इतना प्रदूषण फैला रहे हैं, सभ्य समाज के ये असभ्य लोग। क्या ईश्वर को ऐसे प्रसन्न किया जाता है? मैं आपसे पूछता हूँ, क्या यही तरीक़ा है भगवान को ख़ुश करने का, भगवान को पाने का? क्या कहते हैं हमारे शास्त्र? क्या कहा है हमारे प्रबुद्ध महर्षियों ने? ईश्वर निराकार है, ईश्वर सर्वव्यापी है, ईश्वर सर्वज्ञ है।

ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ना है तो मन की गहराइयों में उतरना होगा। अब ये बताइए, कि लोगों को परेशान करके, हुल्लड़बाज़ी करके ये कैसे ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं? क्या आप लोगों ने इनकी प्रार्थनाऐं सुनी? क्या आपको लगता है कि इन्हें ईश्वर चाहिए?

आज के इस scientific युग में इस तरह की मूर्ख़ता! कब छूटेंगे हम इस पाखण्ड और झूठ के जाल से? कब मनुष्य जाति की प्रज्ञा जागेगी? आज के इस वैज्ञानिक युग में कब समझेंगे लोग की ईश्वर की अनुभूति बाहर नहीं भीतर हो सकती है। लकड़ी, पत्थर और POP की मूर्ति बना कर हम कैसे मनुष्य की आस्था जगायेंगे? और अगर थोड़ी देर के लिए आस्था जाग भी जाए तो क्या आपको दिखाई नहीं देता कि मूर्ति विसर्जन के बाद इन मूर्तियों की क्या हालत होती है? कभी जाकर देखिए इनके टूटे हुए हाथ और पैर समुद्र के किनारे कैसा वीभत्स दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

तो क्या यही है आपकी आस्था? और ऊपर से विसर्जन के बाद जो समुद्र में प्रदूषण फैलता है, जिसके कारण कितने समुद्री जीव मारे जाते हैं, उसकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा?

अब अगर मैं इस पत्थर को उठा कर इसे लाल रंग से रंग दूँ और एक सुंदर सी चुनरी ओढ़ा दूँ, तो क्या इसमें ईश्वर का निवास हो जाएगा? और अगर मैं इस मूर्ति को यहाँ से उठा कर यहाँ रख दूँ, तो क्या अब वहाँ ईश्वर नहीं है? बोलिए....

(सब लोग ॐ जय जगदीश को humming में गाते हुए

खड़े हो जाते हैं और जिस स्थान पर मूर्ति रखी थी उसके चारों ओर घुमने लगते हैं। अचानक एक आदमी को पता चलता है कि मूर्ति अपने स्थान पर नहीं है। बाकी लोग ॐ जय जगदीश की humming कर रहे हैं?)

पहला व्यक्ति : अरे मूर्ति कहाँ गयी? भाइयों मूर्ति ग़ायब हो गयी!

दूसरा व्यक्ति : लगता है मूर्ति चोरी हो गयी है!

तीसरा व्यक्ति : अरे ऐसे कैसे कोई मूर्ति चुरा सकता है। हम सब यहीं तो थे।

चौथा व्यक्ति : मैंने पहले ही कहा था कि शनिवार के दिन मूर्ति मत लाओ। देखा! सफल देव नाराज़ हो गए।

पाँचवाँ व्यक्ति : अब हम सबको पाप लगेगा।

छठा व्यक्ति : अरे ये सब छोड़ो और मूर्ति को ढूँढ़ो। जल्दी।

(सब लोग चारों तरफ फैल जाते हैं और आस-पास खड़े लोगों से मूर्ति के बारे में पूछने लगते हैं। फिर एक-एक करके सब मूर्ति के पुराने स्थान पर आ जाते हैं और रोने लगते हैं।)

पहला व्यक्ति : (राते हुए) हमारे सफल देव हमें छोड़ कर चले गए!

दूसरा व्यक्ति : सफल देव कहाँ चले गए!

(सब लोग रो रहे हैं। थोड़ी देर बाद उनकी आवाज़ mute हो जाती है पर रोना जारी है।)

साधक : कब सुधरेंगे ये लोग? कब अक्ल आएगी इन्हें? चाहते हैं संसार में सफलता और इसके लिए घर में एक मूर्ति लगा दी और सोचते हैं सफल हो जायेंगे। भूल गए हैं श्री कृष्ण की वाणी ''फल चाहिए तो कर्म करो'' बिना कर्म किये संसार में कुछ हासिल नहीं होता। अगर होंडा सिटी और सुंदर नार चाहिए तो उसके लिए वैसे कर्म करने होंगे।

और अगर परमात्मा को पाना है तो घोर तपस्या करनी होगी, इस पाखण्ड़ और ढ़ोंग से कुछ हासिल नहीं होगा।

(फिर से रोते हुए लोगों की आवाज़ उभरने लगती है।

रोते-रोते एक आदमी की नज़र मूर्ति पर पड़ती है।)

पहला व्यक्ति : अरे वो देखो मूर्ति।

सब लोग : कहाँ है मूर्ति ?....कहाँ है ?

पहला व्यक्ति : वो देखो ! वहाँ।

(सब लोग मूर्ति को देख कर ख़ुश हो जाते हैं और slow motion में मूर्ति की तरफ़ भागते हैं।)

पहला व्यक्ति : हमारे सफल देव मिल गए।

दूसरा व्यक्ति : चमत्कार......चमत्कार.......चमत्कार।

Chorus : जय हो।

तीसरा व्यक्ति : देखा ! मैंने कहा था ना कि मूर्ति शनिवार को ही खरीदनी चाहिए।

चौथा व्यक्ति : हाँ, अब हम सब सफल हो जायेंगे।

Chorus : जय हो।

पाँचवा व्यक्ति : चलो-चलो इस मूर्ति को वापस उसके स्थान पर ले चलते हैं।

छठा व्यक्ति : नहीं-नहीं। सफल देव यहाँ खुद चल कर आये हैं। इन्हें यहाँ से मत उठाओ।

छठा व्यक्ति : हाँ, वो जगह अपवित्र थी। ये जगह पवित्र है। अब सफल देव यही रहेंगे।

(सब लोग नारे लगाते हुए अपने-अपने स्थान पर वापस चले जाते हैं।)

Chorus : सफल देव की जय जय कार, सफल देव आये हैं द्वार।
सफल देव की जय जय कार, सफल देव आये हैं द्वार।।1।।
सफल देव की जय जय कार, सफल देव आये हैं द्वार...

हे प्रभु सफल, देव हमको यही उपहार दो।
सिर्फ़ मैं जीवित रहूँ और सबको मार दो।।
और सबको मार दो।
और सबको मार दो।
देवों के देव सफल हो देव, मुझे तो मोटर कार दो।
सुंदर सी सेक्सी नार दो और एक बीयर बार दो।
सारी हीरोइनों का प्यार दो और दौलत शोहरत अपार दो।
घर में तो हो बस एक ही, पर बाहर मुझको चार दो।
हमारा और कौन है, सब कुछ हमारे आप हो।
अरे आप मेरे बाप के भी बाप के भी बाप हो।
अरे आप मेरे बाप के भी बाप के भी बाप हो।
अरे आप मेरे बाप के भी बाप के भी बाप हो।

हे प्रभु सफल देव हमको यही उपहार दो।
सिर्फ़ मैं जीवित रहूँ और सबको मार दो।।
और सबको मार दो।
और सबको मार दो।

(लास्ट 3 लाईन्स के दौरान सब एक-दूसरे को मार देते हैं और जमीन पर गिर जाते हैं।)

साधक : उत्तमो ब्रह्म सद्भावो, मध्यमा ध्यान धारणा,
जपस्तुति स्याद धमः, मूर्ति पूजा अधमा धमः

साधक : उत्तमो ब्रह्म सद्भावो।

Chorus : उत्तमो ब्रह्म सद्भावो।

साधक : मध्यमा ध्यान धारणा।

Chorus : मध्यमा ध्यान धारणा।

साधक : जपस्तुति स्याद धमः।

Chorus : जपस्तुति स्याद धमः।

साधक : मूर्ति पूजा अधमा धमः।

Chorus : मूर्ति पूजा अधमा धमः।

Chorus : (Dance करते हुए)
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
(Then Freez)

साधक : सबसे उत्तम है ब्रह्मी भाव।

Chorus : ब्रह्मी भाव, ब्रह्मी भाव, ब्रह्मी भाव।

साधक : उसके बाद है ध्यान धारणा।

Chorus : ध्यान धारणा, ध्यान धारणा, ध्यान धारणा।

साधक : बाद उसके है जप और स्तुति।

Chorus : जप और स्तुति, जप और स्तुति, जप और स्तुति।

साधक : और सबसे अधम है मूर्ति पूजा।

Chorus : मूर्ति पूजा, मूर्ति पूजा, मूर्ति पूजा।

Chorus : मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।
मूर्ति पूजा धमा धमा।

मूर्ति पूजा धमा धमा।

(इसके साथ ही सब लोग अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। और साधक ध्यानावस्था से टूटता है, उत्साह और ऊर्जा से भरा हुआ, जैसे उसे कुछ रास्ता मिल गया हो।)

साधक : मैंने सोच लिया है कि मुझे क्या करना है। रूढ़िवादिता और अंधविश्वासों पर चोट करनी होगी। विचार को विचार से ही काटा जा सकता है। गुरुदेव भी तो कहते हैं, मनुष्य जाति को अगर जड़ता की कीचड़ से बाहर निकालना है तो पुराने संकीर्ण विचारों की लौहश्रृंखला पर विवेक की चोट करनी पड़ेगी। तभी सोया हुआ मनुष्य जाग सकता है। ईश्वर और धर्म के नाम पर समाज में फैले हुए पाखण्ड, झूठ और प्रपंच के जाल को तोड़ना ही होगा। मन मस्तिष्क पर जब चोट लगेगी, तब नया सोचने के लिए व्यक्ति मज़बूर होगा।

मुझे मालूम है कि इस काम में लोग मेरे दुश्मन भी हो सकते हैं, मुझे तक़लीफ़ भी पहुँचा सकते हैं। किन्तु सत्य कहने के लिए और ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए मैं कटिबद्ध हूँ। चाहे इस काम में मुझे अपने प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े, मैं समाज को जड़ता से बाहर निकालने में अपना पूरा योगदान दूँगा।

(सभी लोग पूरे जोश के साथ उठते हैं और विसर्जन की तैयारी करते हैं। सब नारे लगाते हुए चल रहे हैं। एक आदमी ने मूर्ति को हाथ में उठा लिया और पूरे शोर-शराबे के साथ सब चल रहे हैं। अचानक से साधक उनके सामने आ जाता है।)

साधक : ठहरो।

पहला व्यक्ति : अरे! रास्ते से हट जाइए।

दूसरा व्यक्ति : हटिये भाई साहब! हटिये रास्ते से।

साधक : मैं हटने के लिए नहीं, आप लोगों से बात करने के लिए आया हूँ।

पहला व्यक्ति : अरे कौन है ये?

दूसरा व्यक्ति : हटाओ इसे रास्ते से।

तीसरा व्यक्ति : तुम्हें दिखाई नहीं देता क्या?

साधक : मुझे तो दिखाई दे रहा है, किन्तु आप लोगों की आँखें अभी तक खुली नहीं है। अन्धविश्वास और झूठी परंपरा के अँधेरे में अभी भी भटक रहे हो। सत्य और ईश्वर के मार्ग से दूर, जड़ता की कीचड़ में धँसते जा रहे हो।

पहला व्यक्ति : हमें गाली दे रहा है।

दूसरा व्यक्ति : हमारा अपमान कर रहा है।

तीसरा व्यक्ति : अधर्मी है ये।

चौथा व्यक्ति : नास्तिक है ये।

पाँचवा व्यक्ति : देखते क्या हो? मारो इसे।

सब लोग : हाँ–हाँ। मारो इसे। मारो मारो मारो।

(साधक अपने हाथों में रखी रस्सी को खोलकर आक्रामक मुद्रा में उछालकर उनकी तरफ फेंकता है। अब रस्सी का एक सिरा उसके हाथ में है और दूसरा सिरा मूर्ति पूजकों के हाथ में।)

साधक : ख़बरदार! अगर एक भी क़दम आगे बढ़ाया तो। सत्य को मारना आसान नहीं है। सत्य सूर्य के उस प्रज्वलित प्रकाश की तरह है जो बादलों के कारण, थोड़े समय के लिए छिप तो जाता है, किन्तु बादलों के अन्धकार के छंटते ही, फिर से

ज्योतिर्मय हो जाता है।

साधक : बोलो ईश्वर का वास कहाँ है?

सभी : इस मूर्ति में।

साधक : अगर इस मूर्ति में ईश्वर का वास है तो इसकी चौकी में भी ईश्वर है। वो हाथ जो इसे उठा रहे हैं, उसमें भी ईश्वर है। जिस जमीन को तुम घेरे खड़े हो वहाँ भी ईश्वर है। मत भूलो कि ईश्वर सर्वव्यापी है। यत्र-तत्र-सर्वत्र। कण-कण में ईश्वर है।

पहला व्यक्ति : हाँ! ये सही कह रहे हैं। ये सही कह रहे हैं। (वो आदमी उसके पाले में चला जाता है।)

दूसरा व्यक्ति : अरे क्या सही कह रहा है? हम वही कर रहे हैं जो हमारे पूर्वज करते थे। ये हमारी परंपरा है।

साधक : तो क्या ये ज़रूरी है कि हम अपने पूर्वजों की ग़लतियों को दोहरायें? हमारे पूर्वज तो बन्दर थे, तो क्या हम भी बंदरों की तरह जियें? ज्ञान का प्रकाश जब फैल रहा हो तो अज्ञान कब तक अपने अस्तित्व को बचाता फिरेगा? उतिष्ठित जाग्रत वरान्निबोधत। उतिष्ठित जाग्रत। उतिष्ठित जाग्रत। बोलो! बोलो ईश्वर की पूजा कैसे हो?

सब लोग : हमें नहीं पता।

साधक : बोलो ईश्वर से सम्बन्ध कैसे हो?

सब लोग : हमें नहीं पता।

पहला व्यक्ति : जो हम कर रहे हैं, वही हमारी पूजा है।

साधक : उतिष्ठित जाग्रत।

दूसरा व्यक्ति : ओह! हमें परेशान मत करो।

साधक : उतिष्ठित जाग्रत।

तीसरा व्यक्ति : हमें अँधेरे में ही जीने दो।

साधक : उतिष्ठित जाग्रत।

चौथा व्यक्ति : वहाँ सुकून है।

साधक : उतिष्ठित जाग्रत।

सब लोग : अँधेरा सही है! अच्छा है! हमें नाचने दो। उछलने दो! शराब पीने दो! बहकने दो!

साधक : नहीं। अब ये और नहीं होगा। **(इसके साथ ही एक आदमी और उसके पाले में आ जाता है।)** ईश्वर से संबंधित होना है तो पहले शारीरिक शक्ति को मानसिक शक्ति में बदलना होगा और फिर मानसिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति में। और यह संभव है ध्यान से। **(एक और आदमी उसके पाले में आता है।)** केवल ध्यान से। **(एक और आदमी उसके पाले में आता है।)**

ढोल नगाड़े बजाकर, हुल्लड़ बाज़ी करते हुए, शराबियों की तरह नाचने गाने से और बाहरी आडम्बर से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। कभी नहीं। ध्यान ही एकमात्र पथ है। एकमात्र रास्ता है। ईश्वर तुम्हारे भीतर है। जहाँ मन समाप्त हो जाता है वही से तुम्हारे ही भीतर ईश्वर का साम्राज्य आरम्भ हो जाता है। **The Kingdom of God is within you. To search for God in external world is futile and wastage of time. Dive deep within to find him.**

सब लोग : Dive deep within to find him.
Dive deep within to find him.

(इसके साथ ही आखरी दो बचे लोगों में से एक और उसकी तरफ चला जाता है।)

Person : हाँ। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मैं भी आपके साथ हूँ।

(अब इस तरफ सिर्फ़ एक आदमी बचता है जिसके हाथ में मूर्ति है, वो रस्सी छोड़ देता है और कुछ सोचने लगता

है।)

छठा आदमी : सब चले गए। अब मैं अकेला क्या करूँ? और इस मूर्ति को कहाँ रखूँ? अरे हटाओ! इसे फेंक देता हूँ।

(और वो मूर्ति को फेंकने के लिए चल पड़ता है।)

साधक : नहीं–नहीं। इसे फेंको मत। ये एक कलाकार की कृति है। उसकी रचना है। इसे हमें संग्राहलय में रखना चाहिए। तभी उस कलाकार का सम्मान होगा।

(सभी लोग सर्कल बना कर बैठ जाते हैं और मिलित ध्यान किया जाता है।)

वसुधैव-कुटुम्बकम

(दृश्य : 1)

वनस्पति जगत – ज़िंदाबाद ज़िंदाबाद।
Deforestration – मुर्दाबाद मुर्दाबाद।
वनस्पति जगत – ज़िंदाबाद ज़िंदाबाद।
Deforestration – मुर्दाबाद मुर्दाबाद।
फूल का खिलना – ज़िंदाबाद ज़िंदाबाद।
पेड़ का कटना – मुर्दाबाद मुर्दाबाद।

हम तुमसे पृथ्वी आबाद, मत करो हमको बर्बाद।
हम तुमसे पृथ्वी आबाद, मत करो हमको बर्बाद।
पेड़ पौधे और लगाओ, अपना जीवन स्वयं सजाओ।
पेड़ पौधे और लगाओ, अपना जीवन स्वयं सजाओ।

नहीं चलेगी नहीं चलेगी, इंसानों की तानाशाही नहीं चलेगी।
नहीं कटेंगे नहीं कटेंगे और जंगल नहीं कटेंगे।
नहीं मरेंगे नहीं मरेंगे और पेड़ नहीं मरेंगे।

फल फूल पत्ती शाखा, ये पृथ्वी हम सब की माता।
फल फूल पत्ती शाखा, ये पृथ्वी हम सब की माता।

जगह-जगह से पता चला है, हर जंगल जलता चला है।
ऐ इंसानों आँखें खोलो, जंगल को जलने से रोको। - 2
O_2 लो CO_2 दो, ख़ुद जियो और जीने दो। - 2
ख़ुद जियो और जीने दो।
ख़ुद जियो और जीने दो।

(इस हो-हल्ले के बाद मुनादी का प्रवेश।)

मुनादी : सुनो, सुनो, सुनो। वनस्पति जगत के बाशिंदों सुनो। हर साल की तरह हमारा सालाना कॉन्फ्रेंस, ग्रीन पार्क में होने जा रहा है। आप सभी लोगों से निवेदन है कि भारी तादाद में वहाँ आयें। ये मौका है। अपनी-अपनी शिक़ायतें दर्ज कराने का। अपनी बात कहने का। और एक दूसरे से मिलने का। इस बार हमारा theme है EMPOWERMENT OF PLANT LIFE.

सुनो, सुनो, सुनो। हमारी EXECUTIVE COUNCIL ने ये तय किया है कि इस बार न्याय पाकर रहेंगे। और इसलिए हमारा एक जत्था, सिटरस, अलोएवेर्रा और मल्लिका पूरी कोशिश करके प्रजापति से ख़ुद मिलने जायेंगे और उन पर दबाव डालेंगे कि वनस्पति जगत के साथ न्याय हो।

सुनो, सुनो, सुनो। आज शाम भारी तादाद में ग्रीन पार्क में सालाना कॉन्फ्रेंस के लिए ज़रूर आयें। सुनो, सुनो, सुनो।

(दृश्य : 2)

(बरगद मीटिंग के लिए अकेला खड़ा है और सबके आने का

इंतज़ार कर रहा है। सब बारी-बारी से आते हैं।

बरगद : अभी तक कोई नहीं आया। देर से आने की ये इंसानों की आदत हम पेड़ों को भी लग गयी है। किसी से पूछो तो बहाने बनायेंगे। मैं तो ट्रैफिक में फँस गया था। बिल जमा करने गया था। राशन लेने गया था। ऑक्सीजन लेने गया था। और अब तो छोटे बच्चों को भी वीडियो गेम की आदत पड़ गयी है।

(तभी एक-एक करके कुछ पेड़-पौधे आते हैं और यही बहने बनाते हैं।)

पेड़ 1 : (भागते-भागते) अरे! सॉरी सॉरी दादा, मैं ट्रैफ़िक में फँस गया था।

पेड़ 2 : सॉरी दादा। सॉरी, मैं बिल भरने के लिए गया था। बहुत लम्बी लाइन थी। इसलिए लेट हो गया।

पेड़ 3 : सॉरी-सॉरी, सॉरी दादा, मैं राशन लेने गया था, इसलिए थोड़ा टाइम लग गया।

पेड़ 1 : अरे वो देखो, सूरजमुखी भी आ गया।

बरगद : अरे सूरजमुखी! भई तुम तो आज तक किसी भी मीटिंग में लेट नहीं हुए। फिर आज क्या हुआ?

सूरजमुखी : दादा, आपको तो पता ही है कि मैं सूरज को देखकर चलने वाला पौधा हूँ। अब मैं क्या बताऊँ? जिस तरफ से सूरज निकलता है, वहाँ इंसानों ने एक बड़ी बिल्डिंग बना दी है। अब मुझे सूरज चाचा दीखते ही नहीं तो मैं क्या करूँ? इन इंसानों ने तो मेरा चलना-फिरना मुश्किल कर दिया है। वो तो चमेली है, जो मुझे ठीक समय पर उठा देती थी। लेकिन आज वो देर से आई, इसलिए मैं भी लेट हो गया।

सभी : ओ....हो। चमेली?

बरगद : शांत, शांत, शांत। Control yourself. Flirt करने की ये इंसानों की आदत आप लोगों ने भी सीख ली है। इससे मीटिंग की

गंभीरता नष्ट हो जाती है। No flirting, No flirting.

(सभी सर झुका लेते हैं। साथ ही साथ गुलाब का फूल चादर ओढ़े, धीरे-धीरे आता है।)

पेड़ 1 : अरे! ये गुलाब का फूल इतना छुपते छुपाते क्यों आ रहा है?

गुलाब : आजकल हमारी तो कोई इज़्ज़त ही नहीं है। लड़के लड़कियाँ अपने love affair की कहानी मुझसे शुरु तो कर लेते हैं, पर जल्दी ही मुझे कचरे के ढ़ेर में फेंक देते हैं। अब वो दिन चले गए जब मुझे कई दिनों तक घरों की शोभा बनाकर रखा जाता था।

(सब लोग शोर मचाते हैं।)

बरगद : शांत, शांत, शांत। अब हम लोग आज की बातचीत शुरू करते हैं। वनस्पति जगत के सभी भाइयों और बहनों। आप सभी का इस सालाना कॉन्फ्रेंस में स्वागत है। जैसा कि आप सभी को पता है कि आज की मीटिंग का एजेंडा है EMPOWERMENT OF PLANT LIFE.

(सभी एक साथ आश्चर्य से repeat करते हैं EMPOWERMENT OF PLANT LIFE.)

आज का इंसान कितना बदल गया है। वो भूल गया है कि इस धरती पर सबसे पहले हम आये, उसके बाद जानवर आये और उसके बाद इंसान। पहले हमारी पूजा होती थी। जीवन जीने के संघर्ष में हमें जो उपयुक्त स्थान मिलना चाहिए था, वो इंसानों ने हमें दिया। हमने भी उनका सम्मान करते हुए अपना सर्वस्व इंसानों पर लुटा दिया। उन्हें ऑक्सीजन देना हो, फल देना हो, घर बनाने के लिए लकड़ी देनी हो या औषधि बनाने में मदद करनी हो, ये सब हमने किया और आज भी कर रहे हैं। लेकिन आज इंसानों का व्यवहार बदल गया है। हमारे प्रेम और मैत्री का नाजायज़ फ़ायदा उठाकर पूरी पृथ्वी को तबाही के रास्ते पर ला दिया है। हमारे बार-बार आगाह करने पर भी उनके व्यवहार में परिवर्तन नहीं आया। हर तरह से हमने उन्हें

समझाने की ये कोशिश की, कि अगर अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो हमारी भी रक्षा करनी होगी। वसुधैव-कुटुम्बकम् के आदर्श को अपने जीवन में अपनाना होगा। लेकिन अपने लोभ और लालच में अंधे होकर ये इंसानी नस्ल हम सब के लिए एक ख़तरा बनती जा रही है। पृथ्वी पर हमारे बाद आया है, लेकिन अपनी मनमानी करते हुए इस पृथ्वी को बर्बाद करने में लगा हुआ है।

(शोर मचने लगता है और सब बोलते हैं, shame, shame, shame. कुछ लोग नारे लगाते हैं। Deforestation-मुर्दाबाद मुर्दाबाद।)

बरगद : शांत, शांत, शांत।

पेड़ 2 : हम हमारी समस्या के बारे में कुछ कहना चाहते हैं। ठंडी-ठंडी छाँव के लिए हमें इंसानों ने सड़क के किनारे लगा तो दिया है, पर बर्ताव जानवरों से भी बदतर करते हैं। Advertisement के नाम पर हमारे बदन में कीलें ठोक-ठोक कर पोस्टर और बैनर लगाते हैं। जगह-जगह से बुरी तरह काटते छांटते हैं।

पेड़ 3 : हम जंगल के पेड़ों के बारे में कभी सोचा है? शहर में तो फिर भी थोड़ी बहुत इज़्ज़त हो जाती है लेकिन यहाँ तो पूरा का पूरा जंगल साफ कर दिया जाता है। Deforestration कितनी तेज़ी से हो रहा है शायद ही आपको मालूम हो। जिस तेज़ी से जंगल कट रहे हैं, आने वाले बीस सालों में आधे ही रह जाएंगे। तब देखना Global Warming की समस्या कितनी बढ़ती है।

छोटा पौधा : अरे भाई, हम छोटे पौधों के बारे में जानना नहीं चाहोगे? हमें तो लोग पार्कों में, क्यारियों में लगा तो देते हैं, लेकिन जो लोग गुटखा और पान खाने जैसे नवाबी शौक़ रखते हैं, वो सीधा हमारे ऊपर ही थूक देते हैं। आपको पता है तब हमें साँस लेने में कितनी दिक्कत होती है।

(सभी लोग नारा लगाने लगते हैं। वनस्पति जगत-ज़िंदाबाद ज़िंदाबाद।)

बरगद : Parliament के नेताओं की तरह व्यवहार ना करें। शान्ति रखें। वनस्पति जगत की मर्यादा को बनाये रखें। सबको इन्साफ़ मिलेगा।

(तभी हांफता हुआ एक छोटा पौधा आता है। सब लोग एक स्वर में बोलते हैं। Late comer - Late Comer-3)

छोटा पौधा : आप लोग मेरी बात सुनिए। मैं क्यों लेट हुआ ये नहीं जानना चाहेंगे आप?

पेड़ 1 : हाँ–हाँ बताओ। आँधी आ गयी थी क्या? या फिर किसी लिली या चमेली ने जगाया नहीं आपको?

पेड़ 2 : अरे भई! कोई पहाड़ गिर गया था क्या?

छोटा पौधा : आप लोगों को मज़ाक सूझ रहा है पर असल में तो पहाड़ ही गिर गया था। जिस ज़मीन पर बैठकर आप लोग ये मीटिंग कर रहे हैं, अब ये ज़मीन हमारी नहीं रहेगी। अभी–अभी मैंने ख़बर सुनी है कि हमारे एक नेता ने इस ज़मीन पर बिल्डिंग बनाने का प्रस्ताव पास किया है।

(सब लोग एक साथ चिल्लाते हैं। - हे भगवान!)

पेड़ 2 : हमें कैसे विश्वास हो कि ये ख़बर सच्ची है। अफवाह भी तो हो सकती है।

छोटा पौधा : मुझ पर यकीन कीजिये। मैं सच कह रहा हूँ। मैं उसी गाड़ी में बैठा था, जिसमें नेताजी अपनी गर्ल फ्रेंड के साथ थे। अपने कानों से सुनी है मैंने ये बात। 40 माले की बिल्डिंग बनेगी यहाँ पर और सब फ्लैट डेढ़ करोड़ वाले।

(सब लोग फिर से चिल्लाते हैं। - हे भगवान!)

बरगद : अब तो भगवान ही कुछ कर सकते हैं। आइए हम सब मिलकर भगवान से प्रार्थना करते हैं।

(सब मिलकर एक स्थान पर जाते हैं और प्रार्थना शुरु करते हैं।)

हे प्रभु जग के रचयिता, ये विनय सुन लो हमारी।

आज थक कर टूट कर, आये शरण में हैं तुम्हारी।।
हमें ना डर है मौत का, और ना प्रलय तूफ़ान का।
पर डराता है हमें ये, दुष्कर्म इंसान का।।
हम भी प्रजा हैं आपकी, इस धरा पर अधिकार है।
हिंसक बनाया मनुज को, ये कैसा आपका प्यार है।।
रोटी, कपड़ा, मकान हमसे और क्या वो चाहता है।
हम भी हैं इस सृष्टि के अंग, ये नहीं वो मानता है।।
हमसे लेता प्राण वायु, और हमीं को काटता है।
दो उसे थोड़ी समझ, खुद को ही क्यों वो मारता है।।
हम सभी के मेल से ही, सृष्टि ये चलती चलेगी।
अब भी ना चेता तो धरती, प्रलय से पहले फटेगी।।
प्रलय से पहले फटेगी।
प्रलय से पहले फटेगी।

(दृश्य - 3)

(ज़ंजीरों से बंधा हुआ एक आदमी गिरता है। वो थका हारा है, कराह रहा है। धीरे-धीरे आँखें खोलकर जगह को पहचानने की कोशिश कर रहा है। गिरने की आवाज़ से चकित होकर सभी पेड़-पौधे आवाज़ का कारण ढूँढने लगते हैं। भागम-भाग का माहौल है।)

पहला : ये आवाज़ कैसी है?
दूसरा : ज़रूर कहीं बादल फटा होगा।
तीसरा : मुझको लगता है, ये भूकंप की आवाज़ है।
चौथा : कहीं बाढ़ तो नहीं आ गयी?
पाँचवा : लगता है कहीं हवाई जहाज़ गिरा है।
छठा : कहीं दूसरे ग्रह से कोई एलियन तो नहीं आ गया?
सातवां : अरे ये देखो! मनुष्य जैसा कोई प्राणी यहाँ आ रहा है।
(सभी धीरे-धीरे मनुष्य को घेर लेते है।)

बरगद : अरे! ये तो मनुष्य ही है। **(इंसान धीरे-धीरे खड़ा होता है।)**

आदमी : मैं कहाँ हूँ? आप लोग कौन हैं? ये कैसी जगह है?

पहला पेड़ : ये वनस्पति जगत है मूर्ख। हम सब पेड़-पौधे हैं।

दूसरा : तुम हमारी दुनियाँ में हो।

तीसरा : हमें क्या काटोगे तुम, तुम ख़ुद कट जाओगे।

चौथा : हमें क्या मारोगे तुम, तुम ख़ुद मर जाओगे।

पाँचवा : हे मानव अनुरोध नहीं, हम देते हैं चेतावनी।

छठा : अगर तुम चेते नहीं तो, मिट जायेगी तेरी छावनी।

सातवा : जीना दूभर हो जाएगा, चिल्लाओगे पानी-पानी।

पहला : तुम हमसे हो हम तुमसे नहीं, मत कर तू मनमानी।

दूसरा : मत बन लोभी, मत बन स्वार्थी, मत बन तू अज्ञानी।

तीसरा : अब तो समझो जानो, नहीं तो पड़ेगी मुँह की खानी।

चौथा : क्या चाहिए तुम्हें, क्या नहीं दिया हमने, फिर क्या है हमारा दोष?

पाँचवा : फूल दिया है, फल दिया है, फिर क्या है तुम्हारा रोष?

छठा : कार्बन लिया है, ऑक्सीजन दिया है, कितना बड़ा है तेरा कोष?

सातवां : अपनी प्रशंसा नहीं करते, हक़ीक़त बयान करते हैं।

पहला : जीवित रहकर जीवन देते, मरकर भी काम करते हैं।

दूसरा : लज्जित हूँ तुम मानव हो, और हमें कानन वन कहते हैं

तीसरा : अरे इससे इतनी बातें क्यों कर रहे हो? मारो इसे। ख़त्म कर दो।

चौथा : हाँ-हाँ। ईश्वर ने हमें मौक़ा दिया है कि हम इनसे बदला ले सकें।

पाँचवा : हाँ-हाँ। हमें बदला चाहिए। बदला चाहिए।

बरगद : रुक जाओ। तुम सब भूल रहे हो कि तुम चाहो तो भी बदला नहीं ले सकते। सृष्टि के रचयिता ने तुम्हें सेवा और त्याग के लिए बनाया है। तुम किसी का जीवन ले नहीं सकते। ईश्वर ने हमें ये मौक़ा दिया है कि हम अपनी बात सीधा इंसान तक पहुँचा सकें। हमें इससे बात करनी चाहिए।

आदमी : What's the problem dude? Why this fuss?

सभी एक साथ : प्रॉब्लम? तुम्हें अभी तक प्रॉब्लम का नहीं पता?

(सभी ग़ुस्से में हैं।)

पहला : हमारा अस्तित्व ख़तरे में है और ये dude dude कर रहा है।

दूसरा : जंगल के जंगल बर्बाद हो रहे हैं। हमारी नस्ल तबाह हो रही है और तुम्हें अभी तक प्रॉब्लम का ही पता नहीं।

तीसरा : खुद को सृष्टि के उच्चतम प्राणी कहते हो और अपने से कमजोरों की रक्षा कैसे की जाती है, इसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

चौथा : परमात्मा ने तुम्हें पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों के साथ रहने के लिए बनाया है। हम सब की रक्षा करने के लिए।

सभी : तुम रक्षक नहीं, भक्षक हो। इंसान के रूप में शैतान हो।

You don't deserve to be called the evolved species.

तुम लोभी हो। तुम लालची हो। तुम स्वार्थी हो। अंधे हो। मुर्ख हो।

आदमी : (दर्द में) आह! बस करो। प्लीज़ बस करो। मैं इतने इलज़ाम नहीं सह सकता। मुझ पर यक़ीन कीजिए। हम इंसानों की गलती का मुझे कोई इल्म नहीं है। मैं इतना जानता हूँ कि हम तरक्की कर रहे हैं। सभ्यता के शिखर पर पहुँच रहे हैं। विज्ञान ने जितनी तरक्क़ी की है, जितनी उन्नति आज की है, अब तक कभी नहीं की। आप लोगों का नुकसान कैसे हो रहा है? सच, मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

बरगद : वनस्पति जगत का ये आरोप है मनुष्य जाति पर कि अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उन्होंने पेड़-पौधों पर जो जुल्म किये हैं, वो पूरी पृथ्वी के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं।

(सभी अर्ध वृत्त बना कर खड़े हो जाते हैं और बारी-बारी से अपनी बात कहते हैं।)

आदमी : हमने जो किया वो एक बेहतर जीवन बनाने के लिए किया है।

पहला : तुम्हारा बेहतर जीवन हमारे लिए नर्क बनता जा रहा है।

दूसरा : उसी का नतीजा ये है कि 11000 साल पहले हमारी संख्या जितनी थी उसकी आधी रह गयी है।

तीसरा : और तुम्हारी जनसंख्या बढ़ती ही जा रही है।

चौथा : तुम्हारी भूख बढ़ती ही जा रही है, जिसकी वजह से तुम्हें और जमीन चाहिए और घर चाहिए।

पाँचवा : यही कारण है deforestation का। जंगलों को काटने का। तुम्हारे The World Research Institute का कहना है कि जिस तेज़ी से जंगल कट रहे हैं, 20 साल के अन्दर बचे हुए जंगल भी आधे रह जायेंगे।

पहला : इसका नतीजा क्या होगा पता है? तुम्हारे द्वारा छोड़ा गया CO_2 absorb करने के लिए पर्याप्त पेड़ नहीं बचेंगे। तुम्हारा साँस लेना भी मुश्किल हो जाएगा।

आदमी : पर मैंने तो सुना था क ये सब Global Warming के कारण हो रहा है जो....

दूसरा : अरे मूर्ख! Global Warming भी तो Deforestation के कारण ही बढ़ रहा है।

तीसरा : पेड़ कम होंगे, तो Global Warming और बढ़ेगी।

चौथा : जंगल होंगे तो पेड़ होंगे। तभी पानी की, मिट्टी की, पौधों की और जानवरों की रक्षा होगी।

पाँचवा : इतनी सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती?

छठा : तुम्हारे कारण CO_2 बढ़ता जा रहा है और O_2 कम होता जा रहा है।

पहला : तुम्हारे कारण जंगलों से जातियाँ गायब हो रही हैं।

दूसरा : तुम्हारे कारण Global Warming worse होती जा रही है।

तीसरा : तुम्हारे कारण नदियाँ सूख रही हैं।

चौथा : तुम्हारे कारण Glaciers का तापमान बिगड़ता जा रहा है।

पाँचवा : तुम्हारे कारण Soil Erosion हो रहा है।

सभी : अब समझ में आया कि प्रॉब्लम क्या है?

आदमी : हाँ–हाँ! मैं समझ रहा हूँ आपकी और इस पूरी पृथ्वी की प्रॉब्लम। आप मुझे.....मेरा मतलब है, इंसानों को एक मौक़ा

दीजिए। मैं अपने बड़े भाइयों के सामने ये सारी समस्या रखूँगा। समाज के बड़े-बड़े नेताओं और बड़े-बड़े उद्योगपतियों के समक्ष आपकी समस्या रख दूँगा। मुझे विश्वास है कि ये बात जब उन्हें पता चलेगी तो वो ज़रूर कोई हल खोजेंगे। मैं तो एक मामूली इंसान हूँ, पर ये समझ में आ गया है कि अगर हम अपने लोभ पर थोड़ा नियन्त्रण कर ले, तो शायद ये पृथ्वी बच सकती है। सच में, ये धरती आप सबकी वजह से ही तो इतनी सुन्दर और हरी-भरी है। हम संकल्प लेते हैं कि धरती की रक्षा के लिए हम साथ-साथ जियेंगे। साथ-साथ फलेंगे फूलेंगे और साथ-साथ प्रगति करेंगे।

(सब लोग एक formation बना कर एक गीत गाते हैं।)

फूलों से, ख़ुशबू से, पेड़ों से, पत्तों से, सजी है धरती हमारी।
नदियों से, पेड़ों की, बादल की, बिजली की, दुनियाँ है अपनी आभारी।।
फूलों से, ख़ुशबू से, पेड़ों से, पत्तों से, सजी है धरती हमारी।
सूरज की किरणों से, पानी की लहरों से, खिलती है फूलों की क्यारी।।
फूलों से, ख़ुशबू से, पेड़ों से, पत्तों से, सजी है धरती हमारी।
जंगल से, पर्वत से, चाँद और सितारों से, सजी है ये दुनियाँ प्यारी।।
फूलों से, ख़ुशबू से, पेड़ों से, पत्तों से, सजी है धरती हमारी।
धरती हमारी।
धरती हमारी।
धरती हमारी।

बूँद, बिंदु और सागर

(दृश्य 1)

(सभी कलाकार दुपट्टे को दोनों किनारे पर पकड़े हुए हवा में लहरा रहे हैं। सागर का दृश्य बना रहे हैं।)

सूत्रधार : सागर, अथाह सागर। जिसकी कोई सीमा नहीं, कोई परिधि नहीं, कोई दायरा नहीं। विशाल धरती के साथ अपने में अनोखी दुनिया समेटे, सागर। (पीछे सागर के बीच से निकली एक बूँद) सागर की सल्तनत में समाई एक बूँद! एक नन्ही सी बूँद, जिसका अस्तित्व सागर में निहित है। सागर की लहरों के साथ अठखेलियाँ करती, कभी सागर तट पर पहुँच कर मिट्टी की सुगंध लेती, तो कभी वापस सागर की गहराइयों में गोते लगाते हुए मुँगे की चट्टानों से टकराती। एक नन्हीं सी बूँद! जिसका सब कुछ सागर है। उसी की तरह असंख्य बूँदें सागर में हैं। उनमें से कुछ से उसकी मैत्री भी है। बस अपनी इसी दुनिया में वो मज़े से रह रही थी। पर एक दिन हठात उसके मन में प्रश्न उठा!!!!

बूँद : मैं कौन हूँ? क्या हूँ? क्यों हूँ? सब कुछ तो है यहाँ, सब कुछ है। पर कुछ तो कमी है। यहाँ सब कुछ बहुत अच्छा है, पर मेरी निजता का अभाव है। मुझे खोजनी होगी अपनी निजता। पहचानना होगा अपना अस्तित्व। सुना है ये धरती बहुत ख़ूबसूरत है। वहाँ पहाड़ हैं, बाग हैं, नदियाँ हैं, झरने हैं, अद्‌भुत सौन्दर्य है। वहाँ कितना अच्छा लगता होगा ना। मुझे वहाँ जाना चाहिए। शायद वहाँ मेरी ख़ुद से पहचान हो सके।

सूत्रधार : सागर ने उसे रोका। बूँदों ने उसे समझाया। पर उसने किसी की ना सुनी। वो सभी बंधन खोल कर उड़ चली। वो अब, बस आज़ाद होना चाहती थी। फिर सूरज की किरणों ने उसे सराहा। हवा ने उसे मार्ग दिखाया। और वो चली......चली.....चली।

(दृश्य – 2)

सूत्रधार : और इस तरह बूँद उड़ चली, अनंत आकाश में। एक अनजानी मंज़िल की तलाश में। बूँद की तरह एक और शख़्स, जिसकी आँखों में बहुत से सपने हैं। दिल में हज़ारों ख़्वाहिशें हैं। कुछ कर गुज़रने की चाहत है। इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद है। और उसी अस्तित्व की तलाश में वो एक दिन घर छोड़कर भाग निकलती है। ठीक उसी दिन, जिस दिन उसके घर वाले उसकी शादी कर रहे थे।

(पीछे का दृश्य–बिंदु रस्सी डालकर दीवार फाँद रही है और शादी का मंडप तैयार हो रहा है।)

पण्डित : अब कन्या को बुलाइए।

(भाई दौड़ता हुआ आता है)

भाई : पापा–पापा! बिंदु अपने कमरे में नहीं है।

पिता : क्या कह रहे हो? देखो वो यहीं कहीं होगी।

भाई : नहीं पापा, वो घर में नहीं है।

पिता : ऐसा नहीं हो सकता। ढूँढो उसे।

(कोरस के सभी लोग बिंदु को इधर-उधर ढूँढने लगते हैं, तभी बिंदु का फोन आता है।)

बिंदु : हैलो पापा ?

पिता : हाँ बेटा ! बेटा बिंदु, कहाँ हो तुम बेटा ?

बिंदु : पापा मैं ठीक हूँ। मैं शादी नहीं करना चाहती थी, इसलिए मैं घर छोड़ रही हूँ।

पिता : बेटा, तुम्हें हमसे कहना तो चाहिए था।

बिंदु : पापा आप बात सुनते कहाँ हैं।

पापा : बिंदु ये क्या किया तुमने ? तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।

बिंदु : मेरे पास कोई और रास्ता नहीं था।

चाचा : देखो बेटा, घर लौट आओ। ये हमारी इज़्ज़त का सवाल है। तुम ऐसा नहीं कर सकती।

मित्र : बिंदु ये तुमने अच्छा नहीं किया।

पिता : लौट आओ बिंदु।

बिंदु : पापा मैं ठीक हूँ। आप परेशान ना हों। मेरी फलाईट है पापा। मैं रखती हूँ। bye।

(कोरस जहाज़ का दृश्य बनाते हैं और बिंदु उसमें सवार होकर निकल जाती है।)

(दृश्य - 3)

बूँद : आह ! क्या घटा है। आनंद ही आनंद ! ये क्या है ? अरे ! ये तो पंछी हैं। कितनी आसानी से उड़ रहे हैं। बिल्कुल मेरी तरह। कितना अच्छा लग रहा है। अरे ! ये क्या है ? ये तो कोई शहर मालूम होता है। इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें ! अरे ! ऐसा लगता है जैसे मैं तो इनसे

टकरा ही जाऊँगी। (तभी पास से एक हवाई जहाज निकलता है) अरे! ये क्या था? ओह! ये तो कोई हवाई जहाज है। ओह! मैं तो डर ही गयी। (फिर बादलों में चली जाती है।) आह! कितने सुंदर हैं ये बादल। ज़मीन से जितने लगते थे, उनसे भी कहीं ज्यादा। क्या बात है! बादल ही बादल! और यहाँ से ज़मीन कितनी छोटी दिखती है। कितनी छोटी और कितनी प्यारी। अरे वाह! इतने घने-घने जंगल!

(तभी आवाज़ आती है। कुछ बूँदे बादलों पर सवार उसके सामने से निकलती हैं। थोड़ी हाय हैलो होती है।)

बूँद : हैलो, कैसी हो?

बूँद 1 : मैं अच्छी हूँ। तुम कैसी हो? कैसा लग रहा है यहाँ?

बूँद : आनंद ही आनंद।

बूँद 1 : हाँ। सागर में तो हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं था। और यहाँ देखो।

बूँद : हाँ, सच कहा। वहाँ सागर तो हमें जहाँ चाहता था, वहाँ ले जाता था। हमारी तो कोई मर्ज़ी ही नहीं थी। और यहाँ हम आज़ाद बादलों के मख़मली बिस्तर पर हवा में उड़ते जा रहे हैं। उड़ते ही जा रहे हैं।

बूँद 1 : हाँ-हाँ! अच्छा, हम चलते हैं।

बूँद : अलविदा। देखा, अगर मैं बाहर ना निकलती तो वहीं फँसी रह जाती। सागर की गहराइयों में। (थोड़ा आगे चलती है, फिर नीचे देखती है।) अरे! वो नीचे क्या है? ओ हो! इतना बड़ा, इतना विशाल मंदिर। अरे! ये तो बहुत सारे हैं। सच में, ये मानव निर्मित दुनियाँ कितनी अद्भुत है! (फिर आगे बढ़ती है।) अरे वाह! क्या नज़ारा है। रेत ही रेत। अरे ये तो रेगिस्तान है। राजस्थान का रेगिस्तान। वाह क्या नज़ारा है! आज मैं पंछी की तरह सब कुछ देख रही हूँ और कहाँ वहाँ सागर में। अरे-अरे! ये गोल-गोल क्या है? ये तो संसद भवन है। यानी कि मैं दिल्ली में हूँ। मैंने दिल्ली देखी। वाह! मज़ा आ गया। अब तो वापस लौटकर सबको बताऊँगी कि मैंने दिल्ली देखी। छोड़ो, अब वापस जाएगा ही कौन? मुझे तो बस यहीं रहना है। मैंने देखा, बस यही बहुत है।

(दृश्य 4)

सूत्रधार : और इस तरह अपनी आज़ादी का जश्न मनाते हुए बूँद महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और दिल्ली पार करते हुए ऊपर बढ़ती ही जा रही थी। और इधर बिन्दु नई उमंगों और तरंगों के साथ अपने सपनों के शहर, मायानगरी में आ गई। ख़ुद को पहचानने, जानने, की वो क्या है? समाज में उसकी अहमियत क्या है?

(डिस्को का सीन। सब लोग कोरस में डांस कर रहे हैं। बिंदु अपने एक दोस्त के साथ आती है, तभी कोरस में डांस करता हुआ एक लड़का बिंदु के दोस्त से hi कहता है।)

पवन : Hi बादल। How are you ?

बादल : I'm fine dude. What's up? After long time yaar.

पवन : हाँ यार, काम बहुत ज़्यादा था। अच्छा सुन, meet my friend Bindu. कुछ दिन पहले ही यहाँ आई है। और बिंदु, This is Baadal. एक बड़ी MNC में काम करता है।

(दोनों आपस में Hi कहते हैं और फिर उनके बीच बातचीत शुरु हो जाती है।)

बादल : So, कहाँ से हो बिंदु ?

बिंदु : मैं लखनऊ से हूँ।

बादल : ओह! Such a nice city. मैं एक बार गया था वहाँ। ऑफिस का कुछ काम था। So, इस मायानगरी में कैसा लग रहा है?

बिंदु : (हँसते हुए) बहुत अच्छा लग रहा है। कितनी fast है न यहाँ की लाइफ़। I love this kind of lifestyle. सब अपने काम में बिज़ी हैं। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है।

बादल : ये तो है! अच्छा यहाँ आने का कोई ख़ास मकसद ?

बिंदु : ख़ुद की पहचान बनानी है। अपने पैरों पर खड़ा होना है। आकाश

की ऊँचाईयों को छूना है।

बादल : क्या बात है? बहुत सारे सपने सजा रखे हैं।

बिंदु : इस पुरुष प्रधान समाज में अपना वजूद बनाना है।

बादल : तो फिर कोई जॉब वगैरह करनी है या....

बिंदु : हाँ-हाँ, क्यों नहीं। उसी की तो तलाश है, but जॉब ऐसी होनी चाहिए जो मेरे सपनों को साकार कर सके।

बादल : (बादल उसको अपना कार्ड देते हुए) हाँ -हाँ, क्यों नहीं। एक काम करो। कल मुझे इस नंबर पर फोन करो।

(इसके बाद दोनों डांस करने लगते हैं। थोड़ी देर बाद दोनों साथ-साथ बाहर चले जाते हैं। उसके बाद अगले दिन डिस्को का सीन है। डांस करते हुए कुछ लोग आपस में बातें करते हैं।)

पहला : अरे भई! कुछ सुना?

दूसरा : क्या?

पहला : अरे वो बिंदु है ना।

दूसरा : कौन? वो। पवन की फ्रेंड?

पहला : हाँ-हाँ, वही। कल मैंने उसे beach पर देखा।

दूसरा : सच? क्या बात कर रहा है? दो दिन में इतनी progress?

पहला : और वो भी बादल के साथ।

तीसरा : अरे छोड़ो यार। बादल तो है ही ऐसा। किसी भी लड़की को अपने वश में कर लेता है और उसने उसे नौकरी भी दिलवाई है।

दूसरा : सच! क्या बात कर रहा है?

तीसरा : हाँ-हाँ। सिर्फ़ यही नहीं, अब बिंदु उसके साथ रहने वाली है।

दूसरा : अरे! क्या मज़ाक कर रहा है?

चौथा : अरे भाई! अब बिंदु की आँखों में इतने बड़े-बड़े सपने जो हैं। और उन्हें पूरा करने के लिए बिंदु को कुछ तो करना ही पड़ेगा। अब देखना है कि बादल किस तरह उसे अपने बॉस गिरिराज के

पास भेजता है।

दूसरा : सच! क्या बात कर रहा है यार?

तीसरा : और नहीं तो क्या। पहले भी तो कितनी लड़कियों के साथ ऐसा कर चुका है।

दूसरा : अरे! क्या मज़ाक कर रहा है यार?

पहला : अरे! देखो देखो, वो आ रहे हैं।

(बादल और बिंदु एक-दूसरे की बाहों में बाहें डाले आते हैं। Song change हो जाता है। दोनों डांस करने लगते हैं। तभी बिंदु के फोन की घंटी बजती है और ये फोन सागर का है। सागर वही लड़का है जिससे बिंदु की शादी होने वाली थी, लेकिन बिंदु भाग आई थी।)

सागर : हेल्लो, बिंदु? तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया बिंदु? मेरी क्या गलती थी जो तुम शादी के मंडप से भाग आई?

(बिंदु डांस फ्लोर से नीचे उतर आती है।)

बिंदु : देखो सागर। गलती किसी की नहीं थी। गलती सिर्फ़ वक़्त की थी। मैं शादी नहीं करना चाहती थी। अच्छा सुनो, मेरे ऑफिस से ज़रूरी कॉल आ रहा है। मैं बाद में बात करती हूँ।

(वो फोन disconnect करके वापस बादल के पास आ जाती है। और डांस करने लगती है। थोड़ी देर बाद फिर से एक फोन आता है। फोन पापा का है।)

पापा : हेल्लो, बिंदु। बेटा कैसी हो तुम?

बिंदु : हेल्लो, पापा मैं ऑफिस में हूँ। एक urgent meeting चल रही है। मैं बाद में बात करती हूँ। (फिर से बादल के पास आ जाती है।)

बादल : किसका फोन था?

बिंदु : कुछ नहीं यार, घर से फोन था। हमेशा परेशान करते रहते हैं। घर छोड़ दिया लेकिन इन्होंने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। अब भी मुझे बच्चा समझते हैं।

(दोनों डांस करते रहते हैं।)

(दृश्य 5)

सूत्रधार : इस तरह बिंदु और बादल एक-दूसरे में खोये हुए, साथ-साथ जीने और मरने की क़समें खाने लगे। अब दोनों की सुबह एक-दूसरे से बात करके शुरू होती, तो दोनों की शाम किसी restro में, किसी थिएटर में या किसी डिस्को में एक साथ ख़त्म होती। बावजूद इसके, बिंदु को बादल की असलियत का अंदाज़ा नहीं था। दोनों ने एक साथ live in में रहने का मन बना लिया था। अब बिंदु बादल की दिलाई नयी नौकरी से और अपनी इस नयी ज़िंदगी से, नए अनुभव से ख़ुद को बहुत ज़्यादा अल्हादित महसूस कर रही थी। उसके पैर ज़मीन पर नहीं टिक रहे थे। उसका मन हवा में उड़ रहा था। अब उसे अपनी मंज़िल साफ़ नज़र आ रही थी। यही तो चाहती थी वो। पुरुष प्रधान समाज में अपना वजूद बनाना।

और इधर बूँद उड़ती चली जा रही थी। अपनी आज़ादी का जश्न मनाते हुए, नयी दुनियाँ देख कर अपने सपनों को साकार करते हुए। लेकिन अचानक वो एक पहाड़ी से जा टकराई।

बूँद : आह! ये क्या था? एक पल के लिए तो जान ही निकल गयी। अरे! मैं ख़ुद पर काबू क्यों नहीं कर पा रही। मैं तो गिरती ही चली जा रही हूँ। नहीं-नहीं, मैं इसे पकड़ लेती हूँ। नहीं, मैं रुक क्यों नहीं पा रही हूँ? ओहो! इतनी बड़ी-बड़ी चट्टानें। ये तो मेरी जान ही ले लेंगी। उफ़्! आगे तो कुछ दिख ही नहीं रहा है। अरे ये क्या! ये तो कोई झरना मालूम होता है। इतना बड़ा झरना! ये तो मेरी जान ही ले लेगा। अरे मैं गिरी! मैं गिरी...आ....(चिल्लाती है) ओह! मैं कहाँ फँस गयी? मेरा ख़ुद पर काबू ही नहीं। इतने बड़े-बड़े झरने, अरे ये तो नाला है। मैं नाले में फँस गयी? ये पतला नाला तो मुझे एक ही दिशा में खींच रहा है। रुको-रुको, मुझे होश में तो आने दो। संभलने तो दो। अरे ये तो मुझे संभलने ही नहीं दे रहा। अपने

वेग से मुझे खिंचे जा रहा है। ओह! कोई मुझे यहाँ से निकालो। कहाँ मैं बादलों पर थी और कहाँ ये....यहाँ तो ठीक से साँस भी नहीं ले पा रही हूँ। अब ये क्या है? मैं तो तालाब में फँस गयी। अरे मुझे भी अपने साथ ले चलो। ये तो एक छोटा सा तालाब है। मेरा यहाँ दम घुट रहा है। मैं तो इतनी बड़ी जलराशि का हिस्सा हूँ, जिसमें अथाह तालाब समा जायेंगे। इससे अच्छा तो मैं सागर में ही थी। हाँ! मुझे सागर को नहीं छोड़ना चाहिए था। प्लीज़, कोई मुझे यहाँ से बाहर निकालो। मैं यहाँ नहीं रह सकती। मेरा यहाँ दम घुट रहा है।

(वो निकलने की कोशिश करती रहती है और अचानक निकल भी जाती है।)

आह! मैं तो निकल गयी। ओह! लेकिन ये तो पतली सी नदी है। वहाँ से निकल कर यहाँ फँस गयी? नहीं, मैं यहाँ नहीं रह सकती। सागर, मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ। मुझे अपने पास बुला लो। मैं तुम्हारे पास ही ठीक थी। सागर......सागर.....सागर।

(दृश्य 6)

सूत्रधार : और इस तरह बूँद अपने अस्तित्व की खोज में वापस सागर के सीने में समाने के लिए तड़पने लगी। इसे पता चल चुका था कि उसका अस्तित्व सागर में ही था। अब, बस वो सागर से मिलना चाहती थी और इधर बिंदु, जो कल तक बादल के साथ रहने के सपने सजा रही थी और अपने सपनों के आकाश में उड़ती जा रही थी, एक दिन अचानक उसे बादल की हकीक़त का पता चल गया।

(डिस्को का सीन है। कुछ लोग आपस में बात कर रहे हैं।)

पहला : अरे भई कुछ सुना?

दूसरा : क्या?

पहला : अरे वो बिंदु है ना?

दूसरा : कौन? वो बादल की गर्लफ्रेंड?

पहला : अरे काहे की गर्लफ्रेंड। उनका ब्रेक-अप हो गया।

दूसरा : सच! क्या बात कर रहा है?

तीसरा : अरे ये तो होना ही था। उसे बादल की असलियत का पता चल गया।

दूसरा : अरे! क्या मज़ाक कर रहा है यार? बादल तो इतना होशियार था।

तीसरा : अरे होशियार तो था! लेकिन इतनी जल्दी उसे बिंदु को ऐसा करने के लिए नहीं कहना चाहिए था।

दूसरा : सच! क्या बात कर रहा है?

तीसरा : अपना कैरियर बनाने के लिए उसे बिंदु को अपने बॉस गिरिराज के पास नहीं भेजना चाहिए था।

दूसरा : अरे! क्या मज़ाक कर रहा है यार?

चौथा : अब पता चलेगा बिंदु को। बहुत हवा में उड़ रही थी ना। एक ही झटके में ज़मीन पर आ गिरी।

(बिंदु कुछ देर पहले वहाँ आ गयी थी और उनकी बातें सुन रही थी। उसने शराब भी पी रखी है।)

बिंदु : हँसो। ख़ूब हँसो। बहुत अच्छा लग रहा है ना? कि बादल ने मेरे साथ धोखा किया। तुम सब मक्कार एक जैसे हो। क्या सोचता था वो? कि मैं कोई ऐसी वैसी लड़की हूँ। जो उसकी तरक्क़ी के लिए किसी के साथ सोने के लिए तैयार हो जाऊँगी। मैंने उससे प्यार किया था और उसका ये मतलब निकाला उसने। ये मायानगरी सिर्फ़ छलावा है, ढोंग है। अपने फ़ायदे के लिए इस दर्जे तक गिर जाते हैं लोग? यहाँ सबने मुखौटे लगा रखे हैं। अमीर होने का मुखौटा। सोशल होने का मुखौटा। इससे अच्छा तो हमारा छोटा सा शहर ही था। कम से कम लोग बुरे वक़्त में एक-दूसरे से हमदर्दी तो जताते थे। और यहाँ? मेरे साथ जो फ़रेब हुआ, उस पर गंभीरता से सोचने की बजाय मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं।

(पवन वहाँ पर डांस कर रहा था। पवन के पीछे भागती है।)

हे यू। तुमने मुझे मिलवाया था ना बादल से? क्या कहा था तुमने? MNC में काम करता है। अच्छा लड़का है। अरे वो....दलाल है! दलाल। अपने काम के लिए मुझे अपने बॉस के पास भेज रहा था। ये समाज है तुम्हारा? मैंने बहुत बड़ी ग़लती की यहाँ आकर।

(वो रोते-रोते नीचे बैठ जाती है। कोरस उसके इर्द-गिर्द घूमता हुआ सवाल पूछता है।)

पहला : क्यों परेशान हो रही हो अब? यही तो चाहती थी तुम। अपना अस्तित्व।

दूसरा : अपनी स्वतंत्रता। पुरुष प्रधान समाज में अपनी पहचान।

तीसरा : इसलिए तो शादी के मंडप से भाग कर आई थी तुम।

चौथा : अपने पाँव पर तो खड़ी हो चुकी हो। फिर क्यों दुखी हो?

पाँचवा : अपना अस्तित्व तो बना चुकी हो, जो सबको नसीब नहीं होता।

बिंदु : (रोते हुए) लेकिन इस कीमत पर नहीं बनाना चाहती थी। इतनी भारी कीमत चुकानी होगी मुझे, ये मैंने कभी नहीं सोचा था।

कोरस : क्या कीमत चुकाई है तुमने?

बिंदु : अपने प्यार की। अपनी भावनाओं की। मेरी भावनाएं इतनी सस्ती नहीं है। कोई उनके साथ इस तरह से खिलवाड़ नहीं कर सकता। इसलिए मैं शादी नहीं करना चाहती थी। मैं सिर्फ़ अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। वो हुआ ज़रूर, पर इतना बड़ा धोखा। मेरी सच्ची भावनाओं के साथ? मुझे बार-बार ऐसा लगता है जैसे किसी ने मेरा इस्तेमाल किया हो।

पहला : वो इसलिए क्योंकि तुमने अपना इस्तेमाल होने दिया।

दूसरा : तुम आसानी से वो सब कुछ पाना चाहती थी, जिसके लिए वर्षों लगते हैं।

तीसरा : मत भूलो कि अपने प्यार की बलि चढ़कर ही स्त्रियों ने इस शहर में कुछ हासिल किया है।

बिंदु : (कानों पर हाथ रखते हुए) ये मुझे पता नहीं था। मैं इस सबसे

अनजान थी।

चौथा : अब तो पता चल गया।

पाँचवा : अब क्या सोचती हो? क्या करोगी?

बिंदु : मैं कुछ नहीं जानती। कोई तो मुझे समझाओ। मुझे राह दिखाओ। मेरी मझधार में फँसी नाव को कोई तो किनारे पर पहुँचाओ।

(कोरस दो भागों में बँट जाता है और बिंदु के अन्दर शुभ-अशुभ का संग्राम शुरु होता है।)

कोरस अशुभ : जाओ। बादल से बदला लो। तुम भी नए-नए बॉयफ्रेंड बनाना शुरु कर दो।

(बिंदु इस पूरे sequence में लगातार रो रही है।)

कोरस शुभ : अपने दिल की सुनो बिंदु। याद करो, तुम्हें बचपन में माँ-बाप ने क्या शिक्षा दी थी? आज तुम दुखी हो तो कहीं कुछ गलत ज़रूर हुआ है।

कोरस अशुभ : सब सही है बिंदु। इस मौके को हाथ से जाने मत दो। थोड़े से समझौते से तुम्हारा करियर आगे बढ़ सकता है। अपना अस्तित्व बना सकती हो तुम।

कोरस शुभ : फिर से सोचो। एक स्त्री का अस्तित्व क्या है। क्या पुरुष जैसा बनना तुम्हारी निजता है?

कोरस अशुभ : पुरुष से मुकाबला करो। तुम हार स्वीकार मत करो।

कोरस शुभ : जानती हो नारी का अस्तित्व उसके मातृत्व में है। पुरुष बनने में नहीं।

कोरस अशुभ : बढ़े हुए क़दम पीछे मत लौटाओ बिंदु।

कोरस शुभ : लौट जाओ बिंदु। माँ-बाप की मर्ज़ी से ब्याह कर लो और एक माँ बनकर स्त्री होने की सार्थकता को सिद्ध कर लो।

कोरस अशुभ : रुक जाओ बिंदु। ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। बॉयफ्रेंड बनाओ।

कोरस शुभ : लौट जाओ बिंदु। माँ बनो। माँ!

कोरस अशुभ : रुक जाओ।

कोरस शुभ : लौट जाओ।

कोरस अशुभ : रुक जाओ।

कोरस शुभ : लौट जाओ।

बिंदु : आ.....आह! (खड़ी हो जाती है।) हाँ। स्त्री का अस्तित्व एक गौरवशाली माँ बनने में ही है। पुरुष के जैसे बनते बनते, मैं अपने आप से दूर हो जाऊँगी। और माँ बनने से, मैं अपने आप को पा लूँगी। प्रकृति ने मुझे जिस काम के लिए बनाया है, उसे पूरा करूँगी। मैं एक बेहतर सागर को जन्म दूँगी। एक ऐसे पुरुष को जो हर दृष्टि से आज के पुरुषों से आगे हो। जो एक स्त्री को सिर्फ़ भोग की वस्तु ना समझे। सामाजिक दायित्वों का जिसे बोध हो और नारी की सुरक्षा का भार लेने के लिए जो मन से बलवान हो। हाँ। मैं एक ऐसे पुरुष की माँ बनूँगी, जिसे पूरा संसार अपना आदर्श माने। जिसका हृदय सागर के सामान.......सागर! हाँ सागर! मुझे सागर से बात करनी है। सागर....सागर......सागर।

(तभी सागर का फोन आता है।)

सागर : हैलो, बिंदु? (सागर की आवाज़ सुनते ही वो रोने लगती है)

बिंदु : मुझे माफ़ कर दो सागर। मैंने शादी के मंडप से भाग कर अच्छा नहीं किया। मुझे पता चल गया कि तुम ही मेरे लिए सही थे। मुझे घर वालों की मर्ज़ी से ही शादी करनी चाहिए थी।

सागर : बिंदु, तुम रोओ मत बिंदु। अगर तुम चाहो तो मैं अब भी तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ।

बिंदु : सच! सच सागर?

सागर : हाँ बिंदु।

सागर : बिंदु!

बिंदु : सागर!

सागर : बिंदु!

(बिंदु अपने पिता के पास आती है। सागर भी वहीं है। दूसरी तरफ बूँद भी सागर की तरफ चली जा रही है। बिंदु अपने पिता के पैर छूती है और फिर सागर सागर चिल्लाते हुए सागर से लिपट जाती है। और दूसरी तरफ बूँद भी लहराती हुयी सागर की बाँहों में समा जाती है।)

यश का मूल्य

दृश्य 1

(एक कलाकार नाट्य मंचन कर रहा है।)

मुझे नहीं समझ में आ रहा कि ये मेरे साथ क्या हो रहा है? मुझसे कुछ भी ठीक नहीं हो रहा। एक बार फिर जीवन निराशा से भर गया है। बेमतलब, बेमानी लग रहा है सब कुछ। कहीं से कोई आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही। कुछ भी करने की इच्छा नहीं हो रही। क्या मेरा जीवन ऐसे ही हमेशा दु:ख से भरा रहेगा? क्यूँ हर बार ऐसा ही होता है। थोड़ी देर के लिए सुख और ख़ुशी के पल मिलते हैं, लेकिन फिर जल्दी ही दु:ख की काली अमावस्या घेर लेती है। मेरे मन की बगिया में थोड़ी देर के लिए आशा और उमंग के फूल खिलते हैं पर इससे पहले कि मैं उन फूलों का भरपूर आनंद लूँ वो मुरझा जाते हैं। सुख का दीया जलता हुआ दिखता तो ज़रूर है, कुछ समय के लिए अपनी रौशनी बिखेरता तो है लेकिन उसका मज़ा अभी लिया ही नहीं होता है कि दु:ख की कालिमा अपने अँधेरे जाल में पकड़ लेती है और फिर देर तक पकड़े ही रहती है। एक लम्बा वक्त गुज़र जाता है

उस जाल से निकलने में। क्यूँ ये बार-बार होता है और क्या सबके साथ ऐसा ही होता है या फिर मैं ही अभिशप्त हूँ। उफ! मैं अपनी इस निराशा और दु:ख का दोष किसको दूँ? मुझे नहीं पता। शायद मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। मेरी अपनी ही ग़लतियाँ हैं। मुझे ही खुद को और अपनी कमज़ोरियों को सुधारना होगा। पर मैं हार गया। मैं हार गया। मैं वो सब ना कर सका जो करना चाहता था। मेरा जीवन दु:ख और दर्द की एक गाथा बन गया है। सिर्फ़ घाव ही घाव हैं मेरे पास। मैं जियूँ (फूट पड़ता है) तो क्यूँ जियूँ? क्या करूँ और जी कर, केवल दु:ख और तक़लीफ़ पाने के लिए इस ज़िन्दगी को घसीटने का क्या मतलब है?

दृश्य 2

(दर्शक तालियाँ बजाते हैं। उनमें से एक-एक करके प्रशंसा के पुल बाँधते हैं।)

पहला : Sir, what a performance sir. Really!

दूसरा : पिछले दस सालों में पहली बार इतनी अच्छी performance देखी है सर।

तीसरा : सर, आपका ईमेल आईडी मिलेगा, प्लीज़?

चौथा : मिस्टर रामचंदानी, क्या किया आपने? वाह कमाल! बहुत अच्छे।

रामचंदानी : Hi, finally आप लोग आये। बहुत-बहुत धन्यवाद। Thank you very much.

पाँचवा : अरे आपका प्ले हो और हम ना आयें!

रामचंदानी : Thanks for appreciation. I am feeling honored. आज शाम को मेरे कुछ दोस्तों का get-together है। आप लोग भी आइए।

(सब कुछ ना कुछ बहाना बना कर वहाँ से निकलने लगते हैं।)

पहला : Sir, I would love to come. पर मैं अपनी बीवी के साथ Cine fare Awards देखने जा रहा हूँ। फिर कभी......

दूसरा : कल हो सकता है? मुझे मेरी मम्मी को हॉस्पिटल लेकर जाना है

बड़ी मुश्किल से appointment मिला है।

तीसरा : मेरी तो मीटिंग थी, postpone हो गयी थी इसलिए यहाँ चला आया। बिज़नस का schedule बहुत tight रहता है, नहीं हो पाएगा। सॉरी।

चौथा : अरे आप हमारे साथ क्यों नहीं चलते ? Cine fare awards देखने।

पाँचवा : हाँ, हमने सुना है, बलवान खान शर्ट उतार कर डांस करने वाला है।

दृश्य 3

(सब लोग जा चुके हैं। रामचंदानी दुखी है।)

रामचंदानी : This is my reward. My friends and my fans love me and my performance, but when it comes to films and their favorite stars, they have to abandon me. We theatre actors have always suffered due to these film stars and their glamour. जाओ-जाओ, दौड़ों उन्हीं की तरफ और मत करो हमारी इज़्ज़त। मैं भी चाहता तो सिनेमा की तरफ भाग सकता था, पैसे के पीछे अपनी कला को बेच सकता था। एक वैश्या की तरह बड़े-बड़े धनाढ्यों के सामने, उनके इशारों पर नाच सकता था। पर नहीं। मैं अपनी कला को बेचूँगा नहीं। आज तक फिल्मों के लोभ में आया नहीं, क्योंकि मुझे अपने रंगमंच से प्यार है। जो सेवा रंगमंच कर सकती है वो फिल्में आज तक नहीं कर पाई हैं और भविष्य में करेगी, इसके आसार नहीं दिखते। Oh pain! Why do you come to me again and again? Oh suffering! You are my true friend whatsoever may happen. You shall always accompany me always.

(ये बोलते-बोलते जूलियस सीज़र नाटक का एक संवाद बड़बड़ाने लगता है।)

Wherefore rejoice, what conquest brings he home. What tributaries follow him to Rome? Oh you hard hearts, you

cruel sons of Rome. Knew you not Pompeii. Many a time and oft,
Have you not climbed up the walls and battlements? Yea to the chimney tops and there have seen the great Pompeii, pass the streets of Rome.

(फिर अचानक तुगलक़ नाटक का एक संवाद ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगता है।)

मामूली सी बात? मैंने अपने वालिद का क़त्ल किया है, ये मामूली सी बात है? नमाज़ के वक़्त को मैंने नापाक़ किया है, क्या ये भी मामूली सी बात है? बरनी, लोग क्या कहते हैं, इसकी मुझे परवाह नहीं। मुझे डर लगता है उनकी ग़लत ज़हनियत से। अगर उन्हें दीनो-ईमान की कोई फ़िक्र होती, तो मुझे कोई ऐतराज़ न होता। या मेरे वालिद से ही उन्हें कोई ख़ास लगाव होता, तो भी मैं उज्ज्र न करता। मगर उन सबको मुझसे अदावत और नफ़रत है। मेरी वालिदा, जिसकी कोख से मैं पैदा हुआ, वो मेरे वालिद से सख़्त परहेज़ रखती थी, वो भी मुझसे खफ़ा है। किसलिए? इसलिए कि वालिद के साथ मेरा भाई भी मर गया? मेरा कमज़ोर भाई।

(फिर अचानक हैमलेट नाटक का एक संवाद ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगता है।)

Angels and ministers or Grace defend us : Be thou a spirit of health or goblin damn'd, Bring with thee airs from Heaven, or blasts from Hell, Be thy intents wicked or charitable, Thou com'st in such a questionable shape. That I will speak to thee, I'll call thee Hamlet, King, Father, Royal Dane : My fate cries out, And makes each petty artery in this body as hardy as the Nemean lion's nerve : Unhand me gentlemen : By Heaven, I'll make a ghost of him that lets me : I say away, go on, I'll follow thee.

Let me watch this bloody Cine fare Awards.

(शराब पीना शुरु करता है, टी.वी. चालू करता है जिस पर कुछ विज्ञापन दिखाया जा रहा है।)

Ad 1 (Sheelajeet)
Add 2 (Condom)

(विज्ञापन समाप्त होते ही फिल्म पुरस्कार समारोह कार्यक्रम शुरु होता है। जिसका संचालन बलवान खान और बतरीना कर रहे हैं।)

बलवान : हे बतरीना!
बतरीना : हे बलवान!
बलवान : You looking so gorgeous. इसका राज़ क्या है?
बतरीना : You too looking so sensational. इसका राज़ क्या है?
बलवान : बता दूँ?
बतरीना : हाँ-हाँ, बताओ-बताओ।
बलवान : अच्छा पहले तुम बताओ।
बलवान : अच्छा ठीक है, हम दोनों ही बताते हैं।
दोनों : इसका राज़ है Sheelajeet Products. जो पिछले 50 सालों से इंडस्ट्री की सेवा करता आया है। फिर बात चाहे सौन्दर्य की हो या फिर Stamina की।
बतरीना : इसी बात पर हमारी रुबीना कुमारी एक गीत ले कर आई हैं। The one and only. शीला की जवानी।

(हम देखते है कि रुबीना कुमारी ''शीला की जवानी'' गीत के धुन पर एक नृत्य प्रस्तुत् करती है।)

रामचंदानी : (शराब पीते-पीते) ''Aye thou poor ghost while memory holds a seat, in this distracted globe remember thee? Yes, from the table of my memory, I'll wipe away all trivial fond records, all saws of books, all forms, all pressures past, the youth and observation copied there, and thy commandment baser matter, yes! yes by heaven. O most pernicious woman! Oh villain, villain, smiling damned villain.'' **(ये सब कहता रहता है और पीता रहता है फिर लड़खड़ाकर गिर जाता है।)**

(दृश्य 4)

(रामचंदानी सपना देखने जैसा एक मुद्रा बनाता है। जैसे वो सपना देख रहा हो कि एक मशहूर फिल्म स्टार के रूप में काम करने की वजह से पुरस्कार प्राप्त कर रहा हो। संगीत चल रहा होता है, तब तक कोरस सपने के अन्दर के दृश्य की परिस्थिति तैयार करते है।)

बलवान : Welcome, ख़ुशामदीद, स्वागतम्, Gautannaght, Bonjovi. हम एक बार फिर आपके लिए लेकर आये हैं 51st Sheelajeet Cine fare Awards. मैं हूँ बलवान और मेरे साथ है बतरीना। हर साल की तरह ख़ुशियों के पंख फैलाते हुए, उमंगों के घोड़ों पर दौड़ते हुए, मख़मली बादलों की सैर करते हुए, हम हाज़िर हैं Cine fare program को लेकर।

(एक विज्ञान की प्रस्तुति होती है।)
(Ad- एक घोड़े पर एक लड़का और लड़की बैठे है। थोड़ी देर में घोड़ा गिर जाता है लड़की लड़के पर चिल्लाने लगती है।)

लड़की : तुम्हें तो घोड़ा भी चलाना नहीं आता।
लड़का : प्लीज़ मुझे एक मौक़ा और दो।

(दोनों फिर से घोड़े पर बैठ जाते हैं और घोड़ा दौड़ने लगता है। घोड़ा फिर से गिर जाता है।)

लड़की : तुम्हें तो बिल्कुल भी घोड़ा चलाना नहीं आता। बड़ी शेख़ी मारते हो कि मैं पृथ्वीराज से कम नहीं हूँ! मैं जा रही हूँ।
लड़का : नहीं, प्लीज़! रुक जाओ।

(तभी एक और आदमी घोड़े पर बैठा हुआ आता है....उसके हाथ में एक packet है।)

आदमी : ये लीजिए। घुड़सवार कंडोम। एक बार इस्तेमाल करोगे तो कभी नहीं गिरोगे।

(लड़का उससे packet ले कर घोड़े पर बैठ जाता है और घोड़ा दौड़ाते हुए दूर निकल जाता है।)

आदमी : देखा। आप भी इस्तेमाल कीजिए। घुड़सवार कंडोम।

(कोरस एक धुन गुनगुनाने लगते है और फिर संचालक समारोह की ओर ध्यान आकर्षित करता है।)

बलवान : And now, we announce the most prestigious award of this year. The best actor award.........for this I invite Mr. Dev Mishra, Chairman of Sheelajeet Products, to come on stage.

देव मिश्रा : Good evening everyone and the award goes to Mr. Ramchandaani.

(कोरस संगीत बजाता हैं और रामचंदानी चल पड़ता है पुरस्कार प्राप्त करने की ओर।)

रामचंदानी : All the world is a stage and all men and women are merely players. Each has its own entry and exit. (laughs) This is my entry tonight.....My entry in the world of glitter and glamour.....My tryst with the tinsel town has begun......and I'm grateful and thankful to all my friends and foes and to theatre........farewell to the humdrum of stage....adieu...... adieu........adieu.....and welcome films......ho-ho......heigho.

(सभी तालियाँ बजाने लगते हैं और रामचंदानी के इर्द-गिर्द मीडिया-कर्मियों की भीड़ उमड़ पड़ती है।)

मीडियाकर्मी-1 : Congratulation Mr. Ramchandaani for this prestigious award.

मीडियाकर्मी-2 : सुना है शूटिंग के दौरान आपके और कल्लिका के बीच काफ़ी तनाव था? जिसकी वजह से शूटिंग काफी टाईम तक रुकी रही थी।

रामचंदानी : Well, Kallika is a nice friend and a remarkable actress. We have been sleeping together. Ah! I mean working together for a long time.

मीडियाकर्मी-3 : फिल्मों में आने की वजह से आपके बहुत से साथी आपसे नाराज़ हैं। क्या ये बात सच है?

रामचंदानी : I love theatre. I love theatre. I love theatre. To be or not to be, that is the question.

मीडियाकर्मी-4 : सर-सर, जनता के लिए कोई सन्देश?

रामचंदानी : शिलाजीत खाओ, मौज उड़ाओ।

मीडियाकर्मी-1 : सर-सर, देश के नेताओं के लिए कोई सन्देश?

रामचंदानी : शिलाजीत खाओ, पैसे कमाओ।

मीडियाकर्मी-2 : सर-सर, देश के युवाओं के लिए कोई सन्देश?

रामचंदानी : शिलाजीत खाओ, stamina बढ़ाओ।

सभी मीडियाकर्मी: सर-सर, बच्चों और महिलाओं के लिए?

रामचंदानी : शिलाजीत खाओ......और....don't be silly. बगुले जैसी ख़ूबसूरती चाहिए तो Fair & Lovely cream लगाइए।

सभी मीडियाकर्मी: सर-सर-सर।

रामचंदानी : No more question please. I have to leave. मुझे शूटिंग पर जाना है।

(मीडियाकर्मी - उसके पीछे भागते हैं और सर-सर चिल्लाते हैं पर रामचंदानी, Next time. next time. कहते हुए निकल जाता है।)

(दृश्य 5)

(सभी मीडियाकर्मी बारी-बारी से न्यूज़ सुना रहे हैं।)

पहला : मिस्टर रामचंदानी की फिल्म ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' की शूटिंग बड़ी ज़ोर-शोर से चल रही है।

दूसरा : ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' की शूटिंग 25 प्रतिशत पूरी हो चुकी है, और थिएटर जगत के बादशाह मिस्टर रामचंदानी के काम को ख़ूब सराहा जा रहा है।

तीसरा : फिल्म ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' का बजट 50 करोड़ से ऊपर है।

चौथा : ओस्कर के लिए बनाई जाने वाली फिल्म है ''प्यार हुआ तेरी छत पे''।

पाँचवा : US, Canada, Mexico and Argentina में शूटिंग करके ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' की टीम वापस लौटी।

छठा : फिल्म पंडितों का कहना है कि ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' अब तक की सर्वश्रेष्ठ फिल्म होगी।

(दृश्य 6)

(शूटिंग का दृश्य है जहाँ पर फिल्म का एक गाना शूट हो रहा है।)

हो गया है प्यार तेरी छत पे,
हो गया है प्यार तेरी छत पे।
हो गया है प्यार तेरी छत पे,
हो गया है प्यार तेरी छत पे।
तेरी छत पे, तेरी छत पे, तेरी छत पे।
तेरी छत पे, तेरी छत पे, तेरी छत पे।।

जब से है देखा मैंने तुझको,

तब से है खोया मैंने ख़ुद को।
जब से है देखा मैंने तुझको,
तब से है खोया मैंने ख़ुद को।।
नींद गयी, होश गया, चैन गया रे।
नींद गयी, होश गया, चैन गया रे।।
प्यार हुआ, प्यार हुआ मुझको,
हे.......
हो गया है प्यार तेरी छत पे।
हो गया है प्यार तेरी छत पे।।

(गाना ख़त्म होता है। निर्देशक एक्टर को बधाई देता है।)

निर्देशक : Brilliant shot man......Brillant......I love you darling...... I love you.

कोरस : Brilliant shot......Brilliant shot.....

रामचंदानी : Ok.....ok......what are we doing next?

निर्देशक : हाँ.....हमारे अगले दृश्य में आप रात के समय, छत के रास्ते लड़की के घर में घुसते हैं। (Cameraman से) दादा camera crane पे! (वापस रामचंदानी से) हाँ तो, रात का समय है। आप अपनी छत पर हैं। धीरे-धीरे आप अपनी छत की मुंडेर पर आते हैं। फिर धीरे-धीरे आप लड़की की छत की तरफ जाते हैं and then you jump. लड़की की छत पर आने के बाद, आप पाईप के रास्ते नीचे उतरने लगते हैं। तभी आपका पैर फिसल जाता है। ऐसा लगता है कि आप गिरे....लेकिन आप बच जाते हैं। तेज हवा चल रही है। परदे हिल रहे हैं। खिड़कियाँ टकरा रही हैं। लड़की अपने बिस्तर पर सो रही है और उसके बाजू में उसकी पालतू बिल्ली भी सो रही है।

(कोरस के सभी लोग बोलते हैं, ''मियाऊं''।)
आप उसे देखकर ख़ुश होते हो। तभी आपको वहाँ एक साँप दिखाई देता है। अचानक लड़की चिल्लाती है और आप एक झटके में साँप को पकड़ लेते हो।

रामचंदानी : Stop it. क्या कर रहे हो?

निर्देशक : What happened?

रामचंदानी : मैं कोई बेवकूफ़ नहीं हूँ। सब समझ रहा हूँ। पिछले दो महीने से साँप के चक्कर में न जाने क्या-क्या पकड़ रहे हो।

निर्देशक : Sir, you are getting me wrong.

रामचंदानी : No, I'm getting you right. I don't want to work with you anymore. Just go to hell.

निर्देशक : Mr. Ramchandaani......ramchandaani..

रामचंदानी : Somebody call my secretary.

निर्देशक : Please! Please, Mr. Ramchandaani. Don't do that.

रामचंदानी : निर्माता को फोन लगाओ और बोल दो कि मैं इस फिल्म में और काम नहीं कर सकता।

निर्देशक : You are spoiling my image. You can't do this to me Ramchandaani.

रामचंदानी : Go to hell. **(चला जाता है।)**

(कोरस वापस मीडियाकर्मी बन जाते हैं।)

टीवी 1 : इंडस्ट्री की सबसे महँगी बनने वाली फिल्म ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' की शूटिंग रुकी।

टीवी 2 : निर्देशक और एक्टर के बीच अनबन और निर्माता परेशान।

टीवी 3 : फिल्म के रुकने के वास्तविक कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है।

टीवी 4 : नए सुपरस्टार, रामचंदानी के घर के बाहर उनके प्रशंसकों की भीड़। एक fan ने आत्मदाह की धमकी दी है।

टीवी 5 : रामचंदानी ने कहा कि अपने जीते जी, वो ये फिल्म कभी नहीं करेंगे।

टीवी 1 : सनसनीखेज़ ख़ुलासा। अभी-अभी पता चला है कि ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' फिल्म में underworld का पैसा लगा है। जो किसी भी क़ीमत पर इस फिल्म को पूरा करना चाहते हैं। अब देखना ये है कि ऊँट किस करवट बैठता है।

(निर्माता और रामचंदानी फोन पर बात कर रहे हैं।)

निर्माता : What is this Ramchandaani. तुम बीच में शूटिंग कैसे छोड़ सकते हो?

रामचंदानी : मैं आपको दो option दे रहा हूँ। या तो आप निर्देशक बदलो या एक्टर।

निर्माता : तुम मुझे option दे रहे हो? सुनो, ये निर्देशक तुमसे बड़ा स्टार है। चार-चार सुपरहिट फिल्में दे चुका है। तुम्हारी वजह से मैं उसे नहीं निकाल सकता। By the way, तुम लोगों के बीच प्रॉब्लम क्या हुयी?

रामचंदानी : वो मुझे compromise के लिए कह रहा है।

निर्माता : What compromise?

रामचंदानी : ओह! जैसे आप कुछ जानते ही नहीं। जाओ, यूनिट में किसी से भी पूछ लो जाकर।

निर्माता : Come on Ramchandaani! किस दुनियाँ में जी रहे हो। यहाँ ऐसे ही काम होता है।

रामचंदानी : होता होगा, पर मैं नहीं करता।

निर्माता : रामचंदानी, Compromise कहाँ है यार ये? ये तो प्यार मोहब्बत है। और अगर ज़्यादा प्रॉब्लम है तो शराब पी के

कर लो।

रामचंदानी : Fie upon you. To hell with such compromises. It's better to die then to live in such ignominy and shame.

निर्माता : Hello Shakespeare! Control, Control ok? यहाँ 50 करोड़ रुपये लग चुके हैं underworld वालों के। अब तेरे ये thou fou से कुछ नहीं होने वाला। तुझे ये फिल्म किसी भी हाल में करनी ही पड़ेगी।

रामचंदानी : नहीं करूँगा।

निर्माता : तो फिर ठीक है। इसका अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

रामचंदानी : तैयार हूँ।

निर्माता : सोच लो।

रामचंदानी : सोच लिया।

निर्माता : पक्का?

रामचंदानी : हाँ पक्का।

(कोरस वापस टीवी बन कर न्यूज़ सुनाने लगती है।)

टीवी 1 : फिल्म ''प्यार हुआ तेरी छत पे'' के विवादों ने लिया नया मोड़।

टीवी 2 : Underworld ने दी रामचंदानी को मारने की धमकी।

टीवी 3 : निर्माता के लाख समझाने पर भी रामचंदानी अपने निर्णय पर अड़े रहे।

टीवी 4 : रामचंदानी ने माँगी पुलिस सुरक्षा।

टीवी 5 : रामचंदानी के प्रशसंकों ने किया चर्च गेट पर प्रदर्शन।

(दृश्य 7)

(कालाबाज़ार के कुछ लोग रामचंदानी के पीछे उसे मारने के लिए भाग रहे हैं।)

UW : रुक जाओ....रुक जाओ।

रामचंदानी : कौन हो तुम? कौन हो? मेरा पीछा कर रहे हो तब से। मुझे जान से मारने की धमकी दे रहे हो। हो कौन? और मेरा गुनाह क्या है?

UW : मैं हूँ काला धन! Black money!

(सभी लोग एक साथ बोलते हैं......Black money......black money......black money. उसके बाद के सभी लोग एक-एक करके बोलते हैं।)

पहला : वो धन जिसका कोई हिसाब नहीं।

दूसरा : वो धन जो बैंक में नहीं।

तीसरा : वो धन जो अमीरों के घरों की दीवारों में क़ैद है।

चौथा : वो धन जिसका कोई दावा नहीं कर सकता।

रामचंदानी : लेकिन मेरा क्या कसूर? इस धन से मेरा कोई लेना-देना नहीं। मेरे पास जो धन है, उसे मैंने ख़ून पसीने की मेहनत से कमाया है। मैंने किसी का कोई शोषण नहीं किया।

पाँचवा : तुमने ना किया हो, लेकिन तुम उस ईमारत का एक हिस्सा हो, जिसकी चमक करोड़ों लोगों की ख़ून की बूँदों से बनी है।

छठा : चकाचौंध में रह रहे हो और ये भूल गए हो कि उसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ती है।

रामचंदानी : क्या कह रहे हो? तुम्हारा मतलब है, कि जो मैं कमा रहा हूँ, वो पाप के सागर से आ रहा है।

पहला : जी हाँ। Don't be ignorant and innocent. पाँच करोड़ के घर को खरीदने की औकात एक थिएटर एक्टर की नहीं होती।

दूसरा : मत भूलो, जिस मर्सिडीज़ गाड़ी का सुख ले रहे हो, वो भी हमारे काले धन से ही आया है। फिल्मों में काम करने से आया है।

रामचंदानी : क्या फिल्मों में लगाया हुआ धन, केवल काला धन है?

तीसरा : हाँ। केवल काला धन। अपनी गाढ़ी कमाई कोई फिल्मों में नहीं लगाता। समाज के कमज़ोर लोगों का रक्त चूसकर जो लक्ष्मी इकट्ठी होती है, वो ऐसे ही जुए, शराब, खेल और फिल्मों के माध्यम से वापस चली आती है।

रामचंदानी : Oh obnoxious! Oh villain! Villain. Dammed villain. Oh! काली कमाई....हट जाओ। दूर हट जाओ। मेरे रास्ते से हट जाओ। मैं तुम्हें नहीं चाहता।

UW : पर हम तुम्हें चाहते हैं। (**उसे घेर लेते हैं। सबके हाथ में पिस्तोल हैं।)** आओ हमारे पास। हमारा काला धन तुम्हें पुकार रहा है। लो और लो। और बड़े घर और बड़ी गाड़ी। आओ। हमारी बाँहों में आओ।

रामचंदानी : नहीं। हट जाओ। मुझे नहीं चाहिए काला धन। हट जाओ। (**नीचे गिर जाता है।)**

(सब हँसते हैं, एक वीभत्स हँसी। और अंत में एक गोली के साथ रामचंदानी का सफर ख़त्म हो जाता है। रामचंदानी हड़बड़ाकर स्वप्न से जागता है। स्वाभाविक है जो कुछ देखा उससे वो प्रसन्न नहीं है।)

(दृश्य 8)

रामचंदानी : (स्वगत) सचमुच ऐसा है? मुझे नहीं पता था कि नाम, यश और ढेर सारा धन कमाने के लिए, एक कलाकार को इतने समझौतों से गुज़रना पड़ता है। सच ही कहा गया है कि यदि कला पूरी तरह से लक्ष्मी की दासी हो जाए तो उसका विकास फिर मुश्किल है। थोड़ी देर के सुख-वैभव के लिए अपनी अमूल्य सम्पदा को हमेशा के लिए गँवा देना कहाँ की समझदारी है। और हम कलाकारों को असली रस तो लोगों के सामने अपनी रचनात्मक कार्य को प्रस्तुत करने से ही आता है। सामने दर्शक हो और उसके साथ सीधा संपर्क रहे तो उसका सुख ही कुछ और है। मैं कम पैसों में जीने को राज़ी हूँ, लेकिन अपनी आत्मा को बेचने के लिए नहीं।

(एक नाटक की प्रस्तुति चल रही है और रामचंदानी अभिनय कर रहा है।)

रामचंदानी : मेरे प्यारे साथियों, संकट के इस समय में, आज हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं और हमारे दुश्मनों ने जो हम पर चोटें की हैं और हमारी योजनाओं को जिस तरह के नुकसान पहुँचाने के जो प्रयास किए हैं, उन सबसे आप वाकिफ़ हैं। हमारे कई साथियों का मनोबल टूट गया है और कई लोग हमसे बिछड़ कर दूर हो गए हैं। मैं जानता हूँ इस वक़्त हममें से ज़्यादातर थोड़े से भयभीत और शंका से भर गए हैं। क्या करे क्या ना करे? कौन सा क़दम उठाये? क्या सही है और क्या ग़लत? इन सवालों से गुज़रते हुए हम सब का मन विचलित है। पर मैं आप सबसे एक बात कहना चाहूँगा। किसी भी कार्य में विजय हासिल करने के लिए टीम का संगठित होना ज़रूरी है। अलग-अलग दिशाओं में भटकने

वाले कई मन को एक दिशा में ले जा कर पूरी शक्ति से एकाग्र होकर जब भी कोई कार्य किया जाता हैं तो सफलता निश्चित होती है। हम लोग आदर्श पर चलने वाले सत्य के राही हैं। और हमारे हर कार्य में ईश्वरीय शक्ति सदा साथ है। सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने आज जो खड़ा है वो यह है कि जिन लोगों ने हमारे साथ हिंसा का प्रयोग किया है तो क्या जवाब में हमें भी हिंसा का इस्तेमाल करना चाहिए या नहीं? यह सच है कि हम अहिंसा के पुजारी हैं लेकिन मैं आप सबको याद दिलाना चाहता हूँ कि अहिंसा की व्याख्या क्या है? मनोवाक्ये सर्वभूतानाम् अपीड़नम् अहिंसा। मन, वचन और कर्म से दूसरे को नुकसान ना पहुँचाना ही अहिंसा है। किन्तु अपनी और अपने परिवार और संपत्ति की रक्षा के लिए शस्त्र ही क्यों न उठाना पड़े तो भी वो अहिंसा ही है। इसीलिए आप सब को किसी तरह का संकोच नहीं होना चाहिए। जिन्होंने बल का उपयोग करके हमें क्षति पहुँचाई हैं हमें भी उसका जवाब उसी रूप में देना होगा। जिन्होंने हमारे कमज़ोर और निहत्थे लोगों पर आक्रमण करके हमारे जानमाल को नुकसान पहुँचाया है, हमें भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। यह धर्म का ही कार्य होगा और इसमें ईश्वर तुम लोगों के साथ है। तुम सब बहादुर हो। और अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने अंदर की शक्ति को जगा सकते हो और अपने दुश्मनों से डट कर मुकाबला करके विजयी हो कर अपनी हार को जीत में बदल सकते हो। घबराना नहीं है। निडर होकर आगे बढ़ो। अपनी शक्ति को एकत्रित करो। जय तुम्हारे साथ है।

(पार्श्व में संगीत का स्वर और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मंचन पूरा होता है। रामचंदानी अभिवादन करता है और धीरे-धीरे प्रकाश कम होता है।)